हिन्दी व्याकरण

कक्षा 8

विषय सूची

क्र.	अध्याय	पृ.क्र.
1	भाषा लिपि व्याकरण	1–5
2.	वर्ण विचार	6–11
3.	शब्द विचार	12–18
4.	वाक्य विचार	19–24
5.	संज्ञा	25–28
6.	लिंग	29–34
7.	वचन	35–41
8.	कारक	42–52
9.	सर्वनाम	53–56
10.	विशेषण	58–63
11.	क्रिया	64–68
12.	काल	69–73
13.	अविकारी शब्द अव्यय	74–81
14.	विराम चिन्ह	82–85
15.	उपसर्ग और प्रत्यय	86–91
16.	अशुद्ध वाक्यो का संशोधन	92–95
17.	संधि	96–109
18.	समास	110–115
19.	पद परिचय	116–119

20.	विलोम शब्द	120—121
21.	पर्यायवाची शब्द	122—123
22.	अनेकार्थी शब्द	124—125
23.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	127—128
24.	श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द	129—130
25.	शब्दों के सूक्ष्म अर्थ भेद	131—134
26.	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	135—139
	(रचना भाग)	
27.	पत्र लेखन	140—145
28.	अनुच्छेद लेखन	146—148
29.	संवाद लेखन	149—151
30.	निबंध लेखन	152—160
31.	अपठित गद्यांश	161—164
32.	अपठित पद्यांश	165—168

अध्याय-1

भाषा, लिपी,बोलीऔर व्याकरण
LANGUAGE, DIALECT, SCRIPT AND GRAMMAR

'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है-बोलना। बोलते समय हम अपने मुख से जिन सार्थक ध्वनियों को निकालकर अपने भावों या विचारों को प्रकट करते हैं, उसी को भाषा का नाम दिया जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए उसमें अपने भावों और विचारों को दूसरों तक पहुँचाने और उनके भाव-विचार जानने की इच्छा होना स्वाभाविक है। कभी-कभी वह कुछ ध्वनि-संकेत का उच्चारण करता है। ये ध्वनि-संकेत ही भाषा की उत्पत्ति के मूल में कार्य करते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि भाषा की रचना मनुष्य द्वारा उच्चारित ध्वनियों से होती है। चेहरे के हाव-भाव, हँस कर रोकर, आँखों, उँगलियों आदि से भावों और विचारों की अभिव्यक्ति तो हो सकती है, पर वह भाषा नहीं कही जा सकती।

-भाषा पारंपरिक ध्वनि चिह्नों की एक ऐसी व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्य परस्पर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों या भावों को बोल कर या लिखकर दूसरे मनुष्यों तक पहुँचाता है

भाषा के रूप।

मौखिक भाषा
लिखित भाषा

मौखिक भाषा अपने मनोभावों को बोलकर प्रकट करना भाषा का मौखिक रूप है। यही भाषा का प्राचीन और मूल रूप है। इसे सीखने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता। यह स्वाभाविक रूप सीखी जा सकती है। भाषण, वाद-विवाद, नाटक खेलना, संवाद बोलना, परिचर्चा, बातचीत आदि मौखिक भाषा के रूप है।

लिखित भाषा विचारों का लिखित आदान-प्रदान भाषा का लिखित रूप है। इसका विकास मौखिक भाषा को अंकित करने के उद्देश्य से किया गया। इसके द्वारा ज्ञान का संचय होता है। निबंध लिखना, कविता-कहानी लिखना, पत्र लिखना लिखित भाषा के रूप हैं।

लिखित भाषा के रूप का महत्त्व - मानव सभ्यता के विकास एवं दूर-दूर तक फैले हुए उसके रूप से परस्पर विचारों के आदान-प्रदान की आवश्यकता ने ही लिखित भाषा को जन्म दिया। भाषा के लिखित रूप को सीखने के लिए विशेष प् प्रयत्न करने पड़े। लिखित भाषा ही भाषा का स्थायी रूप है, जिससे हम अपने भावों और विचारों को भविष्य के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।

मौखिक व लिखित भाषा के रूपों में अंतर 1. भाषा का मौखिक रूप प्राचीनतम है। यही भाषा का मूल रूप है। लिखित भाषा का विकास बाद में हुआ।

2. बच्चा आस-पास के वातावरण से बिना प्रयास किए जो भाषा सीख जाता है, वह भाषा का मौखिक रूप है, पर लिखित रूप सीखने के लिए अभ्यास और प्रयत्न की आवश्यकता होती है

3 -भाषा का मौखिक रूप आसानी से बदलता रहता है। जबकि लिखित रूप स्थायी होता हैं।

लिपि भाषा की मूल ध्वनियों को जब लिखकर प्रकट किया जाता है, तो ऐसा करने के लिए कुछ चिह्नों की आवश्यकता पड़ती है जिनका प्रयोग करके हम अपनी बात लिखकर प्रकट कर सकते हैं। इन्हीं चिह्नों को लिपि कहा जाता है।

परिभाषा-

भाषा की मूल ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों को लिपि कहते हैं।

प्रत्येक भाषा की लिपि अलग-अलग होती है।

भाषाएँ	लिपियाँ
संस्कृत, हिंदी, मराठी नेपाली	देवनागरी
पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	फ़ारसी अरबी
अंग्रेजी, जर्मनी, फ्रेंच	रोमन

नोट- फ़ारसी लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है। संसार में अनेक भाषाएँ प्रचलित हैं परंतु सभी भाषाएँ या भाषाओं के सभी रूप लिखे नहीं जाते। इसलिए संसार में कुछ लिखित भाषाएँ हैं तो बहुत-सी अलिखित भाषाएँ भी हैं।
जो भाषाएँ लिखी जाती हैं उनके मानक रूप को मानक भाषा (Standard Language) कहते हैं। मानक भाषा में श्रेष्ठ साहित्य की रचना होती है, उसी में सरकारी कामकाज होता है, इसीलिए उसे साहित्यिक भाषा (Literary Language) और राजभाषा (Official Language) भी कहा जाता है

बोली-

यह एक स्थान विशेष में बोली जाती है। प्रायः इसका संबध स्थानीय लोगों से होता है

भारत जैसे विशाल देश में अनेक बोलियाँ प्रचलित हैं। उनमें से प्रमुख हैं- हरियाणवी, कन्नौजी, मारक कुमाऊँनी, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी आदि। अर्थात् हम कह सकते हैं- कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी।

थोड़ी-थोड़ी दूर पर बदलने वाला मौखिक भाषा का स्थानीय रूप बोली कहलाता है।

'बोली' का प्रयोग एक सीमित क्षेत्र में ही किया जाता है।
उपभाषा-जब किसी बोली का क्षेत्र विस्तृत हो जाता है तथा उसमें साहित्य-रचना की जाने लगती है, तो वह 'बोली' के स्थान पर 'उपभाषा' बन जाती है। जैसे-प्रारंभ में 'ब्रज' तथा 'अवधी' बोलियाँ थीं, पर जैसे ही उनमें साहित्य-रचना आरंभ हुई, ये दोनों 'उपभाषाएँ' बन गईं। ब्रज भाषा में सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' तथा अवधी भाषा में तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

हिन्दी भाषा को पाँच उपभाषाओं में बाँटा गया है उनकी अलग अलग बोलियाँ है।

क. बिहारी - मगही, मैथिली और भोजपुरी।

ख. पहाड़ी - कुमाऊँनी, गढ़वाली, हिमाचली।

ग. राजस्थानी - मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूँढारी, हाड़ौती आदि।

घ. पूर्वी हिंदी - अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।

ङ. पश्चिमी हिंदी - खड़ी बोली, ब्रज भाषा, बुंदेली, कन्नौजी और हरियाणवी

व्याकरण

व्याकरण - व्याकरण शब्द वि + आ + कृ धातु से निर्मित है जिसका शाब्दिक अर्थ है - विश्लेषण करना। व्याकरण वह शास्त्र है जो भाषा का विश्लेषण करता है और उसके प्रयोग के नियम निर्धारित करता है, जिस भाषा के शुद्ध मानक रूप का ज्ञान हो सके। व्याकरण ज्ञान से हम भाषा को शुद्ध लिखना, पढ़ना और बोलना सीखते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि -

व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा हम किसी भाषा के नियमों और व्यवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

व्याकरण के विभाग –
व्याकरण के तीन विभाग होते हैं

1. वर्ण-विचार **2. शब्द-विचार** **3. वाक्य-विचार**

1. वर्ण-विचार - वर्ण विचार के अंतर्गत वर्णों और अक्षरों के उच्चारण, आकार, वर्गीकरण एवं उनके मेल से शब्द बनाने के नियमों आदि का उल्लेख होता है। इसके अंतर्गत ही स्वरों एवं व्यंजनों का अध्ययन किया जाता है।

2. शब्द-विचार - इसके अंतर्गत शब्दों के भेद, उत्पत्ति, व्युत्पत्ति तथा रचना संबंधी नियमों का उल्लेख होता है।

3. वाक्य-विचार - व्याकरण के अंतर्गत वाक्य के भेद, उनके संबंध, वाक्य-विश्लेषण, संश्लेषण, वाक्य बनाने के नियमों तथा विराम चिह्नों आदि के बारे में विचार किया जाता है।

अभ्यास करें

1.नीचे दी गई भाषाओं की लिपियों के नाम लिखिए-

हिंदी —----------

मराठी —----------

पंजाबी —----------

संस्कृत —----------

अंग्रेज़ी _____

बंगला _____

2. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुन कर लिखें।

(क) खड़ी बोली, ब्रजभाषा व हरियाणवी कौन-सी उपभाषा की बोलियाँ हैं ?

(1) पूर्वी हिंदी

(ii) पश्चिमी हिंदी

(iii) पहाड़ी हिंदी

(iv) बिहारी हिंदी

ख) भोजपुरी, मगही व मैथिली कौन-सी उपभाषा की बोलियाँ हैं ?

(1) राजस्थानी हिंदी

(ii) पहाड़ी हिंदी

(iii) बिहारी हिंदी

(iv) पूर्वी हिंदी

ग) पंजाबी भाषा की लिपि कौन-सी है ?

(1) अरबी

(ii) देवनागरी

(iii) गुरुमुखी

(iv) फ़ारसी

घ़)हिंदी की लिपि का क्या नाम है ?

क. रोमन
ख. अरबी
ग. ब्राह्मी
घ. देवनागरी

ड) 'हिंदी दिवस' कब मनाया जाता है?

क. 14 सितंबर
ख. 14 नवंबर
ग. 14 अगस्त
घ. 14 अक्टूबर

प्र 3 लिपि किसे कहते हैं?

प्र 4व्याकरण के मुख्य कितने अंग हैं? नाम लिखिये।

प्र5 भाषा के कौन कौन से रूप होते हैं? नाम लिखिये ।

अध्याय-2
वर्ण विचार (Phonology)

मुख से निर्गत प्रत्येक स्वतंत्र ध्वनि भाषा की सबसे छोटी इकाई है। इन ध्वनियों का लिखित रूप वर्ण कहलाता है। वर्णों को 'अक्षर' भी कहते हैं। वर्णों अथवा अक्षरों के मेल से ही शब्द बनते हैं।

भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसके खंड नहीं किए जा सकते वर्ण कहलाती है।

वस्तुतः वर्ण वह लिपि चिह्न है जो विशेष ध्वनि के लिए लिखित रूप में प्रयुक्त होता है।

वर्ण की विशेषताएँ -

(क) वर्ण स्वतंत्र ध्वनि है।
(ख) वर्ण भाषा की लघुतम इकाई है।
(ग) वर्ण के टुकड़े संभव नहीं हैं।
(घ) वर्ण ध्वनि का लिखित रूप है।
(ड.) वर्णों को अक्षर भी कहा जाता है।
(च) वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनते हैं।

वर्णमाला -

वर्णमाला वर्णों का क्रमबद्ध व्यवस्थित समूह है।।
वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। इसके और ज्यादा टुकड़े नहीं किए जा सकते। जैसे- ख. ह, अ आदि।

भाषा को और ज्यादा विकसित और सरल बनाने के लिए हम इस अध्याय में विस्तार से वर्णों की चर्चा करेंगे। भाषा में अलग-अलग ध्वनियों के लिए अलग-अलग वर्ण निश्चित हैं। इन सभी वर्णों का आकार और क्रम निश्चित है। वर्णों की यही क्रमबद्धता वर्णमाला कहलाती है।

हिंदी वर्णमाला

स्वर - अ आ, इ, ई, उ ऊ ऋ, ए, ऐ, ओ औ - 11
अनुस्वार - (अं) – 2 विसर्ग - अः(ः

व्यंजन-

(क वर्ग)	-	क,	ख,	ग,	घ	,ङ
(च वर्ग)	-	च,	छ	,ज,	झ,	ञ
(ट वर्ग)	-	ट,	ठ,	ड,	ढ,	ण
(त वर्ग)	-	त,	थ,	द,	ध,	न
(प वर्ग)	-	प,	फ,	ब,	भ,	म

25

अंतस्थ व्यंजन -	य	र	ल	व	-	4
ऊष्म व्यंजन –	श	ष	स	ह	-	4
अन्य व्यंजन -	**ड़**	ढ़			-	2
आगत	क़	ख़	ग़	ज़	फ़	ऑ

गृहीत वर्ण- क्ष =(क् + ष),

त्र= (त् + र) ,

ज्ञ= (ज् + ञ),

श्र =(श् + र)

(इस प्रकार हिंदी वर्णमाला में 48 वर्णों का प्रयोग किया जाता है- स्वर-11, व्यंजन-33, ड़ और ढ़, अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अ:)।

वर्णों के भेद

वर्णों के दो भेद होते हैं -

1. स्वर (Vowels)
2. व्यंजन (Consonants)

वर्ण (Letters)

1. स्वर -

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा हमारे मुख से बिना किसी रुकावट के निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वरों के भेद

स्वरों के तीन भेद होते हैं-
क ह्रस्व स्वर
ख. दीर्घ स्वर
ग. प्लुत स्वर

क. ह्रस्व स्वर-

जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये चार हैं-

अ, इ, उ, ऋ

हस्व स्वरों को मूल स्वर भी कहते हैं।

ख. <u>दीर्घ स्वर -</u>

जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व की तुलना में लगभग दुगुना समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहला ते हैं। दीर्घ स्वर सात हैं-

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

ग. <u>प्लुत स्वर-</u>

जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से लगभग तिगुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं।
प्लुत स्वर को लिखने के लिए संस्कृत के स्वर के साथ ३ का अंक लिखा जाता है। जैसे ओ३म्, राखी३! इत्यादि।
प्लुत स्वर का प्रयोग किसी को पुकारते समय या गीत गाते समय किया जाता है।

ऑ ध्वनि - ऑ एक आगत स्वर है। इसका प्रयोग अंग्रेजी के शब्दों के साथ किया जाता है। यह आ तथा ओ ध्वनियों के बीच की ध्वनि है। जैसे- बॉल, कॉलेज, हॉल, डॉक्टर, चॉक, कॉफ़ी, ऑफिस आदि।

इस तरह के शब्दों में ऑ ध्वनि (ॅ) का प्रयोग नहीं करने पर कई बार शब्दों का अर्थ बदल जाता है। जैसे-

बॉल (गेंद)
बाल (बच्चा)
कॉफ़ी (पेय पदार्थ)
काफ़ी (पर्याप्त)
हॉल (बड़ा कमरा)
हाल (तबीयत)

<u>अयोगवाह</u>

अयोगवाह - ये ध्वनियाँ स्वर या व्यंजन किसी भी श्रेणी में नहीं आती हैं। इन्हें स्वरों के बाद स्थान दिया जाता है।

हिंदी में दो अयोगवाह ध्वनियाँ होती हैं-
अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अः)।

<u>अनुस्वार</u> -

अं की मात्रा (ं) अनुस्वार कहलाती है; जैसे- मंच, रंग, भंग, जंग, पंख आदि

विसर्ग - अः की मात्रा (:) विसर्ग कहलाती है; जैसे- दुःख, अतः, प्रातः आदि।

अनुनासिक (ँ) इस ध्वनि का उच्चारण नाक और मुँह द्वारा किया जाता है। इसका चिह्न

(ँ) है; जैसे- आँख, माँग, आँत, गाँव आदि।

2. **व्यंजन** - मुख से अवरोध के साथ बोली जानेवाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती हैं। इनका उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है।मूल व्यंजन संख्या में 33 होते हैं। स्वर के साथ बोले जाने पर ये अक्षर कहलाते हैं।

व्यंजन के भेद – हिंदी के व्यंजनों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है-

• स्पर्श (Mutes)

• अंतःस्थ (Semi-Vowels)

• ऊष्म (Sibilants)

(क) स्पर्श व्यंजन - हिंदी में 'क्' से 'म्' तक 25 व्यंजन स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। स्पर्श व्यंजनों के पाँच वर्ग हैं। प्रत्येक वर्ग का नाम अपने वर्ग के पहले वर्ण के आधार पर रखा गया है। जैसे-

'क' वर्ग -क् ख् ग् घ् ङ्

च' वर्ग - च् छ् ज् झ् ञ्

ट' वर्ग - ट् ठ् इ ढ् ण् ड् ढ़

त' वर्ग - त् थ् द् ध् न्

प' वर्ग - प् फ् ब् भ् म्

'स्पर्श' का अर्थ है-'छूना' या स्पर्श करना। जिन वर्णों का उच्चारण करते समय वायु मुख के भिन्न-भिन्न स्थानों का स्पर्श करती हुई निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

(ख) अंतःस्थ व्यंजन

हिंदी में य्, र्, ल्, व् - ये चार व्यंजन अंतःस्थ हैं। अंतःस्थ व्यंजन ऐसे वर्ण हैं जिनके उच्चारण में जीभ विशेष सक्रिय नहीं रहती। ये ऊष्म और स्पर्श व्यंजनों के बीच में स्थित होते हैं, इसीलिए इन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहा जाता है।

(ग) ऊष्म व्यंजन -

श्, ष्, स्, ह-ये चार व्यंजन ऊष्म हैं। 'ऊष्म' का अर्थ है - 'गरम'। ऊष्म व्यंजनों के उच्चारण के समय मुख से निकलने वाली वायु कुछ-कुछ गर्म हो जाती है, इसीलिए इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।

उच्चारण के आधार पर व्यंजन के दो भेद होते हैं- अल्पप्राण, महाप्राण।

अल्पप्राण - जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु की मात्रा कम होती है तथा कम शक्ति से मुख से बाहर निकलती हैं, वे अल्पप्राण व्यंजन कहलाते हैं। ये अल्पप्राण व्यंजन हैं-

क्, ग्, ङः च्, ज्, ञ् ट्. ड्, ण्; त्. द्. न्: प्. व्. म्; य्. इ. ल्. व्।

महाप्राण - जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु की अधिक मात्रा तीव्र वेग से बाहर निकलती है तथा (ह) की ध्वनि सुनाई देती है, वे महाप्राण व्यंजन कहलाते हैं। महाप्राण व्यंजन हैं

ख्, घ्; छ, झ; व्, द; थ्, ध्; फ्, म्: श्. प्, स्.

संयुक्त व्यंजन - दो अलग व्यंजनों के मेल से बने व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहा जाता है। हिंदी वर्णमाला में चार संयुक्त व्यंजन होते हैं, जैसे-

क) क् + ष = क्ष क्षमा, क्षत्रिय, कक्षा, नक्षत्र, अक्षुत।

ख) त + र -= त्र छत्र, नक्षत्र, त्रिमूर्ति, यात्रा।

ग) ज् + ञ =ज्ञ (इसका उच्चारण ग् + ञ के समान होता है।) ज्ञाता, ज्ञानी, अज्ञानी, अज्ञेय।

घ) श+र =श्र-श्रमिक,श्रीमान, श्रेय, श्रापित।

“ र ” के विभिन्न रूप

• जब 'र्' (स्वर रहित) किसी व्यंजन से पहले आता है तो वह उस व्यंजन के शीश पर (ं) रूप में स्थान पाता है। जैसे-

1. ध + र् + म = धर्म, **2.** प + र् + व = पर्व, **3.** अ+र्+ प + ण = अर्पण आदि।

• जब 'र' किसी स्वर रहित व्यंजन के बाद आता है तो वह उसी के नीचे ( ) रूप धारण कर लेते है
- **जैसे**

1. क + र + म = क्रम, **2.** प + र + म + आ + ण = प्रमाण, **3.** ग + र + ह + ण = ग्रहण, आदि।
जब 'र' किसी स्वर रहित व्यंजन-ट्, व्. ड्, ढ् के बाद आता है, तो उसी के नीचे (‸) रूप धारण कर लेता है। **जैसे** -
1. ट् + र + ए + न = ट्रेन, **2.** ड् + र + आ + म + आ = ड्रामा आदि।
'त्' और 'श्' के साथ मिलने पर 'र' का रूप बदल जाता है।
जैसे-
1. त् + र् + इ + भ् + उ + ज = त्रिभुज, **2.** श् + र् + अ + म् + इ + क = श्रमिक आदि।

वर्ण-विच्छेद

किसी शब्द के वर्णों को अलग-अलग कर देना वर्ण-विच्छेद कहलाता है, तो अलग-अलग या पृथक हुए वर्णों को एक कर देना वर्ण-संधि कहलाती है।

शब्द

वर्ण-विच्छेद

क) शारदा = श् + आ + र् + अ + द् + आ
ख) परिवहन = प् + अ + र् + इ + व् + अ + ह् + अ + न् + अ
ग) प्रकाशन =प् + र् + अ + क् + आ + श् + अ + न् + अ
घ) श्लोक = श् + ल् + ओ + क् + अ
ङ) श्वेतांबरा= श् + व् + ए + त् + आ + म् + ब + अ+र्

वर्ण संधि

क) प् + र् + ओ + त् + स् + आ + ह् + इ + त् + = प्रोत्साहित
ख) प् + ई + त् + आ + म् + ब् + अ + र् + अ = पीतांबर
ग) ज् + अ + म् + अ + न् + आ =जमना
घ) द् + अ + र् + श्+ अ + न् + अ =दर्शन

अभ्यास कार्य

1. उपयुक्त विकल्प पर सही (√) का निशान लगाइए-

(क) आ**,** ऊ**,** औ कौन-से स्वर हैं**?**
क ह्रस्व स्वर
ख. दीर्घ स्वर
ग. प्लुत स्वर

(ख) अंतःस्थ व्यंजन कौन से हैं?

क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

श्. व्. स्. ह

य , र ,ल, व

(ग) अं, अः क्या हैं?
आगत
अनुनासिक
अयोगवाह

(घ) क, च, ट, त, प कौन-से व्यंजन हैं?
अंतःस्थ
स्पर्श
उष्म

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. वर्ण किसे कहते हैं ? वर्ण के कितने भेद है ?
ख. स्वर किसे कहते हैं ? स्वरों के कौन-कौन से भेद होते हैं?
ग संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं?
घ उच्चारण के आधार पर व्यंजन के कितने भेद होते हैं ? नाम लिखिये।
ड वर्ण की विशेषताएँ लिखिये?

पाठ -3

शब्द विचार (Etymology)

भाषा में भावों अथवा विचारों को व्यक्त करने का साधन एवं आधार शब्द ही है। शब्द वह ध्वनि है जिस से व्यवहारिक रूप में किसी पदार्थ या भाव का बोध होता है। यह एक या एक से अधिक वर्षों के निश्चित क्रम मिलने से बनता है। प्रत्येक शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है।)

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए-

(क) मैं चाय नहीं पीता।	मैं चाय-वाय नहीं पीता।
(ख) शिल्पा को अभी खाना नहीं चाहिए।	शिल्पा को अभी खाना-वाना नहीं चाहिए।
(ग) आप सब्जी ले जाइए।	आप सब्जी वब्जी ले जाइए।

उपर्युक्त वाक्यों में आए रंगीन शब्दों वाय, वाना एवं वब्जी का अपना कोई अर्थ नहीं है, पर दूसरे शब्द के साथ जुड़कर ये उसके अर्थ में सहयोग देते हैं, जैसे-

1. चाय-वाय 'वाय' का कुछ अर्थ नहीं है, किंतु चाय के साथ जुड़कर उसका अर्थ निकलता है। चाय के साथ खाई जाने वाली चीजें, जैसे-बिस्कुट, नमकीन आदि।

2. खाना-वाना-इसी प्रकार 'वाना' का कोई अपना अर्थ नहीं है, किंतु इसका प्रयोग खाने के साथ मिलकर अचार, सलाद, दही आदि साथ में खाई जाने वाली चीज़ों के लिए हुआ है।

3. सब्जी-वब्ज़ी-'वब्ज़ी' निरर्थक शब्द है, किंतु यहाँ वब्ज़ी का अर्थ है- सब्ज़ी के साथ प्रयोग होने वाला मसाला, जैसे- हरी मिर्च, हरा धनिया, अदरक, लहसुन इत्यादि।

इस प्रकार प्रत्येक शब्द का अपना एक अर्थ होता है, किंतु वाक्य में कभी-कभी निरर्थक शब्द सार्थक शब्दों के साथ जुड़कर एक विशेष अर्थ देते हैं। इसके अलावा शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाई है)

वर्णों के मेल से बना सार्थक ध्वनि-समूह, जिसका प्रयोग वाक्य में विचारों को प्रकट करने के लिए किया जाता है, 'शब्द' कहलाता है।

शब्द और पद - स्वतंत्र वर्णों का सार्थक समूह शब्द होता है। परंतु जब उस शब्द का वाक्य में प्रयोग किया जाता है तो, वह स्वतंत्र न रहकर व्याकरण के नियमों में बँध जाता है और पद कहलाता है।

जैसे-'पुस्तक' एक शब्द है, लेकिन 'अक्षिता पुस्तक पढ़ती है। वाक्य में प्रयुक्त 'पुस्तक' शब्द एक पद है अर्थात वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द पद कहलाता है।

शब्दों का वर्गीकरण

हिंदी-शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया जाता है-

• उत्पत्ति या स्त्रोत के आधार पर
• व्युत्पत्ति या रचना के आधार पर
• अर्थ के आधार पर
• प्रयोग के आधार पर

1. <u>उत्पत्ति के आधार पर</u>

उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद होते हैं- तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी।

(क) तत्सम शब्द - वे शब्द जो संस्कृत भाषा से बिना किसी परिवर्तन के हिंदी में आ गए हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं, जैसे- अग्नि, सूर्य, क्षेत्र, रात्रि, कर्म आदि।

(ख) तद्भव शब्द - वे शब्द जो संस्कृत भाषा से परिवर्तन के साथ हिंदी आ गए हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे- आग, सूरज, खेत, रात, काम आदि।

क.म.	**तत्सम**	**तद्भव**
1	अगम्	अगम
2	अक्षर	आखर
3	अमृत	अमिय
4	अंध	अंधा
5	अंधकार	अंधेर
6	अग्र	आगे
7	आम्र	आम
8	अन्यत्र	अनत
9	अमूल्य	अमोल
10	आदित्यवार	इतवार
11	अर्द्ध	आधा
12	अष्ट	आठ
13	शर्करा	शक्कर

क.म.	**तत्सम**	**तद्भव**
14	आश्चर्य	अचरज
15	अग्नि	आग
16	अन्न	अनाज
17	सूर्य	सूरज
18	अंगुलीय	अँगूठी
19	अंगुष्ठ	अंगूठा
20	अक्षि	आँख
21	आलस्य	आलस
22	अम्लिका	इमली
23	सर्प	साँप
24	अश्रु	आँसू
25	अवगुण	औगुन

(ग) देशज शब्द - इन शब्दों का निर्माण लोकभाषाओं या स्थानीय बोलियों के प्रचलन से होता लोक भाषाओं में इन शब्दों की बहुलता होती है; जैसे- कटोरा, ठुमरी, जूता, तेंदुआ, कबड्डी, भोंपू, डिबिया, खिचड़ी, पगड़ी, गड़बड़, टट्टू, खखरा, कटरा, फुनगी, कलाई, ठेठ, अंटा आदि।

(घ) विदेशी शब्द - विदेशी भाषाओं से हिंदी में आए शब्द विदेशी शब्द कहलाते हैं। हिंदी में मुख्यतः अरबी फारसी, तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली और फ्रांसीसी भाषा के शब्द मिलते हैं। अरबी, फारसी और तुर्की शब्दों को हिंदी भाषा के उच्चारण के अनुरूप ढाल लिया गया है।
विदेशी शब्दों को आगत शब्द भी कहते हैं।

हिंदी में प्रयुक्त प्रमुख विदेशी शब्द निम्नलिखित हैं-

1) अरबी शब्द- अजब, अजीब, अजायब, अल्ला, अक्ल, अखबार, आदमी, आखिर, आदत, असार, औल औरत, औसत, उम्र, इलाज, इज्जत, इमारत, इनाम, इस्तीफा, ईमान, मतलब, मुकदमा, जवाब, तक किला, दौलत, कातिल, कसूर, कसर, कब्र, किस्सा, कदम, कीमत, कुर्सी, कातिल, खत,

अंग्रेज़ी शब्द

राशन, फ़ीस, टिकट, नर्स, टीम, सिनेमा, स्कूल, मिल, मशीन, बॉल, मोटर, स्कूल, टैक्सी- स्टॉप, पॉलिसी, स्टेशन, हैट, डायरी, बूथ, कोर्ट, कॉलेज, फुटबॉल, डॉक्टर, पुलिस आदि।

तुर्की व पुर्तगाली शब्द

तोप, बहादुर, कुली, अचार, चाकू, गलीचा, कमीज़, खाना, तंबाकू, कैंची, गमला, चाबी गोदाम, तिजोरी, कारतूस, खज़ानची, बालटी, फ़ीता, पलटन, मिस्त्री, तौलिया आदि।

फ़ारसी शब्द - कागज, दुकान, फौज़, बादाम, खर्च, गिरफ्तार, दारोगा, जनाना, जमीन, अचार, आसमान, नमक, दरवाजा, शराब, शादी आदि।

चीनी शब्द - तूफान, लीची, चाय, पटाखा आदि।

यूनानी शब्द -टेलीफोन, एटम, डेल्टा, टेलीग्राफ आदि।

<u>रचना के आधार पर</u>

रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं- रूढ़, यौगिक और योगरूढ़।

(क) रूढ़ शब्द - वे शब्द जो किसी एक वस्तु, स्थान, व्यक्ति या कार्य-गुण के लिए रूढ़ हो जाते हैं, रूढ़ शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों के खंड नहीं किये जा सकतें जैसे शेर, घर, पुस्तक, सियार, अब, तब आदि।

(ख) यौगिक शब्द - एक से अधिक सार्थक शब्दों के योग से बने शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं;

स्नान + घर = स्नानघर

वाचन + आलय = वाचनालय

विद्या+आलय = विद्यालय

वेध + शाला = वेधशाला

घुड़+सवार= घुड़सवार

योगरूढ़ शब्द - वे शब्द जो यौगिक होकर भी किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हैं योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं

जैसे-

पीतांबर = पीत + अंबर = पीला है वस्त्र जिसका अर्थात कृष्ण

नीलकंठ = नील + कंठ = नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव

दशानन = दश + आनन = दस हैं आनन (मुख) जिसके अर्थात रावण

जलज = जल+ज = जल से उत्पन्न अर्थात कमल

प्रयोग के आधार पर शब्द के भेद

जब हम अपने विचार बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं तो शब्दों को कभी-कभी ज्यों का त्यों प्रयोग करते हैं, कभी-कभी कुछ बदलकर। कुछ शब्द लिंग, काल तथा वचन से प्रभावित होते हैं तो कुछ नहीं।

इसी आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं-

(ई) विकारी शब्द

(ई) अविकारी शब्द

विकारी शब्द

विकारी शब्द वे होते हैं जो लिंग, काल तथा वचन से प्रभावित होते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण शब्द विकारी होते हैं। ये लिंग, वचन तथा काल के साथ-साथ अपना स्वरूप बदलते जाते हैं। जैसे-

संज्ञा लड़का, लड़के लड़कों
सर्वनाम, मैं , मुझे , मेरा
क्रिया आ, आया, आयेगा
विशेषण काला, काली, काले

,

(ii) अविकारी शब्द

कुछ शब्द सदा अपने मूल रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं, वे लिंग, वचन तथा काल से प्रभावित नहीं होते। क्रियाविशेषण, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक तथा संबंधबोधक अविकारी शब्द होते हैं।
जैसे -

क्रियाविशेषण	ऊपर,	वहाँ,	कल,	तेज	आदि।
समुच्चयबोधक	और	तथा,	इसलिए	कि	आदि।
समुच्चयबोधक	ओह।	हाय!,	शाबाश !	आदि।	
संबंधबोधक	के नीचे,	के बिना	आदि।		

अर्थ के आधार पर शब्द भेद - अर्थ के स्तर पर शब्द भाषा की लघुतम स्वतंत्र इकाई है, परन्तु शब्द का एक निश्चित अर्थ नहीं होता। कभी-कभी प्रसंग, संदर्भ और कथन के ढंग आदि के कारण शब्द का अर्थ बदल भी जाता हैं

अर्थ के आधार पर शब्दों को निम्नलिखित चार प्रमुख भागों में बाँटा

1. एकार्थी शब्द
2. अनेकार्थी शब्द
3. समानार्थी या पर्यायवाची शब्द
4. विपरीतार्थी या विलोम शब्द

1. <u>एकार्थी</u> - एक ही अर्थ वाले शब्द एकार्थी कहलाते हैं, जैसे-घोड़ा, कुत्ता, पुस्तक, घर, अपराध, उत्तम सम्राट, लोहा, अपयश आदि।

2. अनेकार्थी शब्द - ऐसे शब्द जिनके अनेक अर्थ होते हैं, वे अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं;
जैसे -

कुल - सब मिलाकर, वंश ,परिवार

हंस- सूर्य, आत्मा, हंस (पक्षी का नाम)

समानार्थी या पर्यायवाची शब्द - ऐसे शब्द जिनके अर्थ में समानता हो पर्यायवाची शब्द कहते हैं;
जैसे -

अंबर - नभ, व्योम, गगन, आकाश।

इंद्र - महेंद्र, देवराज, सुरेंद्र, देवेंद्र, सुरपति, सुरेश, पुरंदर।

4. **विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द** - विपरीत अर्थ व्यक्त करने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं**;**
जैसे -

आय- व्यय
कायर -वीर
गहरा- उथला
दुर्जन -सज्जन
दुर्गंध -सुगंध

युग्म शब्द

हिंदी में युग्म शब्दों का प्रयोग किया जाता है। 'युग्म' का शाब्दिक अर्थ है- जोड़ा। जिन शब्दों का जोड़े में प्रयोग किया जाता है, उन्हें युग्म शब्द कहते हैं। युग्म शब्द निम्न प्रकार के होते हैं-

1. एक ही शब्द की आवृत्ति से बनने वाले युग्म शब्द –

पतले-पतले	पहुँचते-पहुँचते	पूछता-पूछता	पूरा-पूरा	भिन्न-भिन्न
मंद-मंद	राम-राम	कहते-कहते	तिल-तिल	कभी-कभी
दाना-दाना	एक-एक	पास-पास	कभी-कभी	तिल-तिल
खड़े-खड़े	कहते-कहते	कली-कली	कभी-कभी	दर-दर

2.मिलते-जुलते अर्थ वाले दो शब्दों का युग्म-

नौकर-चाकर	दाल-रोटी
कंकड़-पत्थर	सोच-विचार
जी जान	सोच विचार
चमक दमक	दीन दुखी

3. विपरीतार्थक. युग्म शब्द-

चर-अचर	दाएँ-बाएँ
हर्ष-विषाद	लाभ-हानि
लेना-देना	सत्य-असत्य
दिन-रात	लेना-देना

अभ्यास करें

1.निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

आग, अनाज, सूरज, अनत आम अंधेरा, अंध अगम, साँप, घोड़ा।

2. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए-

अग्र, क्षेत्र, नव, मक्षिका, शुष्क, अक्षि, अद्य, कंकण, क्षण, दश, भगिनी, पौत्र, मृत्तिका,

3.शब्द किसे कहते हैं? शब्द के कितने भेद होते हैं?

4.रचना के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

5.रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों से कीजिए-

(क) जो यौगिक शब्द विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, ----------उन्हें कहते हैं। (रूढ़, योगरूढ़)
(ख) विद्यालय --------शब्द है।(यौगिक, रूढ़)
(ग) विकारी शब्दों का रूप --------है।(बदलता, नहीं बदलता)
(घ) संस्कृत के वे शब्द, जिनका प्रयोग हिंदी में होता _____शब्द कहलाते है। (तद्भव, तत्सम)
(ड)_____विकारी शब्द हैं। (पुस्तक, मोहन, और, गया, धीरे-धीरे, अब, वह,

पाठ- 4
वाक्य विचार (Syntax)

भाषा की इकाई वाक्य है। वाक्य की इकाई पद होता है। पद की इकाई शब्द होते हैं तथा शब्द की इकाई अक्षर अथवा वर्ण होते हैं। वस्तुतः वाक्य ही भाषा की वह इकाई है, जिसके माध्यम से हमारे भाव अथवा विचार पूर्णता के साथ अभिव्यक्त किए जाते हैं। दो या दो से अधिक सार्थक शब्दों के योग से वाक्य बनता है।

वाक्य के द्वारा ही व्यक्ति भावों अथवा विचारों को स्पष्ट रूप से पूर्णता के साथ व्यक्त करता हैं।

जब हम अपने मन की बात, विचार या भाव दूसरों तक पहुँचाते हैं तो ऐसा हम दो प्रकार से कर सकते है- लिखकर या बोलकर। जब हम बोलकर अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं, तो हम बातचीत करते हैं तथा वाक्यों का सहारा लेते हैं।

शब्दों का ऐसा व्यवस्थित, सार्थक समूह जो किसी विचार अथवा भाव को पूर्णतः व्यक्त कर सकता है, वाक्य कहलाता है।

कभी-कभी एक या दो शब्दों में ही पूरा भाव स्पष्ट हो जाता है।

जैसे - 1. सुनिए ! 2. कहाँ 3. आइए 4. ठीक है।

ये सभी वाक्य हैं क्योंकि ये पूर्ण भाव की अभिव्यक्ति कर रहे हैं। वाक्य की एक पहचान यह भी है कि उसके अंत में पूर्ण विराम (।), प्रश्न सूचक चिह्न (?) या विस्मय सूचक चिह्न (!) अवश्य आता है।

वाक्य की पूर्णता के लिए आकांक्षा, योग्यता तथा आसक्ति का होना आवश्यक है।

आकांक्षा

वाक्य में आकांक्षा अर्थात भावाभिव्यक्ति तथा भाव-ग्रहण की आकांक्षा की तृप्ति होनी च चाहिए तभी वाक्य पूरा माना जाएगा। **जैसे -** 'आकाश में चिड़िया' यह सुनकर आकांक्षा तृप्ति नहीं होती। यदि कहें कि 'आकाश में चिड़िया उड़ी' तो आकांक्षा तृप्ति होती है।

योग्यता

वाक्य केवल व्याकरण की दृष्टि से ठीक हो तथा अर्थ देने की योग्यता न रखे तो उसे वाक्य नहीं कहेंगे। **जैसे** - बच्चा खाना चरता है। यह वाक्य व्याकरण की दृष्टि से ठीक है किंतु इसमें बात समझाने की योग्यता नहीं है - वाक्य केवल व्याकरण की दृष्टि से ठीक हो तथा अर्थ देने की योग्यता न रखे तो उसे वाक्य नहीं कहेंगे।
जैसे - बच्चा खाना चरता है।

वाक्य व्याकरण की दृष्टि से ठीक है किंतु इसमें बात समझाने की योग्यता नहीं है।

आसक्ति - वाक्य में पदों का निश्चित क्रम लिंग, वचन, काल, कारक, पुरुष आदि का क्रिया से मेल तथा सबंध ही उनकी परस्पर आसक्ति है। ऐसा होने पर ही सही अर्थ संप्रेषित होता है।
जैसे- में उड़ती हैं चिड़ियाँ आसमान।

यहाँ पदों का क्रम ठीक नहीं है। यह वाक्य इस प्रकार बनेगा - चिड़ियाँ आसमान में उड़ती हैं।

वाक्य के अंग

वाक्य को कर्ता तथा कार्य के आधार पर दो अंगों में विभाजित किया जा सकता है-

1. उद्देश्य
2. विधेय

उद्देश्य - जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे सूचित करनेवाले शब्द को उद्देश्य कहते हैं; जैसे-

माताजी मंदिर जा रही हैं।

सागर कहानी लिख रहा है।

यहाँ माताजी और सागर के बारे में कुछ कहा गया है। अतः इन वाक्यों में माताजी तथा सागर उद्देश्य हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी वाक्य का कर्ता ही उस वाक्य का उद्देश्य होता है।

विधेय - उद्देश्य के द्वारा किया गया कार्य विधेय कहलाता है।
ऊपर दिए वाक्यों में- माताजी के द्वारा मंदिर जाना और सागर के द्वारा कहानी ये कार्य कर्ता के द्वारा विधान किए गए हैं। अतः ये विधेय हैं।

पदक्रम - वाक्य में शब्द प्रयुक्त नहीं होते बल्कि पद प्रयुक्त होते हैं। अर्थवाची और संबंधवाची शब्द मिल पद बनाते हैं। ये पद ही वाक्य में प्रयुक्त होकर अर्थ को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं। वाक्य में पदों का क्रम ही पदक्रम कहलाता है।

हिंदी भाषा में वाक्य संरचना की' दृष्टि से जिस नियम का पालन किया जाता है, उसके अनुसार पद क्रम होता है। कर्ता का विस्तार, कर्ता, कर्म का विस्तार, कर्म, क्रिया का विस्तार तथा क्रिया पद का क्रम होता है जबकि अंग्रेजी भाषा में वाक्य की रचना-प्रकृति हिंदी भाषा से भिन्न होती है। वहाँ पदक्रम होता है कर्ता,क्रिया, कर्म।

नीचे दिए गए उदाहरणों को पढ़िए और समझिए -

हिन्दी भाषा	संजय	विद्यालय	जायेगा
	कर्ता	कर्म)	क्रिया
अंग्रेज़ी भाषा	Sanjay	Will go	to school
	(Subject)	(Verb)	(Object)

वाक्य के भेद (Kinds of Sentence)

1. रचना के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य के भेद तीन होते है

(i) सरल वाक्य (Simple Sentence)

(ii) संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

(iii) मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)

सरल वाक्य

मैं प्रतिदिन रामायण पढ़ती हूँ।
वह कंप्यूटर चलाने में कुशल
उपर्युक्त वाक्यों में 'मैं' और 'वह' उद्देश्य (कर्ता) हैं तथा 'प्रतिदिन रामायण पढ़ती हूँ' और 'कंप्यूटर चलाने में कुशल है' विधेय हैं।

जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उसे 'सरल या साधारण वाक्य' कहतें हैं।

2. मिश्रित वाक्य

वह व्यक्ति, जो सड़क पार कर रहा था, दुर्घटनाग्रस्त हो गया।
जैसे ही घंटी बजी, छात्र प्रार्थना स्थल पर पहुँच गए।
उपर्युक्त वाक्यों में 'वह व्यक्ति दुर्घटनाग्रस्त हो गया' प्रधान उपवाक्य है तथा 'सड़क पार कर रहा था' प्रधान पर आश्रित है।
इसी प्रकार दूसरे वाक्य में 'छात्र प्रार्थना स्थल पर पहुँच गए' प्रधान उपवाक्य है और 'घंटी बजी' प्रधान पर आश्रित है।

जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा अन्य आश्रित या गौण उप वाक्य हो, वह मिश्रित वाक्य कहलाता है ।

3.संयुक्त वाक्य

मेरा भाई बीमार है, इसलिए अस्पताल जा रहे हैं।

गली में शोर हुआ और सब लोग बाहर आ गए।

उपर्युक्त वाक्यों में दो-दो स्वतंत्र उपवाक्य हैं, जो क्रमशः 'इसलिए' व 'और' योजकों से जुड़कर एक वाक्य बना रहे हैं।

संयुक्त का अर्थ है-जुड़ा हुआ। इसीलिए जब दो या दो से अधिक स्वतंत्र वाक्यों को इस तरह जोड़कर एक वाक्य बनाया जाता है कि उसके सभी उपवाक्य स्वतंत्र हों अर्थात् परस्पर कोई किसी के आश्रित न हो, तो वह संयुक्त वाक्य कहलायेगा।

जिस वाक्य में दो या दो से अधिक वाक्य स्वतंत्र रूप से समुच्चयबोधक अव्यय-और, तथा, एवं, इसलिए, अतः, अन्यथा, या, किंतु, परंतु, लेकिन, पर, तो द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

मिश्रित व संयुक्त वाक्यों में अंतर

(क) संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य समुच्चय बोधक अव्यय से जुड़े होते हैं ऐसे उपवाक्यों को 'समानाधिकृत उपवाक्य' भी कहते हैं।

(ख) मिश्रित वाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य होता है तथा शेष उपवाक्य उसके आश्रित होते हैं,

जैसे - मैं प्रातःकाल कानपुर गया और शाम को लौट आया। (संयुक्त वाक्य)
बादल गरजे और वर्षा होने लगी। (संयुक्त वाक्य
प्रधानाचार्य ने कहा कि कल विद्यालय बंद रहेगा। (मिश्रित वाक्य)
जिनके पास टिकट नहीं है, वे गाड़ी से उतर जाएँ। (मिश्रित वाक्यय)

अर्थ के आधार पर वाक्य भेद

- अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं:
- विधानवाचक वाक्य (असर्टिव/एफर्मेटिव सेंटेंसेस)
- निषेधात्मक वाक्य
- प्रश्नवाचक वाक्य
- संदेहवाचक वाक्य
- विस्मयादिवाचक वाक्य
- इच्छावाचक वाक्य (इलेटिव सेंटेंसेस)
- संकेतवाचक वाक्य (इंडिकेटिव सेंटेंसेस)
- आदेशात्मक वाक्य

(क) विधानवाचक वाक्य - जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है किसी के अस्तित्व का बोध होता है, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहा जाता है। **जैसे-**

वृक्ष हमें स्वच्छ वायु प्रदान करते हैं।
किसान खेत में हल चला रहा है।
आज सोमवार है।
हिमालय भारत के उत्तर में स्थित है।

(ख) निषेधात्मक वाक्य - जिन वाक्यों से किसी कार्य के निषेध (न होने) का बोध हो, उस निषेधात्मक वाक्य कहा जाता है। **जैसे-**

वह आज नहीं आएगा।
मैं आज खाना नहीं खाऊँगी।
तरुण ने पाठ नहीं पढ़ा।
हो सकता है वह आ जाए।

(ग) प्रश्नवाचक वाक्य - जिन वाक्यों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाच वाक्य कहते हैं। **जैसे-**

बाहर कौन बैठा है?
तुम क्या कर रहे हो?
क्या तुमने खाना खा लिया है?
तुम्हें किससे मिलना है?

(घ) संदेहवाचक वाक्य - जिन वाक्यों से किसी कार्य के होने में संदेह या संभावना की भावन बोध हो, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। **जैसे-**

शायद वह आने वाला है।
संभवतः आज वर्षा होगी।
अब तक वह घर पहुँच गया होगा।
हो सकता है वह आ जाए

(ड) विस्मयादिवाचक वाक्य - जिन वाक्यों से आश्चर्य, घृणा, हर्ष, शोक आदि के भाव व्यक्त हो. उन्हें विस्मयादिवाचक वाक्य कहा जाता है। **जैसे-**

अरे। इतना मोटा हाथी।
ओह! यह क्या हो गया।
अहा। कितना सुंदर दृश्य है।
वाह! तुमने तो कमाल कर दिया।

(च) इच्छावाचक वाक्य - जिन वाक्यों में वक्ता को इच्छा, आशा या आशीर्वाद, शुभकामना आदि का भाव व्यक्त हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहा जाता है। **जैसे-**

ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे।
भगवान करे, तुम सफल हो।
तुम्हारी यात्रा सुखद रहे।
तुम्हें नववर्ष की शुभकामनाए

(छ) संकेतवाचक वाक्य - जिन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी पर निर्भर हो। उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहा जाता है **जैसे–**

परिश्रम करोगे, तो अवश्य सफलता मिलेगी।
वर्षा होती, तो फसल भी खूब होती।
आप आओगे, तो मैं भी चलूँगा।
यदि मौसम ठीक रहा, तो हम घूमने जाएँगे।

(ज) आज्ञा या विधिवाचक वाक्य - जिन वाक्यों द्वारा आज्ञा या अनुमति विनय प्रार्थना या निर्देशआदि का भाव प्रकट होता है, उन्हें आज्ञा या विधिवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-

कृपया मेरी सहायता कीजिए। (प्रार्थना)
उधर खड़े हो जाओ। (आज्ञा)
यहाँ मत बैठो। (निर्देश)
तुम जा सकते हो। (अनुमति)

अभ्यास कार्य

1 अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद किए गए हैं? प्रत्येक का एक-एक उदाहरण सहित लिखिए।

2. रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक का नाम व उदाहरण दीजिए।

3.नीचे दिए गए वाक्यों में उद्देश्य और विधेय छाँटकर लिखिए-

वाक्य	उद्देश्य	विधेयक
अतुल ने पेंटिंग बनाई।		
नई दिल्ली भारत की राजधानी है।		
अध्यापिका बच्चों को पढ़ा रही हैं।		
दादाजी बाजार से आ रहे हैं।		

4.वाक्य किसे कहते हैं? वाक्य के कितने अंग होते हैं?

5.विकल्प के सामने सही (✓) का चिह्न लगाइए

(क) रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं ?

(1) पाँच (2) तीन
(3) छह (4) चार

ख) एक उद्देश्य और एक विधेय किस प्रकार के वाक्य में होते हैं ?

(1) मिश्रित (2) सरल
(3) संयुक्त (4) मिश्र

(ग) जिस वाक्य से किसी बात की सूचना प्राप्त हो, उसे क्या कहेंगे ?

(1) संकेतवाचक (2) स्वैच्छिक
(3) विधायी (4) निषेधवाचक

(घ) अफसर ने सैनिकों से आगे बढ़ने को कहा-वाक्य में कौन-सा भेद है ?

(i) स्वैच्छिक (2) संकेतवाचक
(3) आज्ञाकारी (4) प्रश्न वाचक

पाठ -5

संज्ञा (Noun)

यह भारत के राष्ट्रपिता **महात्मा गांधी** का **चित्र** है। गांधी जी का जन्म **काठियावाड़** के **पोरबंदर** नामक स्थान में हुआ था। इनके **पिता** श्री **कर्मचंद गांधी** पोरबंदर **रियासत** के **दीवान** थे। इनकी **माता** श्रीमती **पुतलीबाई** धार्मिक विचारों की **महिला** थीं। गांधी जी **सत्य, अहिंसा** और **मानवता** के पुजारी थे। इन्होंने **देश** की **स्वतंत्रता** के लिए **आंदोलन** किया और हमें स्वतंत्र करवाया।

ऊपर दिए गए वाक्यों में प्रयुक्त काले (मोटे) शब्दों

भारत, महात्मा गांधी, पोरबंदर, कर्मचंद गांधी, पोरबंदर, पुतलीबाई-व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष के नाम हैं।

चित्र, पिता, रियासत, दीवान, माता, महिला, देश-किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तुओं के सामान्य नाम हैं। सत्य, अहिंसा, मानवता, स्वतंत्रता, आंदोलन व्यक्ति या वस्तु के गुण, भाव आदि के नाम हैं।
सभी प्रकार के नामों को व्याकरण में 'संज्ञा' कहा जाता है। है।

संज्ञा की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है-

जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव या गुण का बोध हो, वह संज्ञा कहलाता है।

संज्ञा के मुख्य तीन भेद होते हैं-
1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3.भाववाचक संज्ञा।

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**- किसी विशेष प्राणी, वस्तु अथवा स्थान का बोध कराने वाले शब्द, व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे- कालीदास, चंद्रशेखर आजा, चाणक्य, चेन्नई, इलाहाबाद, महाभारत, पंचतंत्र, गोदान, कामायनी, हिमालय, कंचनजंगा, गंगा, यमुना आदि।

किसी विशिष्ट वस्तु, विशिष्ट व्यक्ति या विशिष्ट स्थान के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा**- जो शब्द किसी प्राणी, स्थान या वस्तु की जाति या समूह का बोध कराएँ, जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे- मनुष्य, सिंह, मोर, पुस्तक, डायरी, कलम, नगर, ग्राम, पर्वत, नदी आदि।

जिस शब्द से संपूर्ण जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

3. **भाववाचक संज्ञा**- जो शब्द किसी भाव, गुण, दोष अथवा अवस्था का बोध कराते हैं, भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे- मानवता, मित्रता, पांडित्य, देवत्व, बचपन, लज्जा, हर्ष, क्रोध, घृणा आदि।

किसी गुण, स्थिति, दशा, भाव या विशेषता के नाम का बोध कराने वाले शब्द को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

4.द्रव्यवाचक संज्ञा- जो शब्द किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराए अर्थात जिसे नापा या तौला जा सके, द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाता हैं: जैसे- चावल, गेहूँ, तेल, घी, सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल आदि।

समूहवाचक संज्ञा - जिस शब्द से किसी समूह या समुदाय का बोध हो समूहवाचक संज्ञा कहलाता है; जैसे- भीड़, कक्षा, सभा, मंडली, गुच्छा, झुंड आदि।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण - कुछ शब्द अपनी मूल प्रकृति से ही भाववाचक संज्ञा होते हैं, परं शब्द भी हैं जिन्हें दूसरे प्रकार के शब्दों से बनाया जाता है। हिंदी में चार प्रकार के विकारी शब्दों तथा से भाववाचक संज्ञा बनती हैं।

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक
नर	नरत्व
पशु	पशुत्व
ब्राह्मण	ब्राह्मणत्व
इंसान	इंसानियत
कुमार	कौमार्य
पित	पितृत्व
किशोर	कैशोर्य
कुमार	कौमार्य
अतिथि	आतिथ्य
नेता	नेतृत्व
स्त्री	स्त्रीत्व
वीर	वीरता
जंगली	जंगलीपन

सर्वनामों से भाव वाचक संज्ञा

सर्वनाम	भाववाचक
अपना	अपनत्व/अपनापन
आप	आपा
तेरा	तेरापन
मम	ममता
पराया	परायापन
निज	निजता

विशेषण से भाववाचक संज्ञा

विशेषण	भाववाचक
अजर	अजरता
आस्तिक	आस्तिकता
आवश्यक	आवश्यकता
उपयोगी	उपयोगिता
आलसी	आलस्य
काला	कालिमा/कालापन
कुपात्र	कुपात्रता
कमज़ोर	कमजोरी
कुशाग्र	कुशाग्रता
अमर	अमरता

क्रिया पद से भाववाचक संज्ञा

क्रिया पद	भाववाचक
कसना	कसावट
कमाना	कमाई
खोजना	खोज
गिनना	गिनती
घबराना	घबराहट
चकराना	चक्कर
कटना	कटाव
गिड़गिड़ाना	गिड़गिड़ाहट
चुनना	चुनाव

अविकारी शब्द से भाववाचक संज्ञा

अविकारी शब्द	भाववाचक संज्ञा
नीचे	निचाई
धिक्	धिक्कार
दूर	दूरी
निकट	निकटता
समीप	समीपता
मना	मनाही
शीघ	शीघ्रता
बहुल	बहुलता

अभ्यास कार्य

1.**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए**-

(क) संज्ञा किसे कहते हैं?

(ख) संज्ञा कितने प्रकार की होती हैं?

(ग**)** व्यक्तिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं**?** दो-दो उदाहरण दीजिए।

2.रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए शब्दों की भाववाचक संज्ञा से कीजिए-

क**)** वे **------**से दुखी हैं। **(**बूढ़ा**)**

ख**) ---------**व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन है। **(**आलसी **)**

ग**)** लक्ष्मीबाई के **--------**को देखकर मैं चकित रह गया। **(**साहसी **)**

घ**)** शहद की **---------**कम नहीं होती **(**मीठा**)**

ङ**)** नेता जी के वक्तव्य में **-------**का अभाव था। **(** स्पष्ट **)**

4. क्रिया पदों से भाववाचक संज्ञा बनाइए।

- **चलना** _____
- **घबराना** _____
- **डरना** _____
- **चुनना** _____
- **कटना** _____
- **खोजना** _____

अध्याय -6
लिंग (Gender)

जिन संज्ञा शब्दों को पढ़कर उनके नर या मादा होने का पता चल जाता है। लिंग कहलाते है इसी प्रकार अन्य प्राणियों के भी नर या मादा होने का पता उनके नाम से चल जाता है। जैसे-

1. बंदर और बंदरिया
2. शेर और शेरनी
3. बैल और गाय
4. मोर और मोरनी

'बंदर', 'शेर', 'बैल' तथा 'मोर' नर हैं तथा 'बंदरिया', 'शेरनी', 'गाय' तथा 'मोरनी' मादा हैं। इन जीवों के नाम इनके नर या मादा होने का बोध कराते हैं। अतः
संज्ञा के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं।
'लिंग' का अर्थ है- चिह्न।
लिंग संज्ञा का वह लक्षण है जो संज्ञा के पुरुषवाची या स्त्रीवाची होने का बोध कराता है।
हिंदी भाषा में लिंग के दो भेद होते हैं-

लिंग के भेद (Kinds of Gender)

पुल्लिग (Masculine)
स्त्रीलिंग (Feminine)

पुल्लिंग - जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, वे पुल्लिग कहलाते हैं। जैसे-

1. कुम्हार घड़े बना रहा है।
2. घोड़ा दौड़ रहा है।
3. नाई बाल काट रहा है।
4 लेखक लिख रहा है।
कुम्हार, घोड़ा, नाई तथा लेखक - ये सभी शब्द पुरुष जाति के हैं।

पुल्लिंग की पहचान

1. जिन शब्दों के अंत में पन, अक, त्व, औड़ा, ना, आपा, य, आव, आया प्रत्यय आते हैं, वे प्रायः पुल्लिग होते हैं। जैसे–

पन – बड़प्पन, बचपन, बचकानापन, छुटपन, दीवानापन इत्यादि।
अक – गायक, लेखक, शिक्षक, नायक, पालक, बालक इत्यादि।
त्व –कवित्व, नेतृत्व, अपनत्व, नारीत्व, बंधुत्व, पुरुषत्व इत्यादि।
औड़ा – पकौड़ा, हथौड़ा, भगौड़ा, मकौड़ा इत्यादि। –
ना – टहलना, चलना, खाना, हँसना, बिलखना, दिखाना।

आवा – पहनावा, दिखावा, भुलावा, छलावा, चढ़ावा इत्यादि।
य – मनुष्य, शिष्य, सौंदर्य, प्रिय, धैर्य, स्वास्थ्य इत्यादि।
आपा – बुढ़ापा, मोटापा, पुजापा इत्यादि।

स्त्रीलिंग –जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, वे स्त्रीलिंग कहलाते हैं।
जैसे-

1. जुलाहिन सूत कात रही है।
2. हथिनी नहा रही है।
3. मुरगी दाना चुग रही है।
4. गायक गा रहा है।

जुलाहिन, मुरगी, हथिनी तथा गायिका शब्द स्त्री जाति के होने का बोध करा रहे हैं। अतः स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

स्त्रीलिंग की पहचान

1. उकारांत तत्सम संज्ञा शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे–वायु, वस्तु, धातु, ऋतु, मृत्यु इत्यादि। (अपवाद – साधु, गुरु)

2.इकारांत तत्सम शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे–जाति, समिति, शक्ति, हानि, संधि, परिणति, शांति इत्यादि। (अपवाद– कवि,रवि)

3.आकारांत तत्सम शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे– सभा, क्रीड़ा, ध्वजा, घृणा, लता, माला, शोभा, माया, परीक्षा, आत्मा,

4.भाषाओं, बोलियों और लिपियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे–
भाषा- उर्दू, हिंदी, मराठी, बंगला, चीनी, तमिल, उड़िया इत्यादि।
बोली - भोजपुरी, हरियाणवी, राजस्थानी, मैथिली, अवधी इत्यादि।
लिपि - देवनागरी, ब्राह्मी, खरोष्ठी, गुरुमुखी, फ़ारसी इत्यादि।

5.शरीर के कुछ अंग स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे–पलक, छाती, आँख, नाक, जीभ, ठोड़ी, नाभि, कमर इत्यादि।

6.नदियों और झीलों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे–
नदी - सिंधु, यमुना, गंगा, कावेरी, नर्मदा, ताप्ती, झेलम इत्यादि।
झील - डल, चिलका, बालकश, बेकाल, साँभर इत्यादि।

7.समुदाय या समूह का बोध कराने वाले कुछ शब्द स्त्रीलिंग होते हैं जैसे संसद, सेना, सरकार, परिषद्, भीड़, टोली, सभा, समिति इत्यादि।

8.अना' प्रत्यय वाले तत्सम शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे–याचना इत्यादि।

9. जिन शब्दों के अंत में ता, इया, आहट, आवट, री, त्, ई, आस इमा नी आई आदि आते है,वे प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे–ता–एकता, सभ्यता, नैतिकता, पहचान, गुलामी, शिशुवाद, चिंता, इत्यादि।

इया – चुहिया, बंदरिया, डिबिया, कुटिया, गुड़िया, बुढ़िया इत्यादि।
आहट – चिकनाहट, कड़वाहट, चिल्लाहट, गरमाहट, घबराहट इत्यादि।
आवट – थकावट, मिलावट, बुनावट, सजावट, बनावट इत्यादि।
री – परी, बकरी, चाकरी, कबूतरी, गठरी, नगरी इत्यादि।
त – ताकत, चाहत, बचत, रंगत, संगत, हरकत इत्यादि।
ई – मज़दूरी, ग़रीबी, आबादी, गरमी, सरदी, खिड़की, पगड़ी इत्यादि।
आस – प्यास, भड़ास, विकास, प्रयास, आवास इत्यादि।
इमा – प्रतिमा, कालिमा, लालिमा, गरिमा, महिमा इत्यादि।
नी – कथनी, करनी, जननी, चटनी, छलनी इत्यादि।

नित्य पुल्लिंग शब्द

हिंदी में कुछ शब्द नित्य पुल्लिग शब्द होते हैं। जैसे–
चीता, बिच्छू, मच्छर, कीड़ा, कछुआ, भेड़िया, उल्लू, कौआ, खटमल, बाज गैंडा आदि।

नित्य स्त्रीलिंग शब्द

हिंदी में कुछ शब्द नित्य स्त्रीलिंग शब्द होते हैं। जैसे–
मक्खी, तितली, संतान, सवारी, मैना, कोयल, छिपकली, गिलहरी, चील, दीमक इत्यादि।

पदवाची शब्दों का लिंग

पदवाची शब्दों; जैसे- डॉक्टर, सभापति, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मंत्री, मैनेजर आदि शब्दों से पता चलता है। जैसे–

प्रधानमंत्री भाषण दे रहे हैं। (पुल्लिग)
प्रधानमंत्री भाषण दे रही हैं। (स्त्री लिंग)
पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग बनाना

1. कुछ पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'अ' को 'आ' करके

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
छात्र	छात्रा
भवदीय	भवदीया
वृद्ध	वृद्धा
अनुज	अनुजा
सुत	सुता
महोदय	महोदया

2. कुछ पुल्लिंग शब्दों के अंत के 'अ' या 'आ' को 'ई'

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
रस्सा	रस्सी
पहाड़	पहाड़ी

युवा	युवती
मोटा	मोटी
नाना	नानी
दादा	दादी

3. कुछ पुल्लिंग शब्दों के अंत के 'आ' को 'इया' करके –

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बेटा	बिटिया
बूढ़ा	बुढ़िया
बछड़ा	बछिया
चिड़ा	चिड़िया
डिब्बा	डिबिया
मुन्ना	मुनिया

व्यवसाय सूचक तथा जाति सूचक पुल्लिग शब्द के अंतिम स्वर को 'इन तथा आइन करके।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
माली	मालिन
लाला	ललाइन
ग्वाला	ग्वालिन
जुलाहा	जुलाहिन
पंडित	पंडिताइन
सुनार	सुनारिन

5. कुछ पुल्लिग शब्दों के अंत में आए 'अक' के स्थान पर 'इका' करके –

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
चालक	चालिका
शिक्षक	शिक्षिका
लेखक	लेखिका
अध्यापक	अध्यापिका
धावक	धाविका
सेवक	सेविका

6. कुछ पुल्लिग शब्दों के अंत में 'नी' लगाकर –

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सिंह भील ऊँट मोर रीछ ऊँट	सिंहनी भीलनी ऊँटनी मोरनी रीछनी ऊँटनी

7.कुछ पुल्लिंग के अंत में 'आन' के स्थान पर 'अती' करके तथा 'वान' को 'वती' करके –

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
श्रीमान बलवान धनवान बुद्धिमान पुत्रवान रूपवान	श्रीमती बलवती धनवाती बुद्धिमति पुत्रवती रूपवती

8.. कुछ अन्य शब्द जो पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाते समय पूरी तरह बदल जाते हैं

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पिता खरगोश ननदोई बिलाव मर्द पुत्र युवा ससुर	माता मादा खरगोश ननद बिल्ली औरत पुत्री युवती सास

अभ्यास करें

1.**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिये।**

(क) स्त्री लिंग की परिभाषा लिखिये।

(ख) पुल्लिंग की परिभाषा लिखिये।

(ग) लिंग के कितने भेद है? उदाहरण सहित लिखिये।

निम्नलिखित कथन में शुद्ध कथन के सामने ☑ और अशुद्ध कथन के सामने (×)का चिह्न लगाइए

गाड़ी	(पुल्लिग)
रानी	(स्त्रीलिंग)
छिपकली	(पुल्लिंग
घर	(स्त्रीलिंग)
धावक	(स्त्रीलिंग)
पहाड़	(पुल्लिग)

निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदल कर उनके सामने वाले कोष्ठक में लिखिए-

मर्द	(----------)
पंडित	(----------)
पुत्रवती	(----------)
चालक	(----------)
ऊँट	(----------)
रीछनी	(----------)

अध्याय 7
वचन Number

वचन का अर्थ है- संख्या अर्थात वचन से शब्दों की संख्या का पता चलता है।

जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के एक या अनेक होने की जानकारी मिलती है, उसे वचन कहते हैं। जैसे-

संतरा खट्टा है।	संतरे खट्टे हैं।
उसने गेंद खरीदी।	उसने गेंदें खरीदीं।
पत्ता सूख गया	पत्ते सूख गए।

उपर्युक्त वाक्यों में संतरा, गेंद और पत्ता एक की तथा संतरे, गेंदें और पत्ते एक से अधिक (अनेक) की जानकारी दे रहे हैं।

वचन के भेद (Kinds of Number)

हिंदी में वचन दो प्रकार के होते हैं-

1. एकवचन (Singular Number)
2. बहुवचन (Plural Number)

1. **एकवचन (Singular Number)** - शब्द के जिस रूप से केवल एक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे- लड़का, बूढ़ा, चादर, रात, बहन, मेज़, रोटी, छात्र इत्यादि।

2. **बहुवचन (Plural Number)** - शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों, स्थानों या वस्तुओं का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे- लड़के, बूढ़े, चादरें, रातें, बहनें, मेजें, रोटियाँ, छात्रगण इत्यादि।

वचन की पहचान

वचन की पहचान दो आधारों पर होती हैं-

1. संज्ञा अथवा सर्वनाम के आधार पर-

1.चिड़िया उड़ रही है। 2 मैं मेला देखने जाऊँगा। 3.तुम पुस्तक पढ़ रहे हो।	चिड़ियाँ उड़ रही हैं। हम मेला देखने जाएँगे। तुम लोग पुस्तक पढ़ रहे हो ?

इन वाक्यों में 'चिड़िया, मैं तथा तुम', शब्द एकवचन का और 'चिड़ियाँ', 'हम' तथा 'तुम लोग' शब्द बहुवचन का बोध करा रहे हैं। यहाँ वचन की पहचान संज्ञा या सर्वनाम शब्दों द्वारा हो रही है।

2. क्रिया के आधार पर-

1.बालक गीत गा रहा है। 2.शेर पानी पी रहा है। 3.मोर नाचेगा	बालक गीत गा रहे हैं। शेर पानी पी रहे हैं। मोर नाचेंगे।

इन वाक्यों में बालक, शेर तथा मोर शब्दों से इनके एकवचन या बहुवचन होने का पता नहीं चलता क्यों कि दोनों वाक्यों में इसका रूप समान है। इन वाक्यों में वचन की पहचान 'क्रिया' के रूप से होती है। '**गीत गा रहा है**', '**पी रहा है**' और नाचेगा क्रियाएँ एक वचन का तथा **गा रहे है**, **पी रहे है**, तथा **नाचेंगे**, क्रियाएँ बहुवचन का बोध करा रही हैं। अतः वचन की पहचान क्रिया के आधार पर भी की जाती है।
इस प्रकार स्पष्ट है कि वचन की पहचान संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया के रूप से भी होती है।

वचन संबंधी कुछ विशेष बातें

1. प्रायः संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण के रूप परिवर्तित कर उनके बहुवचन रूप बनाए जाते हैं। परंतु कुछ शब्द कारक चिह्न जुड़ने पर अपना रूप बदल लेते हैं। जैसे -

माता साधु तोता नगर	माताएँ - साधुजन तोते नगर	माताओं ने सबको आशीर्वाद दिया। राजा ने साधुओं को प्रणाम किया। तोतों को फल खाना अच्छा लगता है। आजकल नगरों में वृक्षारोपण किया जा रहा है।

2. दल, झुंड, कक्षा, भीड़, सेना आदि समुदायवाचक संज्ञा शब्दों में केवल एकवचन का प्रयोग किया जाता है।
1. अध्यापिका के आते ही सारी कक्षा खड़ी हो गई।
2. सेना युद्ध के लिए चल पड़ी।

3. कुछ संज्ञा शब्द सदा एकवचन में ही प्रयोग किए जाते हैं। जैसे- हवा, सूरज, चाँद, पानी, घी, आग, वर्षा आकाश, चाय, दही, सत्य, झूठ, सोना आदि।

4. कुछ संज्ञा शब्द सदा बहुवचन में ही प्रयोग किए जाते हैं। जैसे- आँसू, प्राण, हस्ताक्षर, बाल, दर्शन, लोग, होश, समाचार आदि।
जैसे -1. आँसू – कहानी सुनते ही मेरे आँसू निकल पड़े।
2. हस्ताक्षर - मैंने प्रार्थना-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

5. **एक के लिए बहुवचन का प्रयोग** -

कुछ अवस्थाओं में एक के लिए भी बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे -

सम्मान के लिए - बड़ों को आदर देने के लिए एकवचन होने पर भी बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। इसे 'आदरार्थ बहुवचन' कहा जाता है।

जैसे - 1. माताजी आराम कर रही हैं।

2. सुभाषचंद्र बोस सच्चे देशभक्त थे।

गर्व के लिए - कभी-कभी अधिकार या गर्व के भाव प्रदर्शित करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन आता है ।

जैसे - 1. अरे ! समझते क्या हो? हम भी किसी से कम नहीं।

2. हमने तुम्हें बार-बार समझाया था, कि मेहनत करो।

सर्वनाम शब्दों में 'तू' एकवचन तथा 'तुम' बहुवचन है। परंतु सभ्यता तथा व्यवहार के कारण कभी- कभी छोटी उम्र वालों को भी 'तू' के स्थान पर 'तुम' कहा जाता है।

जैसे - माँ ने कहा- बेटा, अब तुम आराम कर लो।

एकवचन से बहुवचन बनाना

1. पुल्लिग संज्ञा शब्दों के अंत में 'आ' हो तो बहुवचन में वह 'ए' हो जाता है।

एकवचन	बहुवचन
जाला	जाले
झूला	झूले
चश्मा	चश्मे
बोरी	बोरे
पोता	पोते
मुर्गा	मुरगे
नाला	नाले
शीशा	शीशे
बच्चा	बच्चे
रुपया	रुपए
दरवाज़ा	दरवाज़े
कपड़ा	कपड़े
बस्ता	बस्ते
भेड़िया	भेड़िए
गडरिया	गडरिए
कौआ	कौए
पंखा	पंखे
गमला	गमले

2. स्त्रीलिंग शब्दों के अंत के 'अ' को 'एँ' में बदलकर -

एकवचन	बहुवचन
रात	रातें
याद	यादें
दीवार	दीवारें
किताब	किताबें
बहन	बहनें
सड़क	सड़कें

3. अंत में 'आ' वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर -

एकवचन	बहुवचन
शाखा	शाखाएँ
आत्मा	आत्माएँ
वार्ता	वार्ताएँ
पताका	पताकाएँ
कला	कलाएँ
नृत्यांगना	नृत्यांगनाएँ
बाला	बालाएँ
घटा	घटाएँ
लता	लताएँ

4. अंत में 'उ' या 'ऊ' वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर (यदि अंत में 'ऊ' हो तो वह 'उ' में बदल जाता है।)

एकवचन	बहुवचन
वस्तु	वस्तुएँ
धेनु	धेनुएँ
लू	लुएँ
धातु	धातुएँ
वधू	वधुएँ
जूँ	जुएँ
ऋतु	ऋतुएँ
बहू	बहुएँ

5. अंत में 'इ' वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'याँ' जोड़कर -

एकवचन	बहुवचन
तिथि	तिथियाँ
लिपि	लिपियाँ
विधि	विधियाँ
नीति	नीतियाँ
पंक्ति	पंक्तियाँ
रीति	रीतियाँ
राशि	राशियाँ
प्रति	प्रतियाँ
जाति	जातियाँ

6. अंत में 'ई' वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'याँ' जोड़कर (ऐसा करने पर अंत की 'ई' 'इ' में बदलती है।

एकवचन	बहुवचन
सखी	सखियाँ
पहेली	पहेलियाँ
स्त्री	स्त्रियाँ
राखी	राखियाँ
टोली	टोलियाँ
दवाई	दवाइयाँ
बाली	बालियाँ
बत्ती	बत्तियाँ
मिठाई	मिठाइयाँ
अँगूठी	अँगूठियाँ
घड़ी	घड़ियाँ
डाली	डालियाँ
पुत्री	पुत्रियाँ
मकड़ी	मकड़ियाँ
लीची	लीचियाँ
चोटी	चोटियाँ
लकड़ी	लकड़ियाँ
चाबी	चाबियाँ

अंत में आए 'इया' वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में (ँ) अनुनासिक लगाकर -

एकवचन	बहुवचन
चिड़िया	चिड़ियाँ
चुहिया	चुहियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ
कुटिया	कुटियाँ
डिबिया	डिबियाँ
बिटिया	बिटियाँ
लुटिया	लुटियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ
पुड़िया	पुड़ियाँ

अभ्यास कार्य

1. **निम्नलिखित शब्दों के बचन बदलिए-**

- महिला
- कली
- डिबिया
- शाखा
- छात्र
- कला
- टोपी
- अध्यापिका
- बहू
- थाली
- लताएँ
- थालियाँ
- राशि
- दरवाज़ा

2.**नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न लगाओ।**

वचन का अर्थ है

क. वायदा　　ख. संख्या

ग. वर्ण　　घ. इनमें से कोई नहीं

2. एकवचन और बहुवचन भेद है-

क संज्ञा के ख लिंग के
ग. वचन घ विशेषण के

3.बड़ों को आदर देने के लिए प्रयोग करते हैं-
क एकवचन ख बहुवचन
ग संज्ञा घ इनमें से कोई नहीं

4. इनमें से किस शब्द का बहुवचन नहीं बनाया जा सकता?
क सड़क ख लालकिला
ग लड़का घ साधु

5. इनमें से किस शब्द का बहुवचन नहीं बनाया जा सकता?
क आकाश ख कपड़ा
ग कौआ घ शीशा

6. इनमें से किन शब्दों का प्रयोग सदैव एकवचन में होता है?
क बस्ता, याद ख हवा, सूरज
ग डाली, पेड़ घ आत्मा, शाखा

3.उपयुक्त विकल्प को रिक्त स्थान पर भरे।

1.मेरे विद्यालय में दो नई-----आई (अध्यापिका, अध्यापिकाएँ)
2. —-------मैदान में खेल रहा है। (लड़का ,लड़के)
3. चोर को देखकर---------भौकने लगा (कुत्ता ,कुत्ते)
4. लतिका----------पानी दे रही है (पौधे,पौधों)
5. दादा जी बाजार से —-------लाए हैं (केले ,केला)

4.वचन किसे कहते हैं?

5.वचन के कितने भेद है?

अध्याय–8

कारक Case

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।

कारक को प्रकट करने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें कारक की विभक्तियाँ या परसर्ग कहते हैं।'

पर' का अर्थ है–बाद।

कारक चिन्ह संज्ञा या सर्वनाम के बाद लगते हैं।

जैसे –

1. बालक ने खाना खाया।
2. शिक्षक बालकों को पढ़ा रहे हैं।
3. मजदूर हथौड़े से पत्थर तोड़ रहा है।
4. पिताजी बच्चों के लिए खिलौने लाए।
5. माली ने पेड़ से फल तोड़े।
6. बंदर डाल पर बैठा है।

इन वाक्यों में आए **ने, को, से, के लिए** तथा **पर** परसर्ग संज्ञा तथा क्रिया के संबंध को प्रकट कर रहे हैं। यदि हम वाक्यों से इन कारक चिन्हों को हटाकर पढ़ें तो हमें वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा तथा क्रिया शब्दों का आपस में संबंध समझ में नहीं आएगा और वाक्यों का अर्थ स्पष्ट नहीं होगा।

अतः वाक्यों का अर्थ समझने के लिए इन कारक चिन्हों का प्रयोग आवश्यक है।

क्रम	कारक	विभक्ति चिन्ह (परसर्ग)	लक्षण
1	कर्ता कारक	ने (कभी–कभी कोई चिह्न नहीं)	क्रिया करने वाला
2	कर्म कारक	को (कभी–कभी कोई चिह्न नहीं)	जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़े जिस
3	करण कारक	से (के द्वारा)	साधन से क्रिया की जाए
4	संप्रदान कारक	को, के लिए	जिसके लिए क्रिया हो
5	अपादान कारक	से (पृथकता का भाव)	जहाँ पृथक होने का भाव हो

6	संबंध कारक	का, की, के/रा, री, रे	जिससे संज्ञा का अन्य पदों से संबंध ज्ञात हो।
7	अधिकरण कारक	में, पर	क्रिया होने का आधार या स्थान
8	संबोधन कारक	हे!, अरे !	जिससे संबोधित किया जाए

ऊपर लिखे आठों कारकों में से केवल छह कारक ही वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम का संबंध उस वाक्य की क्रिया से बताते हैं। संबंध कारक तथा संबोधन कारक यह संबंध नहीं बताते। संबंध कारक वाक्य में प्रयुक्त दो संज्ञाओं का संबंध बताता है। **जैसे**–

1. **ये मधुर के खिलौने हैं।**
2. **वह मीरा का घर है।**

इन वाक्यों में संज्ञा का क्रिया से संबंध ज्ञात नहीं होता बल्कि पहले वाक्य में आया 'के' परसर्ग 'मधुर' का 'खिलौनों' से (अर्थात दोनों संज्ञा शब्द) तथा दूसरे वाक्य में आया 'का' परसर्ग 'मीरा' का 'घर' से (अर्थात दोनों संज्ञा शब्द) संबंध बताता है।
इसी प्रकार संबोधन कारक भी संज्ञा का क्रिया से संबंध नहीं बताता। संबोधन कारक केवल संज्ञा को पुकारने के लिए होता है, उसका वाक्य के अन्य शब्दों से कोई संबंध नहीं होता। जैसे –

1. **हे साधु ! यहाँ बैठो।**
2. **अरे मनोहर ! जरा वात सुन।**

यहाँ **'साधु** !' तथा ' **मनोहर**।' में संबोधन कारक है किंतु वह क्रिया से संज्ञा का संबंध स्पष्ट नहीं करता। यहाँ प्रयुक्त **'हे!**' तथा '**अरे** !' परसर्ग का प्रयोग संज्ञा को पुकारने के लिए हो रहा हैं।

1. कर्ता कारक– 'कर्ता' का अर्थ है– काम करने वाला। वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द के द्वारा क्रिया के करने वाले का पता चलता है, वह कर्ता कारक कहलाता है।

जैसे– **अशोक ने पत्र पढ़ा।**
नीलिमा चॉकलेट खा रही है।

ऊपर के पहले वाक्य में पत्र पढ़ने का काम अशोक ने किया, अतः **अशोक** कर्ता कारक है। कर्ता कारक की विभक्ति **ने** है। दूसरे वाक्य में चॉकलेट खाने का काम नीलिमा कर रही है, अतः यहाँ पर **नीलिमा** कर्ता कारक है। परंतु यहाँ कर्ता कारक की 'विभक्ति' ने प्रयोग नहीं हुआ हैं।

2. कर्म कारक . संज्ञा या सर्वनाम द्वारा की गई क्रिया का फल या प्रभाव जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं

जैसे – 1. माँ ने बालक को सुलाया।
2. गुरु जी ने छात्रों को पढ़ाया।

यहाँ सुलाने की क्रिया का फल बालक पर पड़ रहा है तथा पढ़ाने की क्रिया का फल छात्रों पर पड़ रहा है। अतः 'बालक को' तथा 'छात्रों को' में कर्म कारक है।
कभी–कभी कर्म कारक में 'को' परसर्ग नहीं होता।

जैसे – 1. डाकिए ने पत्र बाँटे।
2. हलवाई ने मिठाई बनाई।

इन वाक्यों में 'को' परसर्ग नहीं है। परंतु यहाँ 'पत्र' तथा 'मिठाई' दोनों में कर्म कारक है।
कभी–कभी वाक्य में दो कर्म भी होते हैं।

जैसे– मालिन ने फूलों को गूँथकर माला बनाई। अतः यहाँ 'फूलों' तथा 'माला' दोनों में कर्म कारक है।

3. करण कारक . जिसकी सहायता से कोई कार्य हो वह संज्ञा या सर्वनाम शब्द,**करण कारक** कहलाता है।

जैसे– अध्यापक ने चॉक से लिखा।
माँ ने साबुन से कपड़ा साफ किया।

इन वाक्यों में लिखने का साधन चॉक और साफ करने का साधन साबुन है। अतः चॉक से और साबुन से करण कारक है करण कारक की विभक्ति से, के द्वारा है।

4. संप्रदान कारक – 'संप्रदान' का शाब्दिक अर्थ है–देना जिसके लिए कोई कार्य किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, वह संज्ञा या सर्वनाम पद **संप्रदान कारक** होता है।

जैसे – मधुर दादाजी के लिए फल लाया।
माँ ने गाय को चारा दिया।

अतःयहाँ 'दादाजी' तथा 'गाय' के लिए काम किया जा रहा है। दादाजी के लिए फल लाने का तथा गाय को चारा देने का काम किया जा रहा है। अतः **'दादाजी के लिए'** तथा **'गाय को'** में संप्रदान कारक है।

5. अपादान कारक – जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द से अलग होने या पृथकता का भाव प्रकट हो, उसे अपादानकारक कहते हैं।

जैसे– रामू घर से निकला।
अलमारी से सामान गिरा।

इन वाक्यों में **घर से** और **अलमारी से** अपादान कारक हैं। आपादान कारक की विभक्ति से है जिससे अलगाव का बोध होता है।

कुछ अन्य उदाहरण –

पेड़ से पत्ता गिरा।

दीपक **नीरज से** भला है।

नदी **पर्वत से** निकलती है।

अहंकार से बचना चाहिए।

6. संबंध कारक–

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे वाक्य में आए अन्य शब्द से उसका संबंध ज्ञात हो, उसे संबंध कारक कहते है

जैसे– यह घर सुनील का है।

राज्य के शिक्षा मंत्री पधारे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'सुनील का' घर से तथा 'राज्य के' का शिक्षा मंत्री से संबंध का बोध होता है, अतः सुनील का और राज्य के संबंध कारक हैं। संबंध कारक की विभक्ति का, के, की, रा, रे, री है।

7. अधिकरण कारक – संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार या उसके होने के स्थान का या समय का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

जैसे – बच्चे कक्षा में बैठे हैं।

घड़े पर कौआ आ बैठा।

यहाँ कक्षा में' तथा 'घड़े पर' से क्रिया संपन्न होने के स्थान का बोध हो रहा है, अतः इनमें अधिकरण कारक है। अधिकरण कारक का परसर्ग 'में' तथा 'पर' है।

8. संबोधन कारक –

शब्द के जिस रूप से किसी को बुलाने या पुकारने का भाव प्रकट हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं। 'संबोधन' का अर्थ' है– पुकारना।

जैसे – 1. अरे अंकित ! इधर आओ।

2. हे ईश्वर । सबकी रक्षा करो। यहाँ अरे अंकित! तथा हे ईश्वर! में संबोधन कारक है संबोधन कारक का परसर्ग 'अरे '! तथा 'हे'! है।

कारक के अनुसार शब्द की रूप–रचना

शब्दों के रूप लिंग और वचन के अनुसार विभिन्न कारकों में बदल जाते हैं। कारक की रूप–रचना के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं–

आकारांत पुल्लिग शब्द 'मनुष्य'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मनुष्य, मनुष्य ने	मनुष्य, मनुष्यों ने
कर्म	मनुष्य को	मनुष्यों को
करण	मनुष्य से	मनुष्यों से
संप्रदान	मनुष्य को, मनुष्य के लिए	मनुष्यों को, मनुष्यों के लिए
अपादान	मनुष्य से	मनुष्यों से
संबंध	मनुष्य का, मनुष्य के, मनुष्य की	मनुष्यों का, मनुष्यों के,मनुष्यों की
अधिकरण	मनुष्य में, मनुष्य पर	मनुष्यों में, मनुष्यों पर
संबोधन	हे मनुष्य !	हे मनुष्यो !

आकारांत पुल्लिग शब्द लड़का'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	लड़का, लड़के ने	लड़के, लड़कों ने
कर्म	लड़के को	लड़कों को
करण	लड़के से	लड़कों से
संप्रदान	लड़के को, लड़ के के लिए	लड़कों को, लड़कों के लिए
अपादान	लड़के से	लड़कों से
संबंध	लड़के का, लड़के की, लड़के के	लड़कों का, लड़कों की लड़कों के
अधिकरण	लड़के में, लड़के पर	लड़कों में, लड़कों पर
संबोधन	हे लड़के !	हे लड़को !

घोड़ा, राजा, बच्चा बालक आदि शब्दों के रूप इसी प्रकार से होंगें।

इकारांत पुल्लिंग शब्द 'कवि'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कवि, कवि ने	कवि, कवियों ने
कर्म	कवि	कवियों को
करण	कवि से	कवियों से
संप्रदान	कवि को, कवि के लिए	कवियों को, कवियों के लिए
अपादान	कवि से	कवियों से
संबंध	कवि का, कवि की, कवि के	कवियों का, कवियों की, कवियों
अधिकरण	कवि में, कवि पर	के
संबोधन	हे कवि !	कवियों में, कवियों पर
		हे कवियो !

मुनि, रवि, पति, ऋषि इकारांत पुल्लिंग शब्दों के रूप भी इसी प्रकार बनेंगे।

ईकारांत पुल्लिंग शब्द 'माली'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	माली, माली ने	माली, मालियों ने
कर्म	माली को	मालियों को
करण	माली से, के द्वारा	मालियों से, के द्वारा
संप्रदान	माली को, के लिए	मालियों को, के लिए
अपादान	माली से (पृथक)	मालियों से (पृथक)
संबंध	माली का, के, की	मालियों का, के, की
अधिकरण	माली में, पर	मालियों में, पर
संबोधन	हे माली !	हे मालियो !

मोती, मोची, भाई इत्यादि ईकारांत पुल्लिंग शब्दों के रूप भी इसी प्रकार बनेंगे

उकारांत पुल्लिंग शब्द 'साधु'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	साधु, साधु ने	साधु, साधुओं ने
कर्म	साधु को	साधुओं को
करण	साधु से	साधुओं से
संप्रदान	साधु को, साधु के लिए	साधुओं को, साधुओं के लिए
अपादान	साधु से	साधुओं से
संबंध	साधु का, साधु के, साधु की	साधुओं का, साधुओं के, साधुओं की
अधिकरण	साधु में, साधु पर	साधुओं से, साधुओं पर
संबोधन	हे साधु !	हे साधुओ!

इसी प्रकार गुरु, भानु, शत्रु आदि उकारांत पुल्लिग शब्दों के रूप होंगे।

ऊकारांत पुल्लिग शब्द 'डाकू'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	डाकू, डाकू ने	डाकुओं से, डाकुओं ने
कर्म	डाकू को	डाकुओं को
करण	डाकू से	डाकू से
संप्रदान	डाकू को, डाकू के लिए	डाकुओं को, डाकुओं के लिए
अपादान	डाकू से	डाकुओं से
संबंध	डाकू का, डाकू के, डाकू की	डाकुओं का, डाकुओं के, डाकुओं की
अधिकरण	डाकू में, डाकू पर	डाकुओं में, डाकुओं पर
संबोधन	हे डाकू !	हे डाकुओ!

इसी प्रकार बाबू, लड़ाकू आदि ऊकारांत पुल्लिग शब्दों के रूप होंगे।

अकारांत स्त्रीलिंग शब्द 'बहन'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	बहन, बहन ने	बहनें, बहनों ने
कर्म	बहन को	बहनों को
करण	बहन से	बहनों से
संप्रदान	बहन को, बहन के लिए	बहनों को, बहनों के लिए
अपादान	बहन से	बहनों से
संबंध	बहन का, बहन की, बहन के	बहनों का, बहनों की, बहनों के
अधिकरण	बहन में, बहन पर	बहनों में, बहनों पर हे
संबोधन	हे बहन !	हे बहनो !

माता, महिला, बाला, बालिका आकारांत इत्यादि स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी प्रकार बनेंगे।

आकारांत स्त्रीलिंग शब्द 'बालिका '

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	बालिका, बालिका ने	बालिकाएँ,बालिकाओं ने
कर्म	बालिका को	बालिकाओं को
करण	बालिका से	बालिकाओं से
संप्रदान	बालिका को, बालिका के लिए	बालिकाओं के,बालिकाओं के लिए
अपादान	बालिका से	बालिकाओं से
संबंध	बालिका का, बालिका की बालिका के	बालिकाओं का बालिकाओं की, बालिकाओं के
अधिकरण	बालिका में, बालिका पर	बालिकाओं में, बालिकाओं पर
संबोधन	हे बालिका !	हे बालिकाओ !

इकारांत स्त्रीलिलिंग शब्द 'मति'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मति , मति ने	मति , मतियों ने
कर्म	मति को	मतियों को
करण	मति से, के द्वारा	मतियों से, के द्वारा
संप्रदान	मति को, के लिए	मतियों को, के लिए
अपादान	मति से (पृथक)	मतियों से (पृथक)
संबंध	मति का, के, की	मतियों का, के, की
अधिकरण	मति में, पर	मतियों में, पर
संबोधन	हे मति !	हे मतियो !

बुद्धि, गति, निधि इत्यादि इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी प्रकार बनेंगे।

ईकारांत स्त्रीलिंग शब्द 'सखी '

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	सखी, सखी ने	सखियाँ, सखियों ने
कर्म	सखी को	सखियों को
करण	सखी से	सखियों से
संप्रदान	सखी को, सखी के लिए	सखियों को, सखियों के लिए
अपादान	सखी से	सखियों से
संबंध	सखी का, सखी के, सखी की	सखियों का, सखियों के, सखियों की
अधिकरण	सखी में, सखी पर	सखियों में सखियों पर
संबोधन	हे सखी !	हे सखियो !

ऊकारांत स्त्रीलिलिंग शब्द 'वधू'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	वधू, वधू ने	वधुएँ, वधुओं ने
कर्म	वधू को	वधुओं को
करण	वधू से	वधुओं से
संप्रदान	वधू को, वधू के लिए	वधुओं को, वधुओं के लिए
अपादान	वधू से	वधुओं से
संबंध	वधू का, वधू के वधू की	वधुओं का, वधुओं के, वधुओं की
अधिकरण	वधू में, वधू पर	वधुओं में, वधुओं पर
संबोधन	हे वधू!	हे वधुओ!

इसी प्रकार बहू चारू आदि ऊकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के रूप होंगे।

औकारांत स्त्रीलिंग शब्द 'गौ'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	गौ, गौ ने	गौएँ, गौओं ने
कर्म	गौ को	गौओं को
करण	गौ से	गौओं से
संप्रदान	गौ को, गौ के लिए	गौओं को, गौओं के लिए
अपादान	गौ से	गौओं से
संबंध	गौ का, गौ के, गौ की	गौओं का, गौओं के, गौआ की
अधिकरण	गौ में, गौ पर	गौओं में, गौओं पर
संबोधन	हे गौ!	हे गौओ!

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिन्ह लगाओं।

1. संज्ञा या सर्वनाम को क्रिया से जोड़ने वाले चिन्ह कहलाते हैं–

(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम
(ग) क्रिया (घ) कारक

2. कारक के भेद हैं–

(ख) पाँच (ग) सात
(घ) आठ (क) चार

3. क्रिया के होने का स्थान बताता है–

(ख) कर्म कारक (ग) अधिकरण कारक
(घ) संबध कारक (क) करण कारक

4. दो संज्ञाओं का आपस में संबंध बताता है–

(ख) कर्ता कारक (ग) करण कारक
(घ) संबध कारक (क) कर्म कारक

5. जिस साधन की सहायता से क्रिया की जाए, वह है–

(क) कर्म कारक (ख) करण कारक
(ग) कर्ता कारक (घ) संबोधन

6. क्रिया को करने वाले का बोध कराता है–

(क) कर्ता कारक (ख) कर्म कारक
(ग) संबंध कारक (घ) करण कारक

2. कारक संबंधी अशुद्धियाँ दूर कर वाक्य दोबारा लिखे।

1. आसमान पर पतंगें उड़ रही हैं।
2. मेरी बहन के नाम श्रुति है।
3. पेड़ में पत्ता गिर गया।
4. सच्चाई का सदा जीत होती है।
5. पिताजी दीदी का फ्रॉक लाए।

3 निम्नलिखित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. कारक किसे कहते हैं?
2. कारक के कितने भेद है?
3. कर्ता कारक किसे कहते हैं? इसका विभक्ति चिन्ह क्या है?
4. संबंधकारक किसे कहते हैं? इसके विभक्ति चिन्ह लिखिए।
5. संप्रदान और अपादान कारक को उदाहरण देकर समझाइए।

अध्याय 9
सर्वनाम Pronoun

सर्वनाम अर्थात सबका नाम। जो शब्द सब नामों के स्थान पर प्रयुक्त हो सकते हैं वही सर्वनाम कहलाते हैं।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए-

परी नाश्ता कर रही है। परी प्रतिदिन स्कूल जाती है। कक्षा में मीता परी के साथ बैठती है।परी अपना काम जल्दी कर लेती है। रात को परी दस बजे सो जाती है। परी की माताजी परी को 6 बजे उठाती है।

ऊपर लिखित वाक्यों में परी का नाम बार-बार आया है। प्रत्येक वाक्य में बार-बार वही नाम लिखना या बोलना असुविधाजनक एवं अटपटा लगता है। इसलिए इस गद्यांश को इस प्रकार लिखना चाहिए -

परी नाश्ता कर रही है। वह प्रतिदिन स्कूल जाती है। कक्षा में मीता उसके साथ बैठती है। वह अपना काम जल्दी कर लेती है। रात को वह दस बजे सो जाती हैं। उसकी माता जी उसे 6 बजे उठाती हैं।

परी संज्ञा शब्द है। उसके नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है वे सर्वनाम कहलाते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि -

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले पद सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे - वह, मै, तुम, उस उसके, उसकी, उसे आदि।

सर्वनाम के छः भेद हैं-

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)
2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)
4. संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)
6. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)

1. पुरुषवाचक सर्वनाम - वे सर्वनाम शब्द जो बोलने वाले, सुनने वाले तथा अन्य व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होते उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं

(क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष

(ग) अन्य पुरुष

(क) उत्तम पुरुष- बोलने वाला अपने नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें उत्तम पुरुष कहते हैं।

जैसे-1. मैं कविताएँ लिखता हूँ।
2. हम देश को जगा रहे हैं।

'मैं' और 'हम' का प्रयोग बोलने वालों ने अपने लिए किया है। ये दोनों शब्द उत्तम पुरुष शब्द हैं।

(ख) मध्यम पुरुष - बोलने वाला जिससे बात कहता है वह अर्थात सुनने वाले के नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, उन्हें मध्यम पुरुष कहते हैं।

जैसे-1. सत्यम ने विपुल से कहा- "तुम मेरे सबसे अच्छे दोस्त हो।"

2. भारती ने अंजना से कहा- "तुम रंजना की बहन हो, लेकिन मेरी सहेली भी हो।"
उक्त दोनों वाक्यों में विपुल और अंजना सुनने वाले हैं। उनके लिए 'तुम' का प्रयोग हुआ है। तुम मध्यम पुरुष शब्द है।

(ग) अन्य पुरुष - जब बोलने वाला सुनने वाले के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति के लिए सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है तो वे सर्वनाम शब्द अन्य पुरुष कहलाते हैं।

जैसे-1. वह लड़का ईमानदार है।
2. वे मैदान में खेल रहे हैं।
उपर्युक्त दोनों वाक्यों में 'वह' तथा 'वे' शब्द अन्य पुरुष हैं।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम -वे सर्वनाम जो किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चित बोध कराते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं । उदाहरण
यह मेरी घड़ी है।
वे राधा के खिलौने हैं।
यह, वे आदि निश्चित सर्वनाम हैं।

निश्चयवाचक सर्वनाम किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करता है, इसलिए इसे संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं;
उदाहरण चाय में कुछ पड़ा है।
वहाँ कोई खड़ा है।

कोई, कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

इस सर्वनाम में कुछ का प्रयोग किसी वस्तु के लिए तथा कोई का प्रयोग किसी व्यक्ति के लिए किया जाता है।

प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम शब्द से किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु या क्रिया-व्यापार आदि के विषय में प्रश्न का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। प्रश्न किसी व्यक्ति या प्राणी के संबंध में 'कौन' या 'किसे' का प्रयोग किया जाता है, अन्यथा 'क्या' का प्रयोग होता है।

उदाहरण -

1. बाहर कौन खड़ा है?
2. आप किसे बुला रहे हैं?
3. कल क्या टूटा था?
4. क्या हो रहा है?

यहाँ आए 'कौन', 'किसे' तथा 'क्या' प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं। 'कौन' तथा 'किसे' व्यक्ति के विषय में, 'क्या' वस्तु के तथा क्रिया के विषय में प्रश्न का बोध करा रहे हैं।

5. संबंधवाचक सर्वनाम- जो सर्वनाम प्रधान वाक्य से आश्रित वाक्य का संबंध जोड़ता है, संबंधवाचक सर्वनाम कहलाता है । जैसे-

जो पढ़ेगा, सो सफल होगा।
जिसे देखो, वही व्यस्त नजर आता है।
जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
जो-सो, जिसे-वहीं, जो-वह, जैसा-वैसा आदि संबंधवाचक सर्वनाम है।

6. **निजवाचक सर्वनाम** - जिन सर्वनामों से निजत्व का बोध होता है,वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं;
जैसे- मैं अपना काम अपने आप करता हूँ।
अपना काम स्वयं करना चाहिए।
अपने आप, स्वयं, खुद, आप ही आप आदि निजवाचक सर्वनाम हैं।

अभ्यास कार्य

उपयुक्त विकल्प पर सही (√) का निशान लगाइए-

(क) मैं, मेरा, हम कौन-से सर्वनाम हैं?

1. मध्यम पुरुष
2. उत्तम पुरुष
3. अन्य पुरुष

(ख) अन्य का बोध करानेवाले सर्वनाम क्या कहलाते हैं?

1. मध्यम पुरुष
2. उत्तम पुरुष
3. अन्य पुरुष

(ग) व्यक्ति द्वारा स्वयं के लिए प्रयुक्त सर्वनाम क्या कहलाता है?

1. निश्चय वाचक
2. निजवाचक
3. सम्बध वाचक

(घ) प्रधान वाक्य आश्रित वाक्य का संबंध दर्शानेवाले सर्वनाम क्या कहलाते हैं?

1. पुरूष वाचक सर्वनाम
2. सम्बध वाचक सर्वनाम
3. निश्चय वाचक सर्वनाम

(ड) पुरुषवाचक सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं?

1. तीन
2. दो
3. चार

(च) सर्वनाम वे शब्द हैं जिनका प्रयोग-

1. संज्ञा के स्थान पर होता है।
2. क्रिया के स्थान पर होता है।।
3. विशेषण के स्थान पर होता है।

2.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिये

1.सर्वनाम' शब्द से क्या अभिप्राय है?

2. सर्वनाम शब्द का प्रयोग कब किया जाता है? उदाहरण स्पष्ट करें।

3. सर्वनाम शब्द के भेदों के तीन-तीन उदाहरण दीजिए।

3. कोष्ठक में दिए गए सर्वनाम शब्दों के उचित रूप से रिक्त स्थानों की पूर्ती कीजिए।

(क) यह कार्य_____नहीं हो सकेगा। (मैं)

(ख) अध्यापक जी ने_____ बुलाया है। (तुम)

(ग) जो लड़का वहाँ खड़ा है, मैं_____नहीं जानता।(वह)

(घ) लगता है_____मेरी बात अच्छी नहीं लगती। (यह)

(ङ) इस प्रश्न का उत्तर कक्षा में_____भी नहीं आता (कोई)

अध्याय -10
विशेषण Adjective

आज दीवाली है। यह शुभ उत्सव कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। कहते हैं। इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अहंकारी रावण का वध कर अयोध्या लौट आए थे। इस अवसर पर वीर हनुमान, लक्ष्मण, युवराज अंगद आदि उनके साथ आए थे। उनके आगमन पर अयोध्यावासियों ने घी के दीये जलाए थे। वही परंपरा आज भी है। दीपकों के प्रकाश से छोटी झोंपड़ियों से लेकर भव्य भवन तक सब जगमगा उठते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में-

शुभ, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहंकारी, वीर, युवराज, छोटी, भव्य आदि शब्द उत्सव, श्रीराम, हनुमान, अंगद, झोंपड़ी तथा भवन आदि संज्ञा शब्दों की विशेषता बता रहे हैं। ये विशेषण हैं।

जो शब्द किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जिनकी विशेषता बताई जाती है, वे विशेष्य कहलाते हैं।

हिंदी में विशेषणों के निम्न भेद हैं-

(क) गुणवाचक विशेषण (Qualitative Adjective)

(ख) संख्यावाचक विशेषण (Numeral Adjective)

(ग) परिमाणवाचक विशेषण (Quantitative Adjective)

(घ) सार्वनामिक विशेषण (Demonstrative Adjective)

1. **गुणवाचक विशेषण**- जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण-दोष का बोध कराते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

गुण का बोध कई प्रकार से संभव है-

(क) गुण –दयालु, कठोर, परिश्रमी, भला आदि।

(ख) दोष –दुष्ट, पापी, झूठा, कामचोर, कायर आदि।

(ग) रंग -काला, गोरा, साँवला, हरा, पीला आदि।

(डी) आकार -मोटा, पतला, लंबा, गोल आदि।

(ङ) स्वाद -कड़वा, खट्टा, चटपटा, मीठा, कसैला आदि।

(च) काल -नया, पुराना, साप्ताहिक, दैनिक, मासिक आदि।

(छ) स्पर्श करें -कठोर, कोमल, चिकना, खुरदरा आदि।

(ज) स्थान- ग्रामीण, शहरी, भारतीय, नगरीय आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण

1. जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या के बारे में बताएँ, संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

निश्चित संख्यावाचक- (एक बच्चा, पाँचवीं कक्षा, पहला स्थान)
अनिश्चित संख्यावाचक - (कुछ, बहुत, थोड़े, कम, सब)

(क) निश्चित संख्या वाचक

मेरे भाई ने दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मेरे बगीचे में आम के पाँच वृक्ष हैं।

इन वाक्यों में आए प्रथम तथा पाँच शब्द क्रमशः स्थान व वृक्षों की संख्या का निश्चित ज्ञान कराने के कारण निश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक वाचक

मेरे विद्यालय के उत्सव में बहुत से लोग आए। कुछ बच्चे मैदान में खेल रहे हैं। यहाँ 'बहुत से' व 'कुछ' शब्द क्रमशः 'लोग' व 'बच्चों' की संख्या की ओर संकेत तो कर रहे हैं, परंतु निश्चित संख्या न बता पाने के कारण ये अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण है।

3.परिमाण वाचक विशेषण- जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की माप-तौल (परिमाण) संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं
जैसे-

1. मेज दो मीटर लंबी है।
2. दूधवाला एक लीटर दूध लाया।
3. बगीचे में थोड़ा पानी जमा है।
4. हलवाई ने कुछ मिठाइयाँ बनाईं।

यहाँ आए 'दो मीटर', 'एक लीटर', 'थोड़ा' तथा 'कुछ' शब्द क्रमशः मेज़, दूध, पानी और मिठाइयों की मात्रा तथा माप संबंधी विशेषता बता रहे हैं। ये परिमाणवाचक विशेषण हैं। 'परिमाण' का अर्थ है- माप-तौल।
ऊपर आए परिमाणवाचक विशेषण शब्द कुछ तो निश्चित माप-तौल बता रहे हैं तथा कुछ नहीं। इसी आधार पर परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद होते है।

(i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

i) **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण** - जो परिमाणवाचक विशेषण शब्द निश्चित मात्रा बताएँ, उन्हें निश्चित परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं ये विशेषण शब्द मात्रा का सही बोध कराते हैं।

जैसे –

1. एक लीटर दूध।
2. एक किलो चीनी।
3. दस मीटर कपड़ा।
4. पाँच लीटर तेल।

यहाँ सभी वस्तुओं की मात्रा तथा माप निश्चित है, अतः 'दूध', 'चीनी', 'कपड़ा' तथा 'तेल' संज्ञा शब्दों में निश्चित परिमाणवाचक विशेषण लगा है।

2.अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण - जो परिमाणवाचक विशेषण शब्द विशेष्य की निश्चित मात्रा नहीं बताते, उन्हें अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे -

1. जग में ढेर सारा शरबत है।
2. डिब्बे में बहुत तेल पड़ा है।
3. मैंने थान में से थोड़ा कपड़ा लिया।
4. गिलास में थोड़ा पानी है।

यहाँ शरबत, तेल, कपड़ा तथा पानी के साथ 'ढेर सारा', 'बहुत' तथा 'थोड़ा' विशेषण शब्द आए हैं। ये विशेषण शब्द विशेष्य की निश्चित मात्रा नहीं बताते, अतः ये अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं। बहुत, अधिक, ज़रा, तनिक, इतना, उतना, थोड़ा, ज्यादा आदि भी इसी प्रकार के विशेषण शब्द है।

<u>संख्यावाचक व परिमाणवाचक विशेषण में अंतर</u>

जो वस्तुएँ गिनी जा सकती हैं, उनके लिए संख्यावाचक विशेषणों का प्रयोग किया जाता है, पर जिन वस्तु को मापा-तोला जाता है, उनके लिए परिमाणवाचक विशेषण का प्रयोग किया जाता है।
संख्यावाचक विशेषण

- विद्यालय के पुस्तकालय में पाँच सौ पुस्तकें हैं।
- बाजार से एक दर्जन केले ले आओ।

परिमाणवाचक विशेषण

- पहलवान प्रतिदिन दो लीटर दूध पीता है।
- भिखारी को थोड़ा आटा दे दो।

इनकी मात्रा माप-तौल से ही जानी जा सकती है। अतः विशेषण शब्द जब ऐसे संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आएँ जिनकी मात्रा माप-तौल द्वारा जानी जाए, तो उन विशेषण शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

4. सार्वनामिक विशेषण - जो सर्वनाम शब्द विशेषण की तरह संज्ञा की विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि सर्वनाम आमतौर पर संज्ञा की जगह प्रयोग किए जाते हैं। किंतु यहाँ संज्ञा भी होती है तथा उसी के लिए प्रयोग किया जाने वाला सर्वनाम भी होता है।

जैसे -

1. वह घर बड़ा है।
2. यह फूल सुंदर है।
3. यह पेंसिल मेरी है।
4. वह साइकिल हमारी है।

इन वाक्यों में आए 'वह' तथा 'यह' शब्द सार्वनामिक विशेषण हैं क्योंकि ये क्रमशः घर, फूल, पेंसिल तथा साइकिल की विशेषता बता रहे हैं। इन्हें संकेतवाचक विशेषण भी कहते हैं।

वे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताएँ, सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

विशेषणों की तुलनावस्था

विशेषणों का प्रयोग तीन अवस्थाओं में होता है-

1. मूलावस्था
2. उत्तरावस्था
3. उत्तम अवस्था

1. **मूलावस्था**- इस अवस्था में किसी से तुलना नहीं होती है, केवल सामान्य रूप से किसी की विशेषता बताई जाती है। **जैसे**-

- त्रिलोक होशियार है।
- भावना सुंदर है।

2. **उत्तरावस्था**- इस अवस्था में दो वस्तुओं, व्यक्तियों या स्थानों की तुलना करके उनमें से किसी एक को अच्छा या बुरा, अधिक या कम बताया जाता है। **जैसे**-

- दयाल गोपाल से अधिक होशियार है।
- भावना कविता से अधिक सुंदर है

3. उत्तमावस्था - इस अवस्था में दो या दो से अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों या स्थानों की तुलना करके उनमें से किसी एक को सबसे अच्छा या बुरा बताया जाता है। **जैसे**-

- संतोष बच्चों में सबसे होशियार है।
- अंजलि सभी लड़कियों में सुंदरतम है।

उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था को दर्शाने के लिए तत्सम शब्दों में क्रमशः 'तर' तथा 'तम' प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

अभ्यास कार्य

प्र1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) विशेषण किसे कहते हैं?

(ख) विशेषण कितने प्रकार के होते है नाम लिखिये।

(ग) तुलना की दृष्टि से विशेषण की कितनी अवस्थाएँ होती हैं।

प्र2. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर भेद का नाम भी लिखिए-

विशेषण	विशेषण	भेद
(क) हरी घास मेरा मन मोह लेती है।		
(ख) वह बालक सचमुच बहादुर है।		
(ग) मैंने थोड़े से चावल खाए।		
(घ) मेरे पास केवल सौ रुपये हैं।		
(ड) वे लोग यहाँ से अभी-अभी गये हैं।		

3. **उचित विशेषण शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो।**

1. यह आम बहुत----------है।

(क) स्वाद

(ख) स्वादिष्ट

(ग) स्वादपूर्ण

2. एक से एक —-------खिलाड़ी आए हुए हैं।

(क) उत्साही

(ख) उत्साह

(ग) उत्साहपूर्वक

3. उसका शरीर बहुत —----- है

(क) शक्ति

(ख) शक्तिशाली

(ग) जबरदस्ती

4. —--------लोग अपनी परंपरागत वेश-भूषा में थे।

(क) स्थान

(ख) जगह वाले

(ग) स्थानीय

5. नदी की —-----सतह पर बर्फ जमी थी।

(क)आगे

(ख) ऊपरी

(ग) पीछे

अध्याय–11
क्रिया Verb

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना प्रकट हो, उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे– बच्चा खेलता है।

रमा सोती है।

फूल सुंदर है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'खेलता है', 'सोती है' तथा 'है' से किसी कार्य के करने या होने का भाव प्रकट होता है। अतः ये सभी क्रियाएँ हैं। धातु (रूट) – क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं अर्थात किसी क्रिया के विभिन्न रूपों में जो अंश समान रूप से मिलता है, उसे धातु कहते हैं। जैसे–

क्रिया का सामान्य रूप	हँस, चल, लिख, पढ़
हँसना, चलना, लिखना, पढ़ना	हँस, चल, लिख, पढ़

क्रिया की धातु में 'ना' जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है।

क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं–

1. सकर्मक क्रिया
2. अकर्मक क्रिया

1. सकर्मक क्रिया – जिन क्रियाओं के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कर्म की अनिवार्यता बनी रहती है सकर्मक क्रिया कहलाती है **जैसे** – खाना, पीना, खेलना, पढ़ना, लिखना आदि।

राम पढ़ता है। (सकर्मक क्रिया –अप्रत्यक्ष कर्म)

राम पुस्तक पढ़ता है (सकर्मक क्रिया–प्रत्यक्ष कर्म)

राघव खेलता है। (सकर्मक क्रिया–अप्रत्यक्ष कर्म)

राघव क्रिकेट खेलता है (सकर्मक क्रिया–प्रत्यक्ष कर्म)

क्रिया सकर्मक है या अकर्मक इसका निर्धारण कर्म के प्रयोग पर निर्भर नहीं होता है। जिन क्रियाओं की मूल प्रकृति सकर्मक होती है, उनके साथ कर्म का प्रयोग हो अथवा न हो, वह सकर्मक ही मानी जाती है।

सकर्मक क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं–

(क) एककर्मक

(ख) द्विकर्मक

(क) एककर्मक– एक कर्मवाली क्रिया एककर्मक होती है जैसे–रोहित मिठाई खाता है।

(ख) द्विकर्मक– जिन क्रियाओं के दो कर्म होते हैं वे द्विकर्मक क्रियाएँ होती है य

जैस–

माँ बच्चे को खाना खिला रही है।

2. अकर्मक क्रिया– जिस क्रिया का कर्म न हो अथवा जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता न पड़े, वह अकर्मक क्रिया कहलाती है जैसे–हँसना, रोना, सोना, जागना, नाचना आदि।

शुभम सोता है।

शोभा हँसती है।

राधा नाचती है।

इन वाक्यों में क्रियाओं का कर्म नहीं है तथा इन क्रियाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव कर्ता पर ही पड़ रहा है। अतः यह अकर्मक क्रियाएँ हैं।

संरचना के आधार पर क्रिया के चार प्रमुख भेद होते हैं–

1. प्रेरणार्थक क्रिया
2. नामधातु क्रिया
3. संयुक्त क्रिया
4. पूर्वकालिक क्रिया
5. सामान्य क्रिया
6. अनुकरणात्मक क्रिया

1. प्रेरणार्थक क्रिया– जब कोई कर्ता क्रिया को स्वयं न करके किसी दूसरे से करवाता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं जैसे–

मयंक धोबी से कपड़े धुलवाता है।

अध्यापक छात्र से पाठ पढ़वाता है।

2. नामधातु क्रिया – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में 'न' प्रत्यय जोड़ने से बनी क्रियाएँ नाम धातु क्रिया कहलाती है। नाम धातु क्रियाएँ इस प्रकार बनती हैं–

संज्ञा से –	बात हाथ टक्कर रंग	बतियाना हथियाना टकराना रँगना
सर्वनाम से –	अपना	अपनाना
विशेषण से –	गर्म	गरमाना
अनुकरणात्मक क्रिया –	खटखट थपथप थरथर	खटखटाना थपथपाना थरथराना

3.सामान्य क्रियाएँ – कुछ क्रियाएँ भाषा में रूढ शब्द के रूप मे प्रचलित होती हैं। ये मूल क्रियाएँ होती हैं। ये मूल धातु में 'ना' जोड़कर बनती हैं।

जैसे– पढ़ना, लिखना, आना, पाना, जाना, खेलना, कूदना, भागना, उछलना आदि।

उदाहरण–

1. वह पत्र लिखती है।
2. बच्चा पढ़ना सीख रहा है।
3. राधा अब नाचेगी।
4. माँ ने पानी उबाला।

4. संयुक्त क्रिया – जब दो या दो से अधिक क्रियाएँ आपस में मिल कर एक पूर्ण क्रिया बनाती हैं तो वह संयुक्त क्रिया कहलाती है।

जैसे– 1. वह पढ़ रहा है।

2. कल मेहमान चले जाएँगे।

पहले वाक्य में तीन तथा दूसरे वाक्य में दो क्रियाएँ मिलकर पूर्ण भाव को अभिव्यक्त कर रही हैं इस प्रकार एक से अधिक क्रिया होने तथा उनका संयुक्त रूप प्रयुक्त होने के कारण ये संयुक्त क्रियाएँ हैं।

5. पूर्वकालिक क्रिया – जिस क्रिया का पूरा होना दूसरी क्रिया के पूरा होने से पूर्व पाया जाए, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे– वह पढ़कर सोएगा।

यहाँ पर सोएगा से पूर्व 'पढ़कर' क्रिया आई है। पूर्व आने वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है पूर्वकालिक क्रिया मूल धातु में 'कर' जोड़कर बनती है। जैसे–खाकर, पढ़कर, बोलकर, सोकर, उठकर, नहाकर, पकाकर गाकर, आकर आदि।

6. अनुकरणात्मक क्रिया – कुछ क्रिया शब्द किसी ध्वनि के अनुकरण पर बनाये जाते है। उन्हें अनुकरणात्मक क्रियाएँ कहते हैं।

जैसे–

ध्वनि	क्रिया शब्द
खटखट	खट खटाना
टनटन	टन टनाना
हिनहिन	हिन हिनाना
भिनभिन	भिन भिनाना

अभ्यास कार्य

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठकों में दी गई धातुओं के उचित रूप से कीजिए–

क. उसने पुस्तक——— (पढ)
ख. मैं विद्यालय——— (जा)
ग. वह मेज पर—————(बैठ)
घ. दीपक संगीत ———(सुन)
ङ. उसने मंच पर नृत्य प्रस्तुत—————(कर)
च. उन्होंने खाना————— (खा)

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिन्ह लगाओ।

1. 'किसी काम का करना या होना' कहलाता है–

क. क्रिया
ख. कर्ता
ग. कर्म
घ. इनमें से कोई नहीं

2. काम करने वाले को कहते हैं–

(क) कर्ता
(ख) कर्म
(ग) क्रिया
(घ) कार्य

3. क्रिया के मूल रूप को कहते हैं–

(ख) क्रिया
(ग) धातु
(घ) कर्ता
(क) कर्म

4. 'अकर्मक' व 'सकर्मक' भेद हैं–

(क) कर्ता के
(ख) कर्म के
(ग) क्रिया के
(घ) इनमें से कोई नहीं

5. 'एककर्मक' व 'द्विकर्मक' क्रिया भेद हैं–

(क) प्रेरणार्थक क्रिया
(ख) अकर्मक क्रिया
(ग) सकर्मक क्रिया
(घ) इनमें से कोई नहीं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. क्रिया की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

ख. कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते हैं? उनके नाम एवं एक–एक उदाहरण लिखिए।

ग. संयुक्त क्रिया किसे कहते हैं? उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

अध्याय - 12.

काल (Tense)

प्रत्येक कार्य किए जाने का कोई-न-कोई समय होता है। कुछ कार्य बीते हुए समय में पूरे हो चुके होते हैं। कुछ कार्य वर्तमान समय में चल रहे होते हैं तथा कुछ कार्य आने वाले समय में किए जाएँगे।

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए और समझिए -

महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की।
डॉक्टर मरीज का इलाज कर रहा है।
हम लोग दो दिनों के लिए पर्वतीय यात्रा पर जाएँगे।

ऊपर दिए गए वाक्यों में क्रिया शब्द 'रचना की', 'कर रहा है' तथा 'जाएँगे' से क्रिया के होनेवाले समय का पता चल रहा है। पहले वाक्य में क्रिया का 'बीता हुआ समय' प्रकट हो रहा है। दूसरे वाक्य में क्रिया वर्तमान का समय' प्रकंट हो रहा है तथा तीसरे वाक्य में क्रिया का 'आनेवाला समय' प्रकट हो रहा है। क्रिया के इस समय को ही काल कहते हैं।

क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के करने या होने के समय का बोध हो, वह काल कहलाता है।

काल के भेद

काल के तीन भेद होते हैं-

- भूतकाल
- वर्तमान
- भविष्यत्

1. भूतकाल - किसी क्रिया के घटित होने से पूर्व की स्थिति भूतकाल कही जाती है। अतः किसी कार्य के बीते हुए समय (भूतकाल) में निरंतर होने या किसी अनिश्चित समय पर होने का बोध होता है, जैसे-

1) वह दिल्ली आया था।
2) बच्चा चला गया।
3) वह शाम को करीब 11 बजे घर लौटी।

भूतकाल के सूचक हैं - था, थे, थी और आ, ए, ई।

2.वर्तमान काल - जिस क्षण क्रिया घटित होती है, वह उसका वर्तमान होता है। इस काल - का प्रयोग किसी क्रिया के वर्तमान काल में बार-बार घटित होने का बोध कराता है, जैसे-

1) वह किताबें बेचता है।
2) आप क्या काम करते हैं?
3) आप गाना गा रही हैं
4) मैं खाना खा रही हूँ।
इस प्रकार वर्तमान काल के सूचक हैं - है, हैं, हूँ।

ग) **भविष्यकाल (Future Tense)** - किसी क्रिया के वर्तमान काल के बाद जो कुछ घटता है, उसे भविष्य काल में रखा जाता है। अर्थात क्रिया के जिस रूप से उसके आने वाले समय में पूरा होने का बोध हो उसे भविष्य काल कहते हैं। आइए, कुछ उदाहरणों पर विचार करें-

1) वह कल दिल्ली आएगा।
2) मैं कल कपड़ों का नाप देने जाऊँगा।
3) मैं कभी भी चाय नहीं बनाऊँगी।
4)कब तक आओगे?
अतः भविष्य काल के सूचक चिह्न हैं- ऊँगा, एगा, ओगे आदि।

भूतकाल के छः भेद होते हैं -

क. सामान्य भूतकाल
ख. आसन्न भूत काल।
ग. पूर्ण भूत काल
घ. अपूर्ण भूत काल
ङ. संदिग्ध भूत काल
च. हेतु-हेतुमद् भूत काल

क. सामान्य भूत काल - क्रिया के जिस रूप से कार्य का भूत काल में सामान्य रूप से होने का पता चलता हो, उसे सामान्य भूत काल कहते हैं। जैसे-

- माँ ने खाना पकाया।
- अध्यापक ने सवाल पूछे।

ख आसन्न भूत काल - क्रिया के जिस रूप से कार्य के अभी-अभी संपन्न होने का बोध हो, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं अर्थात निकट भूत काल में पूर्ण हुए कार्य से आसन्न भूत काल का पता चलता है। जैसे-

- विमान ने अभी उड़ान भरी है।
- किसान ने बीज बोए है।

ग. पूर्ण भूत काल - भूतकाल की जिस क्रिया से यह पता चलता है कि कोई कार्य भूतकालत में बहुत पहले समाप्त हो चुका था, उसे पूर्ण भूत काल कहते हैं। जैस-

- लड़की स्कूल जा चुकी थी।
- कार्यालय बंद हो चुका था।

घ. अपूर्ण भूत काल - क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य भूत काल में शुरू हो चुका था परन्तु अभी समाप्त नहीं हुआ, उसे अपूर्ण भूत काल कहते हैं।

जैसे-

- दीपक सो रहा था।
- बढ़ई मेज बना रहा था।

ङ. संदिग्ध भूत काल - क्रिया के जिस रूप से उसके भूत काल में पूरा होने या करने में संदेह हो, उसे संदिग्ध भूत काल कहते हैं।

जैसे-

- राजेश परीक्षा दे चुका होगा।
- कुम्हार बर्तन बना चुका होगा।

च. हेतु-हेतुमद् भूत काल - क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य भूत काल में हो सकता था, परंतु किसी कारणवश न हो सका, उसे हेतु-हेतुमद् भूत काल कहते हैं। जैसे-

- वह सावधानीपूर्वक गाड़ी चलाता तो बच जाता।
- बाँध टूटता तो गाँव में बाढ़ आ जाती।

वर्तमान काल - वर्तमान काल के तीन भेद होते हैं-

क. सामान्य वर्तमान काल
ख. अपूर्ण वर्तमान काल
ग. संदिग्ध वर्तमान काल

क. सामान्य वर्तमान - जिस क्रिया से वर्तमान काल मे क्रिया का होना या करना पाया जाता है, उसे सामान्य वर्तमान कहा जाता है।

क) वह जाता है।
ख) वे आते हैं।
ग) वह प्रातः चार बजे उठता है।

सामान्य वर्तमान से आदत होने का भी संकेत मिलता है, जैसे-

क) वह फिल्में देखता रहता है।
ख) मैं प्रायः पढ़ता रहता हूँ।

ख. अपूर्ण वर्तमान - वर्तमान काल की जिस क्रिया से उसके वर्तमान काल में आरंभ होने का बोध तो हो, किंतु समाप्त होने का बोध न हो, उसे अपूर्ण वर्तमान कहेंगे।

क) शेर दौड़ रहा है।
ख) अध्यापक पढ़ा रहे हैं।
ग) बच्चे शोर मचा रहे हैं।

नोट- अपूर्ण वर्तमान का प्रयोग भविष्य में होने वाले कार्य का संकेत करने के लिए भी किया जाता है।
जैसे-

क) वह कल दिल्ली जा रहा है।
ख) अमेरिका के राष्ट्रपति अगले महीने आ रहे हैं।

ग. संदिग्ध वर्तमान - क्रिया के जिस रूप द्वारा काम के वर्तमान काल में होने या करने में संदेह का बोध हो, उसे संदिग्ध वर्तमान के नाम से जाना जाता है।जैसे–

क) अमित आनंद आते ही होंगे।
ख) अब तक तो पिताजी दफ्तर पहुँचे होंगे।
ग) रमन अपने दोस्तों के साथ खेलता होगा।

3. भविष्य काल के भेद

भविष्य काल के तीन भेद होते हैं-

क. सामान्य भविष्य - भविष्य काल की जिस क्रिया से आने वाले समय में सामान्य रूप से होने का पता चले, उसे सामान्य भविष्य कहा जाता है, जैसे-

क) माली पौधों में पानी देगा।
ख) हम सब खेलने जाएँगे।
ग) वे सब विश्राम करेंगे।
घ) हम परेड देखने जाएँगे।

ख. संभाव्य भविष्य - भविष्यकाल की जिस क्रिया से उसके भविष्य में होने की संभावना का बोध हो, उसे संभाव्य भविष्य कहते हैं, जैसे-

क) शायद, कल सवेरे वह आ जाए।
ख) जब तुम टी.वी. देख रहे होगे, वह खेल रहा होगा।
ग) यह संभावना है कि कल वे हमारे घर आएं।

ग. हेतुहेतुमद् भविष्य - भविष्य काल की जिस क्रिया से यह पता चले कि वह दूसरी क्रिया की होने की स्थिति में ही भविष्य में संभव होगी, उसे हेतुहेतुमद् भविष्य कहा करते हैं, जैसे-

क) फार्म भरोगे, तभी तो कोई तुम्हें काम देगा।
ख) समाचार पढ़ोगे, तभी तो कुछ जान पाओगे।
ग) अगर घर में ही संस्कार नहीं होंगे, तो बाहर क्या शिष्टाचार दिखाओगे।

अभ्यास कार्य

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

क) काल से आपका क्या अभिप्राय है? मुख्य कालों को उदाहरण सहित लिखिए।
ख) वर्तमानकाल और भविष्यकाल के भेदों के नाम लिखकर प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।
ग.) भूतकाल किसे कहते हैं? उदाहरण दीजिये

2.निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाओं को रेखांकित करके उनके कालों के नाम लिखिए-

क) वह खेल रहा होगा।
ख) अनिल अभी-अभी ऑफिस पहुँचे हैं।
ग) वह आता रहता है।
घ) वह कल दिल्ली आएगा।
ङ) शायद, कल सवेरे वह आ जाए।
च) परिश्रम करोगे, तो सफलता अवश्य ही मिलेगी।

3)निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों में कोष्ठक में दी गई क्रिया के सही रूप भरिए-

क.) यदि उसने मेहनत की होती तो पास हो—-(जाना)
ख.) मध्यांतर के बाद मैच पुनः आरंभ ——— (होना)
ग.) मैंने पिता जी से ———कि मुझे कुछ पुस्तकें चाहिए (कहना)
घ.) उन्होंने जेल जीवन के कष्टों को हँसकर—- (सहना)
ड.) वह कल बनारस अवश्य—---(जाना)

अध्याय 13

अव्यय Indeclinable Word

अव्यय का अर्थ है- जिसका व्यय न हो अर्थात जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता हो, उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहते हैं।

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए और समझिए -

- राघव प्रतिदिन विद्यालय जाता है।
- राधिका और मीरा सहेलियाँ हैं।
- माँ केशव के लिए कपड़े लाई।

अव्यय के भेद

अव्यय चार प्रकार के होते हैं-
1. क्रिया-विशेषण
2. संबंधबोधक
3.समुच्चयबोधक
4.विस्मयादिबोधक

1. क्रिया विशेषण

1. गिलहरी धीरे-धीरे खा रही है।
2. गाय नीचे बैठी है।
3. चिड़िया खूब उड़ी।
4. मोहन प्रतिदिन पढ़ता है।

ऊपर लिखे वाक्यों से पता चलता है कि गिलहरी कैसे खा रही है? गाय कहाँ बैठी है? चिड़िया कितनी उड़ी? और मोहन कब पढ़ा?

रंगीन शब्द क्रिया कैसे, कहाँ, कितनी और कब हुई- इसका बोध करा रहे हैं। ये सभी शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। ये क्रियाविशेषण हैं। अतः

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

क्रियाविशेषण के प्रकार
क्रियाविशेषण शब्द कभी समय, स्थान, रीति तो कभी मात्रा संबंधी विशेषता बताते हैं।

इस आधार पर इसके चार भेद हैं-

1. कालवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Time)
2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण (Adverb of place)
3. रीति का क्रियाविशेषण (Adverb of Manner)
4. मात्रावाचक क्रियाविशेषण (Adverb of Quantity)

क्रिया विशेषण के भेद

क्रिया-विशेषण के चार भेद होते हैं-

(क) कालवाचक क्रिया विशेषण- क्रिया के समय का बोध कराने वाले शब्द कालवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं; जैसे- कल, आज, परसों, सुबह, शाम, रात, दिन, प्रतिदिन, लगातार, बार-बार, बहुधा आदि।

- मैं आज बाजार नहीं जाऊँगा।
- हमारी रेलगाड़ी रात में जाएगी।
- दादाजी सुबह आ जाएँगे।
- मैं प्रतिदिन फल खाता हूँ।

ख) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण- क्रिया के स्थान का बोध कराने वाले शब्द स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं; जैसे- नीचे, ऊपर, यहाँ, वहाँ, इधर, उधर आदि।

- रमा इधर चले आओ।
- मदन नीचे गया।
- बच्चे इधर-उधर घूम रहे थे।
- माधवी वहाँ बैठी है।

(ग) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण- क्रिया के परिणाम का बोध कराने वाले शब्द परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं; जैसे- थोड़ा, तनिक, बहुत, कम, भारी, केवल, ज्यादा, बिल्कुल, उतना, थोड़ा-सा आदि।

- दीपाली **कम** बोलती है।
- विभा **बहुत** बोलती है।
- रितिका को **थोड़ा** विश्राम करना चाहिए।

(घ) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण- क्रिया की रीति (तौर-तरीके) का बोध कराने वाले शब्द रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं; जैसे- तेज, धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी, धडाधड अचानक, सचमुच सच संभवत: एकाएक तथा, कभी नहीं, कदापि नहीं, अवश्य, शायद, सहसा, जरूर आदि।

- रमन तेज दौड़ता है।
- गीता जल्दी आओ।
- दादी माँ धीरे-धीरे चलती हैं।

विशेषण और क्रियाविशेषण में अंतर

विशेषण	क्रिया विशेषण
राधा सुंदर है। रमन अच्छा लड़का तलवार की धार तेज है। चावल थोड़े हैं। कम छात्र उपस्थित है।	राधा सुंदर गाती है। रमन अच्छा लिखता है। वह तेज दौड़ता है। अब थोड़ा टहल लो। कम बोलो।

यहाँ सुंदर, अच्छा, तेज, थोड़ा, कम शब्दों का प्रयोग विशेषण तथा क्रियाविशेषण दोनो रूपों में हुआ है पहले स्तंभ में आए रंगीन शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बता रहे हैं, अत: ये विशेषण हैं। दूसरे स्तंभ में आए रंगीन शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं, अत: ये क्रिया विशेषण हैं।

2. संबंध बोधक

कुछ शब्द, संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ - स्पष्ट करते हैं। जैसे-

घर के बाहर अनामिका खड़ी है।
मंदिर के सामने सरोवर है।
मेज के ऊपर टोकरी रखी है।
संगीता के पास मेरा पेन है।

यहाँ 'के बाहर', 'के सामने', 'के ऊपर', तथा 'के पास', अव्यय शब्द क्रमशः घर और अनामिका, मंदिर और सरोवर, मेज और टोकरी तथा संगीता और मेरे बीच संबंध स्थापित कर रहे हैं। ये सभी संबंधबोधक हैं।

जिन शब्दों द्वारा संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध स्पष्ट हो, संबंधबोधक कहलाते हैं।

संबंधबोधक अव्यय के भेद- संबंधबोधक अव्यय अर्थबोध की दृष्टि से दस प्रकार के होते हैं-

(क) कालवाचक–के पहले, के बाद, के आगे, के पीछे आदि।
(ख) दिशावाचक–के आसपास, के पार, की ओर आदि।
(ग) स्थानवाचक–के सामने, के निकट, के यहाँ आदि।
(घ) कारणवाचक–के कारण, के मारे आदि।
(ङ) समतावाचक–के तुल्य, के समान, के योग्य, के जैसा आदि।
च) हेतुवाचक–के द्वारा, के सिवा, के अतिरिक्त, के कारण
छ) साधनवाचक –के माध्यम, के हाथ, के द्वारा आदि।
ज) तुलनावाचक–की अपेक्षा, की तुलना में, के जैसे आदि।
झ) विरोधवाचक –के विपरीत, के विरुद्ध, के प्रतिकूल आदि।
न) संगवाचक–के समान, के संग, के सिवा आदि।

संबंध बोधक तथा क्रिया विशेषण में अंतर

कुछ अव्यय संबंधबोधक तथा क्रियाविशेषण दोनों प्रकार से प्रयोग में लाए जाते हैं।

जैसे - 1. भीतर जाओ। (क्रिया विशेषण)
2. कमरे के भीतर बच्चे हैं।(संबंधबोधक)
3. तरुण बाहर खड़ा है। क्रिया विशेषण)
4. घर के बाहर तरुण खड़ा है। (संबंधबोधक)

पहले वाक्य में आया 'भीतर' शब्द यह बताता है कि क्रिया कहाँ हो रही है, अतः यह क्रियाविशेषण है। परंतु दूसरे वाक्य में आए 'भीतर' शब्द का संबंध 'कमरे' संज्ञा से है, अतः यह संबंधबोधक है। इसी प्रकार तीसरे वाक्य में आया 'बाहर' शब्द यह बता रहा है कि क्रिया कहाँ हो रही है, अतः यह क्रियाविशेषण है। चौथे वाक्य में 'आए बाहर' शब्द का संबंध 'घर' संज्ञा से है, अतः यह संबंधबोधक है।

3. समुच्चयबोधक

कुछ शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं; जैसे- लेकिन, मगर, परंतु, किंतु, और,तथा , या, एवं, इसलिए, क्योंकि, ताकि, कि, यदि, तो, मानो, यद्यपि, तथापि आदि।

प्रताप तेज भागा मगर गिर पड़ा।
माता और पिता हमारे पूज्य हैं।
राधिका या मोनिका गीत गाएगी।
उसने पढ़ा नहीं इसलिए अनुत्तीर्ण हो गया।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'मगर' और 'इसलिए' दो वाक्यांशों को जोड़ रहे हैं, जबकि 'और' तथा 'या' दो शब्दों को जोड़ रहे हैं। ये समुच्चयबोधक शब्द हैं।

जो शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को परस्पर जोड़ने का कार्य करते हैं, समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

समुच्चयबोधक शब्दों को योजक भी कहते हैं। समुच्चयबोधक जोड़ने के साथ-साथ कारण या परिणाम बताने, विकल्प बताने व विरोध जताने का कार्य भी करते हैं।

उदाहरण–

1. मनोहर ने माता-पिता तथा गुरुओं को प्रणाम किया।
2. अनिल आता पर माँ ने मना कर दिया।
3. काम करो या चुप रहो।
4. मेहनत से ही सफल होते हैं, अतः खूब मेहनत करो।
5. विभा, अनिता और राधिका एक ही कक्षा में पढ़ती हैं।

6. सचिन व सौरभ में गहरी मित्रता है।
7. काले बादल आए लेकिन बारिश नहीं हुई।
8. लोमड़ी ने उछल-उछलकर अंगूरों तक पहुँचने की बहुत कोशिश की परंतु सफल न हो सकी।
9. टीम का गोलकीपर अनिल या विजय में से चुना जाएगा
10. मैं बाज़ार जा रहा हूँ चाहे तुम चलो।

4. विस्मयादिबोधक

1. हाय ! बेचारा कितना दुबला हो गया।
2. अरे ! आप यहाँ।
3. शाबाश ! अगली बार भी ऐसे ही दौड़ना।
4. छिः ! कितनी गंदगी है।
5. बाप रे ! इतनी ऊँची मीनार।
6. ओह ! आखिर तुम आ ही गए।

उपर लिखे वाक्यों को पढ़ो। यहाँ आए 'हाय !', 'अरे !', 'शाबाश ! ', 'छिः !', 'बाप रे !' तथा 'ओह !' शब्द वाक्य में कही गई बात से पहले ही मन के भाव को व्यक्त कर रहे हैं। ये भाव दुख, हैरानी, प्रशंसा, घृणा आदि से संबंधित हैं। ऐसे भाव व्यक्त करने वाले शब्द विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं। अतः

जो अव्यय शब्द हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय आदि का भाव व्यक्त करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं।

विस्मयादिबोधक शब्दों के पश्चात विस्मय सूचक चिह्न (!) अवश्य लगता है। ये शब्द वास्तव में मन के भाव होते ये स्वाभाविक रूप से ही मुख से निकलते हैं। ये किसी विशेष सूचना के लिए प्रयोग नहीं किए जाते अपितु स्वाभाविक रूप से विभिन्न भावों को व्यक्त करते हैं।
विस्मयादिबोधक शब्द विभिन्न प्रकार के होते हैं। जैसे-

1. विस्मयबोधक - (!)

1.अरे (!) आप आज यहाँ।
2. क्या (!) वे सब आ गए।
3. हैं(!)तुम भी आए हो।

2. शोकबोधक -(!)

1. हे राम ! बहुत बुरा हुआ।
2. ओह !इतना अधिक बोझ।
3. हाय ! वह कैसे दिन बिता रहा है।

3. भयबोधक - (!)

बाप रे बाप ! इतना भयानक दृश्य।

4.**घृणाबोधक** - (!)

1. छिः ! कितनी बदबू है।
2. थू -थू ! यह कमरा तो सड़ रहा है।
3. उँह ! इस अमरूद में तो कीड़ा लगा है।

5. हर्षबोधक - (!)

1. अहा ! कितना सुंदर नज़ारा है।
2. शाबाश ! सदा ऐसे ही प्रथम आना।
3.वाह ! कितना सुंदर लेख है।

6. **स्वीकारबोधक**- (!)

1. बहुत अच्छा ! मैं अवश्य आऊँगी।
2. हाँ-हाँ ! सब आओ।
3. ठीक ! ऐसे ही बनाओ।

7. **संबोधनबोधक**-(!)

1. ओ भाई साहब ! जरा मदद करना।
2.अरे ! सुनना तो।
3. अजी ! यहाँ तो आना।

8. **आशीर्वादबोधक** -(!)

1. जियो ! खूब जियो।
2. जीते रहो ! खूब फलो-फूलो।

अभ्यास कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. अविकारी शब्द किसे कहते हैं? उसके भेदों के नाम लिखिए।

ख. क्रियाविशेषण की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए

ग. क्रियाविशेषण के कितने भेद होते हैं ? उनके नाम लिखिए।

घ) संबंधबोधक किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

(ड) समुच्चयबोधक अव्यय किसे कहते हैं?

(ई) विस्मयादिबोधक चिह्न की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए

2.**नीचे लिखे वाक्यों में उचित क्रियाविशेषण शब्द भरो।**

1. खरगोश—---- दौड़ता है परंतु कछुआ —--चलता है।
2. सूर्य —---- निकलता है।
3. तारे —---- को चमकते हैं।
4.-------- मेहनत करो ताकि सफलता मिले।
5. अजनबी को देखकर कुत्ता —---- से भौंका।
6. चींटी —-- खाती है लेकिन हाथी —----- खाता है।

3. **नीचे लिखे वाक्यों में आए सही क्रियाविशेषण शब्द पर सही का चिहन लगाओ**

1. गाड़ी धीरे-धीरे चल रही है।

(क) गाड़ी (ख) चल रही
(ग) धीरे-धीरे (घ) रही है

2. बच्चा ज़ोर से रो रहा है।

(क) बच्चा (ख) रो रहा
(ग) ज़ोर से (घ) रहा है

3. शेर ने अचानक छलाँग लगा दी।

(क) शेर (ख) छलाँग
(ग) लगा दी (घ) अचानक

4. मज़दूर लगातार खुदाई करता रहा।

(क) करता रहा (ख) मज़दूर
(ग) लगातार (घ) खुदाई

4. **भय, विस्मय तथा घृणा का भाव दिखाने वाले दो-दो विस्मयादिबोधक शब्द लिखो।**

भय _____ , विस्मय_____ , घृणा_____

5.**वाक्य पढ़कर सही विस्मयादिबोधक शब्द भरो।**

1. —------- कितना सुंदर फूल।
2.. —--------बेचारा कितना दुखी है।
3.. —-------- कितनी बदबू आ रही है।
4.—---------कितना बड़ा घर।
5 —---------! दूर हट।
6 —---------तुम भी खूब खेले।
7.----------, कितना स्वादिष्ट खाना है।
8.—----------ऐसे ही सदा प्रथम आओ।
9.—---------- इधर आना।
10. —----------तुम्हें कितनी बार समझाया है कि चुप रहो।

6. **उपयुक्त समुच्चयबोधक चुनकर रिक्त स्थान भरिए-**

अथवा ,और ,ताकि , इसलिए , किंतु

(क) राम, लक्ष्मण-----सीता वन को गए।
(ख) राधिक ने परिश्रम किया------उसे सफलता मिली।
(ग) दीपिका ने नकल की-----फिर भी उसे सफलता नहीं मिली।
(घ) मुझे पहले —-----दूसरे में से कोई एक गेंद चाहिए।
(ङ) खूब परिश्रम करो —---_अच्छे अंक पा सको।

अध्याय-14

विराम-चिह्न (Punctuation)

विराम-चिह्न का अर्थ है- रुकना या ठहरना। बातचीत करते या बोलते समय हमारी गति एक समान नहीं होती। बात को स्पष्ट करने के लिए कहीं-कहीं रुकना पड़ता है अथवा अलग-अलग हाव-भाव प्रदर्शित करना पड़ता है। जब हम मौखिक रूप में अपने-अपने विचार व्यक्त करते हैं तो हमारी शैली, लहजे, उतार-चढ़ाव आदि से विचारों का स्पष्टीकरण हो जाता है, परंतु लिखित रूप में इसे विराम चिह्न से दर्शाया जाता है।

इस प्रकार, भाषा के लिखित रूप में विभिन्न स्थानों पर रुकने का संकेत करने वाले चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं।

प्रमुख विराम-चिह्न निम्नलिखित हैं-

क्रम	विराम चिह्नों	
1	पूर्ण विराम	(Full Stop) ।
2	अर्द्ध विराम	(Semi-Colon) ;
3	अल्प विराम	(Comma) ,
4	प्रश्न चिह्न .	(Mark of Interrogation) ?
5	विस्मय सूचक या संबोधक चिह्न	(Mark of Exclamation) !
6	योजक या विभाजक चिह्न	(Hyphen) _
7	निर्देशक चिह्न	(Dash) -
8	अवतरण अथवा उद्धरण चिह्न	(Inverted Comma) “ ”
9	विवरण चिह्न	(Sign of Following) :-
10	कोष्ठक चिह्न	(Bracket) ()
11	हंसपद या त्रुटिपूरक चिह्न	(Insertion) ^/^
12	संक्षेपसूचक या लाघव चिह्न	(Sign of Abbreviation) .

.1.**<u>पूर्णविराम</u> (।) -** पूर्णविराम वाक्य की समाप्ति पर लगाया जाता है। प्रश्नवाचक तथा विस्मयवाचक वाक्यों को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के वाक्यों के अंत में पूर्णविराम लगाया जाता है। जैसे-

बच्चे विद्यालय से घर लौट आए।

हम लोग ग्रीष्मावकाश में शिमला घूमने गए थे।

2. अर्द्ध विराम (;) - पूर्ण विराम से कम देर ठहरने के लिए इसका प्रयोग होता है। यह समानाधिकार वाक्यों के बीच तथा विभिन्न उपवाक्यों पर ज़ोर देने के लिए आता है।

जैसे - 1. गांधी जी नहीं रहे; वे अमर हो गए।

2. जो उन्हें एक गाल पर मारता; उसे वह दूसरा गाल भी दिखा देते।

3. अल्पविराम (,) - पूर्णविराम की तुलना में कम देर तक रुकने के लिए तथा वाक्य, पद आदि में अलगाव प्रदर्शित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे-

सुधा, गीता, अनुराधा और अंकिता खरीदारी करने निकली हैं।

भारत की सभ्यता प्राचीन है, यहाँ विभिन्न प्रकार के रीति-रिवाज़ हैं तथा अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं।

जब हम बाज़ार पहुँचे, वर्षा तेज गति से होने लगी।

हाँ, यह काम मैं भी कर सकता हूँ।

4. प्रश्न सूचक चिह्न (?) - प्रश्न सूचक चिन्ह किसी बात के पूछे जाने पर आता है।

जैसे - 1तुम कहाँ गए थे?

2.कौन आया है?

व्यंग्यात्मक भाव के लिए कभी-कभी कोष्ठक में इसे लगाते हैं।

जैसे - नेता तो अपने को जनसेवक मानते हैं(?)

5. विस्मय सूचक चिह्न (!) - यह आश्चर्य, हर्ष, शोक सूचक शब्दों के बाद तथा संबोधन के लिए लगता है।

जैसे- 1. हाय ! बेचारा चल बसा।

2. वाह ! कितना बड़ा घर है।

3. अरे अनुराग ! इधर आना।

4. शाबाश ! और मेहनत करो

कभी-कभी प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में भी इसे भाव प्रदर्शन के लिए लगाते हैं।

जैसे - बोलते क्यों नहीं, बहरे हो क्या !

6. योजक या विभाजक-चिह्न (-) - तुलना करते समय, समास के मध्य या शब्द-युग्मों के बीच में इसका प्रयोग होता है।

आप-सा विद्वान यहाँ कोई नहीं है।

उसे सब कुछ हरा-हरा ही दिखाई देता है।

वह दिन-रात काम करता है।

7. निर्देशक-चिह्न (-) संवाद में नाम के बाद, व्याख्या स्पष्ट करते समय या किसी बात का उदाहरण देते समय निर्देशक-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे-

नौकर - मालिक, मुझे दो दिन की छुट्टी चाहिए।

"आराम हराम है।" - जवाहर लाल नेहरू

8. विवरण-चिह्न (:-) - सूचना, निर्देश देने के लिए तथा किसी बात का उदाहरण अगली पंक्ति में देना हो तो विवरण-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे -

वर्ण के दो भेद हैं:- स्वर एवं व्यंजन

इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

9. लाघव-चिह्न (०)- शब्दों को संक्षिप्त रूप से लिखने के लिए लाघव-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे-

डॉक्टर - डॉ०, कृपया पृष्ठ उलटिए - कृ० पृ० उ०

10. उद्धरण-चिह्न- उद्धरण-चिह्न दो प्रकार के होते हैं-

इकहरा उद्धरण चिह्न (’.....’)

दोहरा उद्हरण चिह्न (”.....”)

क. नाम, उपनाम आदि इकहरे उद्धरण-चिह्नों के भीतर लिखे जाते हैं। जैसे-

’एंतन चेखव’ रूसी साहित्यकार थे।

’वेद’ हिंदुओं का प्राचीनतम धर्मग्रंथ है।

रामधारी सिंह ’दिनकर’ हिंदी के प्रसिद्ध कवि थे।

11. कोष्ठक ( )- **कोष्ठक** का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है-

(1) क्रमसूचक अंकों या वर्णों को दर्शाने के लिए; जैसे-

(1), (2), (अ), (ब)

(2) किसी शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए; जैसे-

(क) धर्मराज **(युधिष्ठिर)** धर्मपालक थे।

(ख) वह प्रियंवदा **(प्रिय बोलनेवाली स्त्री)** है।

12.हंसपद (^/ ^) - लिखते समय जहाँ कुछ लिखना रह जाए वहाँ हंसपद लगाकर लिखा जाता है। हंसपद उस के बाद में लिखे गए शब्द का सही स्थान बताता है।

जैसे -

बाज़ार

1. माँ ने कहा था कि शाम को ^ से सामान ले आना

वर्षा

2. आज दिनभर तेज़ ^होती रही।

12.**संक्षेपसूचक (.)** - यह लाघव बिंदु किसी भी शब्द के संक्षिप्त रूप में प्रयोग किया जाता है।

जैसे - **1.** एम.ए. **(**मास्टर ऑफ आर्ट**)** **2.** कृ.पृ.उ. **(**कृपया पृष्ठ उलटिए**)**

3. डॉ. **(**डॉक्टर**)** **4.** प्रो. **(**प्रोफेसर**)**

अभ्यास कार्य

1. नीचे लिखे वाक्यों में विराम-चिह्न लगाओ।

1. सुख दुख तो आते जाते हैं
2. शेक्सपियर ने कहा जीवन तो रंगमंच है
3. तुम कब आओगे
4. अरे ज़रा सुनना
5. चर्चा के लिए सोमवार मंगलवार बुधवार तीन दिन विशेष हैं
6. मेज़ पर पेंसिल पुस्तक कॉपियाँ रखी हैं

2. **निम्नलिखित विराम चिह्नों के नाम लिखिए-**

क. (-) -------------   ख (:-)--------------   ग (।)--------------   घ (!) --------------

ङ(?)--------------   च(:)--------------   छ(०)--------------

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. विराम चिह्न किसे कहते हैं ?

ख. पूर्णविराम का प्रयोग कहाँ किया जाता है ? उदाहरण दीजिए।

ग.उद्धरण-चिह्न कितने तरह के होते हैं ? इनका प्रयोग किन-किन स्थितियों में किया जाता है ?

4.उपयुक्त विकल्प पर सही (√) का निशान लगाइए-

(क) किसी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए किस विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

योजक चिह्न

कोष्ठक

अल्पविराम

ख) कौन-सा विराम चिह्न पुस्तकों के शीर्षक या उपनाम के लिए प्रयोग किया जाता है?

(‘---’)

(“---”)

(०)

ग) किसी बात को अलग करके दिखाने के लिए किस विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

अल्प विराम

अर्धविराम

उपविराम

घ) संयुक्त और मिश्रित वाक्यों के उपवाक्यों को अलग करने के लिए किस विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

(।)

(,)

(;)

अध्याय–15
उपसर्ग और प्रत्यय Prefix and Suffix

हिदी भाषा में शब्द निर्माण चार प्रकार से होता है –

1. उपसर्ग लगाकर
2. प्रत्यय लगाकर
3. संधि द्वारा
4. समास द्वारा

उपसर्ग और प्रत्यय दोनों शब्दांश हैं अर्थात ये पूरे शब्द नहीं हैं और न ही इनका वाक्यों में अलग से प्रयोग होता है ये दोनों ही शब्द के साथ जोड़े जाते हैं तथा इनके जुड़ ने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन होता है।

1. उपसर्ग

कुछ शब्दांश किसी मूल शब्द के पहले जुड़ कर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन लाते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। जैसे–'शिक्षित' शब्द का अर्थ है–पढ़ा लिखा। यदि इससे पहले 'अ' जोड़ दिया जाए तो यह शब्द बन जाएगा–'अशिक्षित'। तब इसका अर्थ होगा– जो पढ़ा–लिखा नहीं है। यहाँ 'अ' उपसर्ग के रूप में प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार 'बल' शब्द से पहले यदि 'प्र' लगा दें तो एक नया शब्द 'प्रबल' सामने आएगा। तब इसका अर्थ हो जाएगा– 'विशेष शक्ति वाला' और यदि 'निर' लगा दें तो हो जाएगा–'निर्बल'। तब इसका अर्थ होगा 'शक्तिहीन'। अतः उपसर्ग शब्दों के प्रारंभ में जुड़ते हैं तथा इनके प्रयोग से मूल शब्द का अर्थ बदल जाता ळें

संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	निर्मित शब्द
अति	बहुत, सीमा से परे	अत्याचार, अत्यधिक, अति मानव, अत्युक्ति
अधि	ऊपर	अधिकार, अध्यक्ष, अध्यारोपण, अध्ययन
अनु	पीछे	अनुवाद, अनुकरण, अनुग्रह, अनुज, अनुनासिक,अनुभव
अप	बुरा, उलटा	अपवाद, अपयश, अपमान, अपशब्द
अभि	सामने, की ओर	अभिमुख, अभ्यागत, अभिमान, अभिभाषण
अव	नीचे की ओर	अवगुण, अवतीर्ण, अवकाश, अवमान, अवसाद

आ	सब तरफ से	आगमन, आकर्षण, आजीवन, आमूल
उत्	ऊपर, अधिक	उत्कर्ष, उत्तम, उत्तगुं , उद्रेक
उप	छोटा/सहायक	उपनाम, उपहार, उपमंत्री, उपसर्ग
परा	परे	पराजय, परास्त, पराक्रम, परामुख
प्र	अधिक बड़ा	प्रकोप, प्रख्यात, प्रबोध, प्रबल
वि	रहित/विशेष	व्यर्थ, विदेशी, विजय, विवर्ण
सम्	साथ/मिलकर	संजीवनी, संतोष, संशोधन, संपूर्ण
सु	अच्छा	सुविचार,सुदर्शन, सुबोध, सुलेख

हिन्दी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	निर्मित शब्द
अन	नहीं	अनपढ़ , अनजान, अनहोनी, अनकही, अनमोल,
कु	बुरा	कुरूप, कुकर्म र्म, कुचाल, कुख्यात कुपुत्र
स	सहित /अच्छा	सदेह, सपरिवार, सजग, सपूत, सपत्नी,
सु	अच्छी	सुघड़, सुजान, सुपुत्र, सुकर्म, सुधार, सुविचार
अध	आधा	अधमरा, अधपका, अधखिला, अधजला
बिन	बिना/रहित	बिन माँगा, बिनब्याहा, बिनकहा
अ	अभाव/निषेध	अमर, अचेत, अछूत, अचल, अकाल, अज्ञान
उन	एक कम	उनतीस, उनतालीस, उनसठ, उनहत्तर
दु	बुरा/हीन	दुराचारी, दुबला, दुखद, दुष्कर्म, दुश्चर्चारत
नि	नीचे/निषेध/बिना	निहत्था, निडर, निवास, नियुक्त निबंध
भर	पूरा	भरपूर, भरपेट, भरमार

उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	निर्मित शब्द
बे	बिना रहित	बेहोश, बेईमान, बेरहम, बेगुनाह, बेहिसाब, बेमतलब
बद	बुरा	बदनाम, बदसूरत, बदबू, बदकिस्मत, बदहजमी
खुश	अच्छा	खुशबू, खुशहाल, खुशखबरी, खुशकिस्मत
ना	नहीं	नालायक, नाखुश, नासमझ, नापसंद, नाउम्मीद
गैर	भिन्न	गैरकानूनी, गैरहाजिर, गैरजिम्मेदार, गैरसरकारी
ला	अभाव/बिना	लापता, लावारिस, लाइलाज, लापरवाह
कम	थोड़ा/न्यून	कमउम्र, कमअक्ल, कमजोर, कमखर्च
हम	साथ	हमदर्द, हमसफर, हमउम्र, हमराज, हमशक्ल
बा	साथ	बाकायदा, बाइज्जत, बाअदब
दर	में	दरअसल, दरमियान
हर	सभी	हर रोज , हर तरफ , हर एक, हर साल, हर वक्त
सर	मुख्य	सरदार, सरहद, सरकार

अंग्रेजी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	निर्मित शब्द
सब	सब	सब–इंस्पेक्टर, सब–कांट्रैक्टर, सब–जज
डिप्टी	डिप्टी	डिप्टी–डायरेक्टर, डिप्टी कमिश्नर, डिप्टी–कलेक्टर
वाइस	वाइस	वाइस–प्रिंसिपल, वाइस–कैप्टन, वाइस चांसलर
असिस्टेंट	असिस्टेंट	असिस्टेंट–इंजीनियर, असिस्टेंट–कलेक्टर
चीफ	चीफ	चीफ मिनिस्टर,चीफ इंजीनियर, चीफ सेक्रेटरी
हैड	हैड	हैड मास्टर, हैड क्लर्क, हैड कांस्टेबल
जनरल	जनरल	जनरल मैनेजर, जनरल मर्चेंट, जनरल स्टोर

2. प्रत्यय क्या है ?

भाषा के वे सार्थक खंड जो शब्द के अंत में जुड़ कर नए–नए शब्दों का निर्माण करते हैं उन्हें प्रत्यय कहा जाता है। किंतु आधुनिक भाषा–विज्ञान के अनुसार प्रत्यय एक व्यापक शब्द है, जिसके अंतर्गत शब्द के आरंभ में लगने वाले प्रत्यय (उपसर्ग) भी आते हैं और अंत में लगने वाले प्रत्यय भी। शब्द के आरंभ में जो प्रत्यय (उपसर्ग) लगाए जाते हैं, उन्हें पूर्व–प्रत्यय कहा जाता है। जबकि कि जो प्रत्यय शब्द के अंत में लगाए जाते हैं उन्हें, अन्त्य प्रत्यय कहते हैं।

प्रत्यय के भेद

प्रत्यय के दो प्रमुख भेद होते हैं–

1.कृत् प्रत्यय

2.तद्धित प्रत्यय

कृत् प्रत्यय

1. **कृत् प्रत्यय–** जो प्रत्यय धातु–रूप के अंत में जुड़ कर नए शब्दों की रचना करते हैं, वे 'कृत् प्रत्यय' कहलाते हैं।

जैसे– भिड़+अंत (भिड़ंत), सुन+आई (सुनाई), मिल+आप (मिलाप) आदि।

प्रत्यय	मूल शब्द धातु व उनसे बनने वाले शब्द
अक्कड़	घूम–घुमक्कड़, भूल–भुलक्कड़ , पी–पियक्कड़
अनिया	दर्श–दर्शनीय, पठ्–पठनीय, स्मर–स्मरणीय
आ	समझ–समझा, पढ़–पढ़ा, खेल–खेला, लिख–लिखा
आई	लड़–लड़ाई, पढ़–पढ़ाई, चढ़–चढ़ाई, कमा–कमाई
आन	उड़–उड़ान, लग–लगान, मिल–मिलान
आव	बह–बहाव, कट–कटाव, फैल–फैलाव
आकू	पढ़–पढ़ाकू, लड़–लड़ाकू, उड़–उड़ाकू
आऊ	टिक–टिकाऊ, बिक–बिकाऊ, कमा–कमाऊ
आवट	लिख–लिखावट, थक–थकावट, सज–सजावट, बन–बनावट
आलू	झगड़ा–झगड़ालू, दया–दयालु, कृपा–कृपालु।
आहट	घबरा–घबराहट, चिल्ला–चिल्लाहट,मुस्करा–मुस्कराहट
औना	बिछ–बिछौना, खेल–खिलौना।
आवा	दिख–दिखावा, भूला–भुलावा, पहन–पहनावा, छल–छलावा
अंत	रट–रटंत, गढ़–गढ़त, भिड़–भिड़ंत ।
इत	कथ–कथित, हर्ष–हर्षित, तरंग–तरंगित, पुष्प–पुष्पित
इयल	मर–मरियल, सड़–सडियल, अड–अड़ियल ।
इया	बढ़–बढ़िया, घट–घटिया, उड़–उड़िया, दुख–दुखिया।
ई	हँस–हँसी, बोल–बोली, रेत–रेती, धमक–धमकी

ऊ	खा–खाऊ, झाड–झाड़ू चाल–चालू।
ऐया	गा–गवैया, नाच–नचौया, खा–खवैया।
क	लिख–लेखक, पठ–पाठक, पाल–पालक,
नी	कर–करनी, भर–भरनी, ओढ़–ओढ़नी,
हार	रखना–राखनहार, चित्र–चित्रहार, पालना–पालनहार

तद्धित प्रत्यय

वे प्रत्यय, जो संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण के साथ मिलकर नए शब्दों का निर्माण करते है, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय	मूल शब्द धातु व उनसे बनने वाले शब्द
आ	भूख–भूखा, शिष्य–शिष्या, मैल–मैला, ठंड–ठंडा, ऊँच–उँचा
आई	भला–भलाई, चतुर–चतुराई, मीठा–मिठाई।
आइन	पंडित–पंडिताइन, बाबू–बबुआइन, ठाकुर–ठकुराइन।
आनी	देवर–देवरानी, जेठ–जेठानी, सेठ–सेठानी, मेहतर–मेहतरानी।
आर	सोना–सुनार, लोहा–लुहार।
ई	चाचा–चाची, धन–धनी, तेल–तेली, लालच–लालची
इक	समाज–सामाजिक, धर्म–धार्मिक, नीति–नैतिक, दिन–दैनिक, पक्ष–पाक्षिक।
इत	गर्व–गर्वित, हर्ष–हर्षित, शोभा–शोभित, पुष्प–पुष्पित
ईन	कुल–कुलीन, ग्राम–ग्रामीण, नमक–नमकीन,
इन	माली–मालिन, तेली–तेलिन, पुजारी–पुजारिन, कहा–कहारिन
ईय	भारत–भारतीय, जाति–जातीय, शासक–शासकीय, स्वर्ग–स्वर्गीय ।

विदेशी प्रत्यय

प्रत्यय	मूल शब्द धातु व उनसे बनने वाले शब्द
अंदाज	गोल–गोलंदाज, तीर–तीरंदाज ।
ई	आसमान–आसमानी, आमदन–आमदनी, यार–यारी, ईद–ईदी,गरीब–गरीबी।
खाना	दवा–दवाखाना, गरीब–गरीबखाना, दौलत–दौलतखाना,
गर	सौदा–सौदागर, काम–कामगर, जादू–जादूगर, कार्य–कारीगर।
दार	ईमान–ईमानदार, दुकान–दुकानदार, आब–आबदार।
बाज	दगा–दगाबाज , पतंग–पतंगबाज, चाल–चालबाज, धोखा–धोखेबाज ।
मंद	दौलत–दौलतमंद, अक्ल–अक्लमंद, जरूरत–जरूरतमंद।
साज	घड़ी– घड़ीसाज, जाल–जालसाज, जिल्द–जिल्दसाज ।

अभ्यास कार्य

1. **निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय छाँटकर लिखिए–**

शब्द	प्रत्यय
व्यापारी	————
बनावट	————
नम्रता	————
रिश्वतखोर	————
आदमियत	————
निर्दयता	————

2. **निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थान कोष्ठक में दिए शब्दों में प्रत्यय लगाकर भरिए–**

(क) आज हमारे देश में————————बढती जा रही है। (महँगा)
(ख) पर्वतों की————————कठिन होती है। (चढ़)
(ग) मैं ————————लोगों को पसंद नहीं करता (झगड़ा)
(घ) ———————— के लिए खेद है।(रुक)
(ङ) लंबी ————————झेलने के बाद वह आज मृत्यु को प्राप्त हो गया (बीमार)

3. **निम्न उपसर्गों से दो–दो शब्द बनाइए–**

वि ————
उत् ————
निर ————
अ ————
अनु ————

4. **मूलशब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए –**

साहित्यकार, घबराहट, वैज्ञानिक, लड़कपन, नागरिकता, प्रतिनिधित्व।

मूलशब्द	————	————	————	————	————	————
प्रत्यय	————	————	————	————	————	————

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिये।

1. उपसर्ग की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।
2. प्रत्यय से क्या अभिप्राय है ? उदाहरण सहित समझाइए।
3. प्रत्यय के कितने भेद हैं ? लिखिए।

अध्याय- 16. अशुद्ध वाक्यों का संशोधन

(Correction of Incorrect Sentences)

व्याकरणिक नियमों की जानकारी के अभाव में वाक्य-रचना में अशुद्धियाँ हो जाती हैं। वाक्य रचना मे सामान्यत:निम्नलिखित:अशुद्धियाँ पाई जाती है।

- लिंग तथा वचन संबंधी अशुद्धियाँ
- कारक संबंधी अशुद्धियाँ
- सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ
- क्रिया और क्रियाविशेषण संबंधी अशुद्धियाँ
- अधिक पद संबंधी अशुद्धियाँ
- पदक्रम की अशुद्धियाँ
- अन्य अशुद्धियाँ

1. लिंग तथा वचन संबंधी अशुद्धियाँ

क्रम	अशुद्ध-वाक्य	शुद्ध-वाक्य
1	यह कवयित्री विद्वान है।	यह कवयित्री विदुषी हैं।
2	अध्यापक ने पुस्तक पर हस्ताक्षर कर दिया है।	अध्यापक ने पुस्तक पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।
3	रामायण सीरियल नब्बे दिन तक चला।	रामायण सीरियल नब्बे दिनों तक चला।
4	तुम्हारी बात सुनते-सुनते मैं बोर हो गया।	तुम्हारी बातें सुनते-सुनते मैं बोर हो गया।
5	घायल का प्राण निकल गया।	घायल के प्राण निकल गए।
6	अपनी बर्खास्तगी का समाचार सुनकर मेरा होश उड़गए।	अपनी बर्खास्तगी के समाचार सुनकर मेरे होश उड़ गए।
7	वह बाज़ार गए।	वे बाजार गए।
8	रमेश का कमीज़ फट गया है।	रमेश की कमीज फट गई है।
9	मैं आपका दर्शन करने आया हूँ।	मैं आपके दर्शन करने आया हूँ।
10	उसके अंग-अंग काटे गए।	उसका अंग-अंग काटा गया।

2. **कारक-संबंधी अशुद्धियाँ**

क्रम	अशुद्ध-वाक्य	शुद्ध-वाक्य
1	पिताजी कार पर आए हैं।	पिताजी कार से आए हैं।
2	दुकान की दाईं ओर मंदिर है।	दुकान के दाईं ओर मंदिर है।
3	मैंने भी खाना है।	मुझे भी खाना है।
4	सड़क में मत भागो।	सड़क पर मत भागो।
5	घर पर सब कुशलपूर्वक हैं।	घर में हम सब कुशलपूर्वक हैं।
6	छत पर से नीचे मत झाँको ।	छत से नीचे मत झाँको।
7	उसने मुझे लिखने को पैन दिया।	उसने मुझे लिखने के लिए पैन
8	सावित्री ने पत्र को लिखा।	सावित्री ने पत्र लिखा।

सर्वनाम -संबंधी अशुद्धियाँ

क्रम	अशुद्ध-वाक्य	शुद्ध-वाक्य
1	मैंने मेरे को सुधार लिया है।	मैंने अपने आप को सुधार लियाहै।
2	मैं तेरे को बहुत पीटूँगा।	मैं तुझे बहुत पीटूँगा।
3	वह, तुम और हम बाज़ार जाएँगे।	हम, तुम और वह बाज़ार जाएँगे।
4	तुझको कुछ नहीं पता।	तुझे कुछ नहीं पता।
5	यह खरबूजा सस्ते हैं।	ये खरबूजे सस्ते हैं।
6	अपने से यह काम नहीं होगा।	मुझसे यह काम नहीं होगा।
7	बाहर कुछ खड़ा है।	बाहर कोई खड़ा है।
8	मैंने मेरा कमरा धो लिया।	मैंने अपना कमरा धो लिया।
9	माँ! मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है	माँ! मुझे आपकी बहुत याद आती है।
10	मेने खाना नहीं खाना।	मुझे खाना नहीं खाना।

विशेषण -संबंधी अशुद्धियाँ

क्रम	अशुद्ध-वाक्य	शुद्ध-वाक्य
1	अंगूर बहुत खट्टी है।	अंगूर बहुत खट्टे हैं।
2	किसी और लड़के को बुलाओ।	किसी दूसरे लड़के को बुलाओ।
3	वह लोग आ गए हैं।	वे लोग आ गए हैं।
4	वह गुणवान स्त्री है।	वह गुणवती स्त्री है।
5	एक चौड़े मैदान में मेला लगा था।	एक विशाल मैदान में मेला लगा था।
6	मैं नया मोटर खरीदूँगा।	मैं नई मोटर खरीदूँगा।
7	सोनू को बहुत सदमा लगा।	सोनू को भारी सदमा लगा।
8	तालाब बहुत नीचा था।	तालाब बहुत गहरा था।
9	प्रतीक ने निरर्थक भूल की थी।	प्रतीक ने भारी भूल की थी।
10	प्रत्येक को दो-दो पुस्तकें दीजिए।	प्रत्येक को दो पुस्तकें दीजिए।

क्रिया -संबंधी अशुद्धियाँ

क्रम	अशुद्ध-वाक्य	शुद्ध-वाक्य
1	जब भी जागें तभी सवेरा।	जब जागो तभी सवेरा।
2	आप अपना हस्ताक्षर कर दो।	आप अपने हस्ताक्षर कर दो।
3	तुमने भोजन क्यों नहीं करा?	तुमने भोजन क्यों नहीं किया?
4	कृपया खाना खा लो।	कृपया खाना खा लीजिए।
5	वह दंड देने योग्य है।	वह दंड पाने योग्य है।
6	उसने हाथ जोड़ा।	उसने हाथ जोड़े।
7	आप कहो।	आप कहिए।
8	यह काम मैंने करा है।	यह काम मैंने किया है।
9	उसने मुझे गालियाँ निकालीं।	उसने मुझे गालियाँ दीं।
10	हम उसे मदद देना चाहते है।	हम उसकी मदद करना चाहते हैं।

अधिक पद संबंधी अशुद्धियाँ

क्रम	अशुद्ध-वाक्य	शुद्ध-वाक्य
1	मेले में कोई लगभग पचास कर्मचारी थे।	मेले में कोई पचास कर्मचारी थे।
2	पहाड़ों पर कई दर्शनीय स्थल देखने योग्यहैं।	पहाड़ों पर कई दर्शनीय स्थल हैं।
3	मोहन वापस घर लौट आया है।	मोहन घर लौट आया है।
4	हरीश सज्जन पुरुष हैं।	हरीश सज्जन है।
5	मैंने केवल एक ही चपाती खाई।	मैंने केवल एक चपाती खाई।

पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ.

क्रम	अशुद्ध-वाक्य	शुद्ध-वाक्य
1	एक जग दूध से भरा लाओ।	दूध से भरा एक जग लाओ।
2	हनुमान पक्के राम भक्त थे।	हनुमान राम के पक्के भक्त थे।
3	कृपया ड्राइवर बस धीरे चलाएँ।	ड्राइवर कृपया बस धीरे चलाएँ।
4	बच्चे को बोतल में डालकर दूध पिलाओ	बच्चे को दूध बोतल में डालकर पिलाओ।
5	वह पागल जानवर हो गया।	वह जानवर पागल हो गया।
6	महात्मा गांधी का देश सदा कृतज्ञ रहेगा	देश, महात्मा गांधी का सदा कृतज्ञ रहेगा।
7	सारे स्कूल के छात्र परिश्रमी हैं।	स्कूल के सारे छात्र परिश्रमी हैं।
8	जिसने हत्या की है, उस हत्यारे को फाँसी पर चढ़ा दो।	जिस हत्यारे ने हत्या की है, उसे फाँसी पर चढ़ा दो
9	सपना को काटकर केक खिलाओ।	सपना को केक काटकर खिलाओ।
10	शुद्ध गाय का दूध पीना चाहिए।	गाय का शुद्ध दूध पीना चाहिए।

अन्य अशुद्धियाँ

क्रम	अशुद्ध-वाक्य	शुद्ध-वाक्य
1	लक्ष्मीबाई वीर नारी थीं।	लक्ष्मीबाई वीरांगना थीं।
2	वह रोती-रोती सो गई।	वह रोते-रोते सो गई।
3	उसने कहा कि मैं घर जा रहा था।	उसने कहा कि वह घर जा रहा था।
4	यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है।	यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है।
5	एक पानी का गिलास लाओ।	एक गिलास पानी लाओ।
6	पिछले रविवार को कौन-सा तिथि था?	पिछले रविवार को कौन-सी तिथि थी?
7	मेरी बात को भली प्रकार सुनो।	मेरी बात को भली-भाँति सुनो।
8	कक्षा में शांति थी, केवल संजय औरअनूप ही लड़ते हुए मिले।	कक्षा में शांति थी, केवल संजय और पवनअनूप लड़ते हुए मिले।
9	उसके समय का अधिकांश भाग गपशप में व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है।	उसका समय गपशप में नष्ट हो जाता है।
10	वही सच्चा देशभक्त है जो तन से, म धन से देश की सेवा करता है।	सच्चा देशभक्त वही है, जो तन, मन, धन से देश की सेवा करता है।

अभ्यास कार्य

1. नीचे दिए गए वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखिए-

(क) वहाँ अनेकों लोग उपस्थित थे। ---------- (ख) मैं आपका दर्शन करने आया हूँ। ----------

(ग) पुस्तक पर नहीं लिखो। ---------- (घ) उसका प्राण निकल गया। ----------

ङ) वसंत ऋतु सुहावना होता है। ---------- (च) हमने कल देहरादून जाना है। ----------

2. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध के सामने (√) का और अशुद्ध के सामने (x) का चिह्न लगाइए-

क. क्या आपने भोजन किया है। ( )

ख. राम जल को पिएगा। ( )

ग. मुझे प्रातः टहलना' अच्छा लगता है। ( )

घ. एक फूलों की माला ले आइए। ( )

ङ. आप ईश्वर के पक्के भक्त हैं। ( )

च. सौ रुपया में क्या आता है। ( )

छ. देश महात्मा गांधी का सदा आभारी रहेगा।( )

ज. अध्यापक घर गया और सो गया। ( )

3. वाक्य के रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त शब्द वाला विकल्प चुनिए -

क. ---------चाचाजी बहुत अच्छे हैं। (मेरा, मेरी,मेरे)

ख. पिताजी ने हस्ताक्षर कर------- (दिया है, दिए हैं,दी हैं)

ग. पेड़ ----कबूतर बैठे हैं। (ऊपर, में, पर)

घ. सीता ---- केक काट कर खिलाओ (का को के)

ड. मोहन ----लौट आया है। (घर मे, घर, घर का)

अध्याय-17.

संधि (JOINING)

'संधि' संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है- 'मेल' । जब दो अक्षर (वर्ण) मिलकर एक नया अक्षर बनाते हैं तो उस विकार (रूप परिवर्तन) को संधि कहते हैं।
जैसे–

विद्या + आलय = विद्यालय
(अ + आ = आ)
पुस्तक + आलय = पुस्तकालय
(आ + आ = आ)

यहाँ 'पुस्तक' के अंत में आया 'अ' तथा 'आलय' के आरंभ में आया 'आ' मिलकर 'आ' हो गया। इसी प्रकार 'विद्या'के अंत में आया 'आ' तथा 'आलय' के आरंभ में आया 'आ' मिलकर 'आ' हो गया है।

दो अक्षरों के परस्पर मेल से जो विकार होता है, उसे संधि कहते हैं।

संधि-विच्छेद - विच्छेद का अर्थ है- अलग करना। संधि के नियमों द्वारा मिले अक्षरों को फिर से पहली वाली अवस्था (पृथक कर देना) मे ले आने को संधि -विच्छेद कहते हैं।
जैसे- हिमालय = हिम + आलय
छात्रावास = छात्र + आवास

संधि के भेद

संधि तीन प्रकार की होती हैं-

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

1. स्वर संधि

स्वर संधि में स्वर से स्वर का मेल होता है।
जैसे-देव + इंद्र में 'अ + इ' का संयोग होने पर नया शब्द 'देवेंद्र' बनता है।

स्वर संधि के पाँच भेद हैं-

(क) दीर्घ संधि
(ख) गुण संधि
(ग) वृद्धि संधि
(घ) यण संधि
(ग) अयादि संधि

(क) दीर्घ संधि

किसी स्वर के ह्रस्व या दीर्घ रूप के बाद यदि उसी स्वर का ह्रस्व या दीर्घ रूप आए तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। इसे दीर्घ संधि कहते हैं।

ह्रस्व	दीर्घ
अ, इ, उ, ऋ	आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

दीर्घ संधि के उदाहरण-

1. अ + अ = आ

भाव + अर्थ = भावार्थ
सार + अंश = सारांश
राम + अवतार = रामावतार

2. अ + आ = आ

शिव + आलय = शिवालय
स + आकार = साकार
देव + आलय= देवालय

3. आ + ए = आ

विद्या + अर्थ = विद्यार्थी
सीमा + अंत = सीमांत
शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी
रेखा + अंश = रेखां

4. आ + आ = आ

महा + आत्मा = महात्मा
वार्ता + आलाप = वार्तालाप
विद्या + आलय = विद्यालय

5 इ + इ = ई

रवि + इंद्र = रवीन्द्र
कवि + इंद् = कवींद्र
मुनि + इंद्र = मुनि
गिरी + इंद्र = गिरींद्र

6. इ + ई = ई

मुनि + ईश = मुनीश
कपि + ईश = कपीश
गिरि + ईश = गिरीश
हरि + ईश = हरीश

7. ई + इ = ई

नारी + इंदु = नारींदु
मही + इंद्र = महींद्र
लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा

8. ई + ई = ई

सती + ईश = सतीश
रजनी + ईश = रजनीश
नदी + ईश = नदीश
नारी + ईश = नारीश

9. उ + उ = ऊ

भानु + उदय = भानूदय
सु + उक्ति = सूकि
गुरू + उपदेश = गुरूपदेश
लघु + उत्तर = लघूत्तर

10. उ +ऊ = ऊ

लघु + ऊर्मि = लघूर्मि
साधु + ऊर्जा = साधूर्जा

11. ऊ +उ = ऊ

वधू +उत्सव = वधूत्सव
भू + उत्सर्ग = भूत्सर्ग

12. ऊ + ऊ = ऊ

भू + ऊष्मा = भूष्मा
वधू + ऊर्जा = वधूर्जा

ख) गुण संधि

यदि ह्रस्व या दीर्घ अ/आ के आगे ह्रस्व या दीर्घ इ, ई, उ, ऊ, ऋ आएँ, तो उनके स्थान पर क्रमशः 'ए', 'ओ', 'अर्' हो जाते हैं।

अ + इ = ए
राज + इंद्र = राजेंद्र
सुर + इंद्र = सुरेंद्र
शुभ + इच्छा = शुभेच्छा
भारत + इंदु = भारतेंदु

आ + ई = ए
उमा + ईश = उमेश
महा + ईश्वर = महेश्वर
रमा + ईश = रमेश

आ+ इ = ए
यथा + इष्ट = यथेष्ट
महा + इंद्र = महेंद्र
राजा +इंद्र = राजेंद्र

अ + ई = ए
परम + ईश्वर = परमेश्वर
गण + ईश = गणेश
सुर + ईश = सुरेश

अ + उ = ओ
वीर + उचित = वीरोचित
उत्तर + उत्तर = उत्तरोत्तर
पर + उपकार = परोपकार

अ + ऊ = ओ
जल + ऊर्मि = जलोर्मि
नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा
सागर + ऊर्मि = समुद्रोर्मि

आ + उ = ओ
यथा + उचित = यथोचित
महा + उदय = महोदय
महा + उत्सव = महोत्सव

आ + ऊ = ओ
दया + उर्मि = दयोर्मि
गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि
महा + ऊष्मा = महोष्मा

अ/आ + ऋ = अर्
देव + ऋषि = देवर्षि
ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि
राज+ ऋषि = राजर्षि

वृद्धि संधि

यदि ह्रस्व या दीर्घ अ/आ के आगे ह्रस्व या दीर्घ ए, ओ, ऐ, औ आएँ, तो उनके स्थान पर क्रमशः 'ऐ' और 'औ' हो जाते हैं।

अ + ए = ऐ
एक + एक = एकैक
जीव + एषणा = जीवैषणा
लोक + एषणा =लोकैषणा

आ + ए = ऐ
सदा + एव = सदैव
तथा + एव = तथैव

अ + ऐ = ऐ
मत + ऐक्य = मतैक्य
धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य
लोक + एश्वर्या = लोकैश्वर्य

आ + ऐ = ऐ
महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
माता + ऐश्वर्य = मातैशवर्य

अ +ओ = औ
परम + ओज = परमौज
दंत + ओष्ठ = दंतौष्ठ
जल + ओघ = जलौघ

आ + ओ = औ
महा + ओजस्वी = महौजस्वी
महा + ओज = महौज

अ + औ = औ
परम + औदार्य = परमौदार्य
वन + औषध = वनौषध

आ + औ = औ
महा + औषध = महौषध
महा + औदार्य = महौदार्य

घ) यण् संधि

जब ह्रस्व अथवा दीर्घ 'इ', 'उ' अथवा 'ऋ' के उपरांत कोई भिन्न स्वर हो तो इनके पारस्परिक संयोग से इनके स्थान पर क्रमशः 'य्', 'व्' और 'अर्' हो जाता है, यह 'यण् **संधि**' कहलाती है।

जैसे-

इ + अ = य
अति + अधिक = अत्यधिक
यदि + अपि = यद्यपि
गति + अवरोध = गत्यवरोध

इ + आ = या
वि + आकुल = व्याकुल
इति + आदि = इत्यादि
अति + आचार = अत्याचार

इ + उ = यु
अभि + उदय = अभ्युदय
अति + उत्तम= अत्युत्तम
प्रति + उपकार = प्रत्युपकार

इ + ए = ये
प्रति + एक = प्रत्येक
अधि+एषणा= अध्येषणा

ई + अ = य
दासी + अपराध = दास्यपराध
देवी+अर्पण=देव्यर्पण

ई + आ = या
सखी + आगमन = सख्यागमन
देवी + आलय= देव्यालय
देवी + आगम = देव्यागम

ई+ऐ = यै
देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य

उ + अ = व
सु +अच्छ = स्वच्छ
सु + अल्प =स्वल्प
उ + आ = वा
सु + आगत= स्वागत

उ + इ = वि
अनु + इति= अन्विति
उ + ए= वे
प्रभु + एषणा = प्रभ्वेषणा
ऊ + आ= वा
भू + आदि = भ्वादि

ऋ + आ = रा
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

ऋ + उ= रु
पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश
ऋ + इ= रि
मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा

5. **अयादि संधि**-जब 'ए', 'ऐ' तथा 'ओ', 'औं' का संयोग इनसे भिन्न स्वरों से किया जाता है तब क्रमशः 'अय', 'अव' तथा 'भाव' हो जाता है। इस प्रकार अय + आदि 'अयादि' संधि कहलाती है। जैसे-

ए + अ = अय
शे + मन = शयन
ने+ मन = नयन

ऐ + अ = आय
शे + अर= शायर
ने+ मन= नयन

ओ + अ = अव
पो+ अन = पवन
भो+अन= भवन

औ + अ = आव
धौ + अक= धावक
पौ+ मन= पावन

ओ + इ = अवि
पो + इत्र = पवित्र
भो+ ईष्य= भविष्य

औ + इ = आवि
नौ+ इक= नाविक
औ + उ = आवु
भौ+ उक= भावुक

2. व्यंजन संधि

व्यंजन का किसी अन्य व्यंजन अथवा स्वर से संयोग होने पर जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे 'व्यंजन संधि' कहते हैं। जैसे-

वाक् + ईश = वागीश
सत् + जन = सज्जन
व्यंजन संधि के कुछ नियम

व्यंजन संधि के नियम इस प्रकार हैं-

(क) किसी वर्ग के प्रथम वर्ण क, च, ट, त, प का मेल किसी स्वर या य, र, ल, व के साथ होने पर वर्ग का प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। जैसे-क = ग्, च = ज्, ट = ड्, त = द्, प = ब आदि।

क = ग
वाक् + दान = वाग्दान
दिक् + अम्बर = दिगम्बर

च = ज
अच् + अंत = अजंत
अच् + एय = अजेय

ट = ड
षट् + आनन = षडानन
षट् + दर्शन = षड्दर्शन

त = द
सत् + ऐव = सदैव
जगत् + ईश = जगदीश

प = ब
अप्+ज=अब्ज
अप् + ज = अब्ज

जब किसी वर्ग के प्रथम वर्ग का संयोग किसी आनुनासिक वर्ण के साथ होता है तब प्रथम वर्ण वर्ग के पाँचवे वर्ण में बदल जाता है। जैसे-

क = ङ च = ञ ट = ण त = न प = म
क = ङ्

वाक् + मय = वाङ्मय
च = ञ्
अच + नाश = अञ्नाश
ट = ण्
षट् + मुख = षण्मुख
त = न्

तत् + मय = तन्मय
प = म्
अप + मय = अम्मय

(ग) त' वर्ण संबंधी नियम

(i) 'त' या 'द' का संयोग च या छ के साथ होने पर च हो जाता है।
त + च = च्च
सत्+ चरित्र= सच्चरित्र
त + छ = च्छ
उत् + चरित = उच्चारित
उत् + छिन्न = उच्छिन
जगत् + छाया = जगच्छाया

(ii) त का संयोग ज या झ से होने पर ज में परिवर्तित होना
त + ज = ज्ज
सत् + जन = सज्जन
उत् + ज्वल = उज्जवल

(iii) त के साथ ट या ढ जुड़ने पर ट् में परिवर्तन
त + ट = ट्ट
तत + टीका = तट्टीका

(iv) त का मेल ड या ढ के साथ होने पर ड् में परिवर्तन
त + ड = ड्ड
उत् + डयन = उड्डयन

(v) त + ल + ल्ल
तत् + लीन = तल्लीन
उत् + लास = उल्लास

(vi) त या द के बाद ह होने पर त द और ह = ध
उत + हत = उदधत,
पद + गति = पद्धति

'म' वर्ण संबंधी नियम

(i) म के साथ क से म तक किसी भी व्यंजन के संयोग होने पर वर्ण के वर्ग का पंचमाक्षर या पंचमवर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) हो जाता है।

जैसे-

सम् + गति = संगति (संङगति)
सम + चय = संचय (सञ्चय)
सम + तोष = संतोष (सन्तोष)
सम + मान = सम्मान
परि + नाम = परिणाम
ऋ + न = ऋण

(ii) म के बाद य, र, ल, व, श, स, ष ह आने पर म अनुस्वार (-) हो जाता है। जैसे-

सम् + योग = संयोग
सम् + रक्षक = संरक्षक
सम + लग्न = संलग्न
सम् + वाद = संवाद
सम् + शय = संशय
सम + सार = संसार
सम् + हार = संहार

3. विसर्ग संधि

स्वर या व्यंजनों के साथ विसर्ग (:) के संयोग से जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे-

निः + रोग = निरोग
अंतः + आत्मा = अंतरात्मा

विसर्ग संधि के नियम इस प्रकार हैं-

(क)विसर्ग (:) का श, ष, स में परिवर्तन

(i) **(:) + च या छ = श**
(ii) (:) + क, ख, ट, ठ, ढ, प, फ= ष
(iii) (:) + त या थ = स

निः + छल = निश्छल
निः + फल = निष्फल
नमः + ते = नमस्ते
निः+ चित= निश्चित
निः+ क्रिय= निष्क्रिय
निः+ तेज= निष्तेज

(ख) विसर्ग (:) का 'र' में परिवर्तन

जब विसर्ग से पूर्व 'अ' 'आ' के अतिरिक्त अन्य स्वर हो और विसर्ग के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का परिवर्तन 'र' में हो जाता है। जैसे-

निः + जन = निर्जन
दुः+ जन = दुर्जन
निः + मल = निर्मल
दुः+ गुण= दुर्गुण
निः + भर = निर्भर
नि:+ उत्तर = निरूत्तर
दुः + आचार = दुराचार
निः + अर्थक = निरर्थक

(ग) विसर्ग का ओ में परिवर्तन

जब विसर्ग के बाद य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग ओ में परिवर्तित हो जाता है तथा किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण होने पर भी ओ हो जाता है।

मन + योग =मनोयोग
मनः + रथ = मनोरथ
मनः + रंजन = मनोरंजन
मन + विकार = मनोविकृति
तपः + वन = तपोवन
मनः + नीत = मनोनीत
वय:+वृद्धि = वयोवृद्ध
मन+ भाव = मनोभाव

(घ) विसर्ग का लोप होना

जब विसर्ग से पहले आ के अतिरिक्त अन्य स्वर हो और विसर्ग के बाद र हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे- नि:+ रस = नीरस
नि:+ रज = नीरज

अभ्यास कार्य

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. संधि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. संधि के कितने भेद हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण लिखिए।
3. स्वर संधि किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं?
4. व्यंजन संधि की परिभाषा लिखिए।
5. यण संधि और अयादि संधि में अंतर स्पष्ट कीजिए।

ख.संधि कीजिये—

सत्य + आग्रह _____
नारी + ईश्वर _____
उत + चरण _____
एक + एक _____
दुः + जन _____
मातृ +आजा _____
नदी + ईशा _____
सु + उक्ति _____
जगत् + नाथ _____
उपरि + उक्त _____
उत + उज्ज्वल _____
दिक् + अंबर _____
यह + आदि _____

ग नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न लगाओ।

1. व्याकरण में संधि का अर्थ है-

(क) शब्दों का मेल
(ख) मात्राओं का मेल
(ग) वर्णों का मेल
(घ) इनमें से कोई नहीं

2. संधि के मुख्य रूप से भेद होते हैं-

(क) तीन
(ख) दो

(ग) पाँच
(घ) चार

3. स्वर संधि कहलाता है-

(क) स्वर + व्यंजन का मेल
(ख) व्यंजन + स्वर का मेल
(ग) स्वर + स्वर का मेल
(घ) स्वर + विसर्ग का मेल

4. व्यंजन तथा स्वर, स्वर तथा व्यंजन, व्यंजन तथा व्यंजन के मेल होने से उत्पन्न परिवर्तन को कहते हैं-

(क) स्वर संधि
(ख) विसर्ग संधि
(ग) व्यंजन संधि
(घ) गुण संधि

5. विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो परिवर्तन आता है, उसे कहते हैं-

(क) व्यंजन संधि
(ख) विसर्ग संधि
(ग) स्वर संधि
(घ) दीर्घ संधि

घ. संधि विच्छेद कीजिए :

अत्यधिक ____+____
यद्यपि ____+____
अत्याचार ____+____
तपोवन ____+____
जगदीश ____+____
तल्लीन ____+____
सच्चरित् ____+____
मनोयोग ____+____

अध्याय 18
समास Compound

दो या दो से अधिक पदों के मेल से जब नए यौगिक शब्द बनते हैं तो इस प्रक्रिया को समास कहते हैं। जैसे- घोड़े पर = घुड़सवार; शिव का आलय (घर) = शिवालय, राजा की कन्या = राजकन्या आदि।

,1.इस प्रकार बने शब्द समस्त पद कहलाते हैं।

2.समास के दोनों पदों को क्रमशः पूर्व पद तथा उत्तर पद कहते हैं; जैसे- भूमिपुत्र, शब्द में पूर्व पद 'भूमि' तथा उत्तर पद 'पुत्र' है।

3.समस्त पद या सामासिक शब्द बनाते समय दोनों शब्दों के बीच की विभक्तियों, अन्य शब्दों या योजक आदि अव्यय शब्दों का लोप हो जाता है।

4.समस्त पद या तो मिलाकर लिखे जाते हैं, या योजक-चिह्न लगाकर लिखे जाते हैं; जैसे- रसोईघर, राजा-रंक -भला -बुरा आदि।

समास-विग्रह–समस्तपदों को अलग-अलग करने की क्रिया को समास-विग्रह कहते हैं।जैसे-

समस्तपद	समास-विग्रह
पाठशाला	पाठ के लिए शाला
शरणागत	शरण में आगत
युद्ध-भूमि	युद्ध के लिए भूमि

समास के भेद

समास के छः भेद होते हैं-

1.अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुव्रीहि समास

अव्ययीभाव समास

जिस समास में पहला पद अव्यय हो तथा उसके योग से समस्त पद अव्यय बन जाए, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इस समास में मुख्य रूप से- आ, भर, नि, अन, यथा, प्रति, बे, बा, ब आदि अव्यय शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे-

समस्त पद	विग्रह
अनजाने	जाने बिना
आजन्म	जन्म भर
आमरण	मरण तक
बेखटके	खटके के बिना
बेआराम	आराम के बिना
बाकायदा	कायदे के अनुसार
रातोंरात	रात ही रात में
बीचोंबीच	बीच ही बीच में
यथासंभव	जैसा संभव हो
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
प्रतिदिन	दिन-दिन
भरसक	पूरी शक्ति से

2. **तत्पुरुष समास -** जिस समास में दूसरा पद (उत्तर पद) प्रधान होता है तथा विग्रह करने पर कर्ता और संबोधन कारक को छोड़कर अन्य कारक आते हैं; उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
तत्पुरुष समास में प्रायः पहला पद संज्ञा और दूसरा पद संज्ञा या विशेषण होता है।

तत्पुरुष समास के निम्नलिखित छः भेद होते हैं -

क. कर्म तत्पुरुष
ख. करण तत्पुरुष
ग. संप्रदान तत्पुरुष
घ. अपादान तत्पुरुष
ङ. संबंध तत्पुरुष
च. अधिकरण तत्पुरुष

1.)कर्म तत्पुरुष- इसमें कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है-

सामासिक शब्द	**विग्रह**
स्वर्गप्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त
यशप्राप्त	यश को प्राप्त

2.करण तत्पुरुष - इसमें करण कारक की विभक्ति 'से', 'द्वारा' का लोप हो जाता है-

सामासिक शब्द	**विग्रह**
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
शोकाकुल	शोक से आकुल

3) संप्रदान तत्पुरुष - इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप हो जाता है-

सामासिक शब्द	**विग्रह**
शयनकक्ष	शयन के लिए कक्ष
पाठशाला	पाठ के लिए शाला

4) अपादान तत्पुरुष- इसमें अपादान कारक की विभक्ति 'से' का लोप हो जाता है-

सामासिक शब्द	**विग्रह**
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
कामचोर	काम से जी चुरानेवाला

5) संबंध तत्पुरुष- इसमें संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'की', 'के' का लोप हो जाता है

सामासिक शब्द	**विग्रह**
सेनानायक	सेना का नायक
राजमहल	राजा का महल

6) अधिकरण तत्पुरुष- इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति 'में, 'पर' का लोप हो जाता है-

सामासिक शब्द	**विग्रह**
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
घुड़सवार	घोड़े पर सवार

कर्मधारय समास

जिस समास के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमेय-उपमान का संबंध होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इसमें उत्तर पद प्रधान होता है; जैसे-

समस्त पद	विग्रह
कृष्ण सर्प	कृष्ण (काला है) जो सर्प
नीलगाय	नीली है जो गाय
चंद्रमुख	चंद्रमा के समान मुख
कमलनयन	कमल के समान नयन
विद्याधन	विद्या रूपी धन
महाराजा	महान है जो राजा
पीतांबर	पीत है जो अंबर (वस्त्र)
भलामानस	भला है जो मानस
नीलांबर	नीला है जो अंबर (आकाश)
नीलकंठ	नीला है जो कंठ

4. द्विगु समास

जिस समास में पहला पद संख्यावाची होता है तथा समस्त पद समूह का अर्थ बताता है, उसे द्विगु समास कहते हैं; जैसे

समस्त पद	विग्रह
त्रिफला	त्रि (तीन) फलों का समूह
सप्ताह	सप्त (सात) सात (दिनों) का समूह
पंचतत्व	पंच (पाँच) तत्वों का समूह
नवरत्न	नव (नौ) रत्नों का समूह
शताब्दी	शत (सौ) शब्दों का समाहार
पंचवटी	पंच (पाँच) वट (वृक्षों) का समूह
त्रिमूर्ति	त्रि (तीन) मूर्तियों का समूह
त्रिभुवन	त्रि (तीन) भुवनों का समूह

5. द्वंद समास

जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने पर 'और', 'तथा', 'अथवा', 'या' आदि योजक शब्द लगाते है उसे द्वंद्व समास कहते हैं; जैसे-

समस्त पद	विग्रह
सुख-दुःख	सुख और दुख
माँ-बाप	माँ और बाप
ऊँचा-नीचा	ऊँचा या नीचा
थोड़ा-बहुत	थोड़ा या बहुत
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
राम-लक्ष्मण	राम और लक्ष्मण
राजा-रंक	राजा और रंक
भला-बुरा	भला या बुरा

6. बहुव्रीहि समास

जिस समास का कोई पद प्रधान नहीं होता है, बल्कि कोई अन्य पद प्रधान होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे-

समस्त पद	विग्रह
अंशुमाली	अंशु (किरणें) हैं माला जिसकी, अर्थात 'सूर्य'
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला, अर्थात 'विष्णु'
चंद्रशेखर	चंद्र है शेखर (मस्तक) पर जिसके, अर्थात शिव'
लंबोदर	लंबा उदर है जिसका, अर्थात 'गणेश'
पीतांबर	पीत यानी पीले हैं वस्त्र जिसके, अर्थात 'श्रीकृष्ण'
चतुर्भुज	चतुः का अर्थ है चार भुजाएँ, अर्थात 'विष्णु'
दशानन	दस हैं आनन जिसके, अर्थात 'रावण'
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका, अर्थात 'शिव'
त्रिनेत्र	तीन नेत्र हैं जिसके, अर्थात 'शिव'

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

कर्मधारय समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है यानी एक पद विशेषण तथा दूसरा पद उसका विशेष्य होता है; जैसे-
'नीलकंठ' (नीला है जो कंठ) में 'नीला' पद 'कंठ' पद का विशेषण है, अतः यहाँ कर्मधारय समास है, परंतु समास के दोनों ही पद वास्तव में अन्य पद के विशेषण होते हैं; जैसे- नीलकंठ में यदि नीला है कंठ जिसका अर्थात 'शिव' का विग्रह किया जाता है तो यहाँ बहुव्रीहि समास है।

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची विशेषण तथा समस्त पद समूह का सूचक होता है, जबकि बहुव्रीहि समास में दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद का विशेषण होते हैं; जैसे-
चतुर्भुज -चार भुजाओं वाला (द्विगु समास)

त्रिनेत्र-तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात शिव (बहुव्रीहि समास)

द्विगु और कर्मधारय समास में अंतर

द्विगु और कर्मधारय, इन दोनों ही समासों में विशेषण-विशेष्य का संबंध पाया जाता है, परंतु इन दोनों में अंतर है। द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची होता है साथ ही समस्त पद समूहवाची होता है, जबकि कर्मधारय में पहला पद गुणवाचक विशेषण होता है तथा समस्त पद समूहवाची नहीं होता; जैसे-

- चवन्नी -चार आनों का समूह (द्विगु)
- नीलाकाश–नीला है जो आकाश (कर्मधारय)

अभ्यास कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

क. समास किसे कहते हैं ? समझाइए
ख तत्पुरुष समास की परिभाषा एवं उसके भेद लिखिए।
ग.बहुव्रीहि और कर्मधारय समास का अंतर उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
घ. ऐसे दो समस्त पद बताइए जिनका विग्रह करने पर समास भी बदल जाए।
ड. द्विगु समास और कर्मधारय समास का अंतर उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

2.दिए गए विग्रहों के सही समस्तपद पर सही का चिह्न लगाओ।

1. **अन्न और जल** -
(क) अन्न-जल (ख) अन-जल
(ग) अन्नोजल (घ) अन्नयुक्त जल

2. मन से गढ़ा -
(क) मनगढ़ंत (ख) मनः गढ़त
(ग) मनगढ़ (घ) मनोगढ़ंत

3. नीली है जो गाय -
(क) नीलीगाय (ख) नीलगाय
(ग) निलगाय (घ) नीलिगाय

4. शक के बिना -
(क) विध्वंसक (ख) बेसक
(सी) बिनसाक (घ) बेशक

5. स्वर्ग से पतित -
(क) स्वर्ग-पतित (ख) स्वर्गातित
(ग) स्वर्ग में (घ) स्वर्गीय

अध्याय–19

पद–परिचय (PARSING)

एक या एक से अधिक वर्णों के समूह को शब्द कहते हैं।

जैसे – क. म. ल = कमल
यही शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तो पद कहलाते हैं।
जैसे – कमल ने पाठ याद कर लिया।

प्रत्येक शब्द का व्याकरण के आधार पर परिचय देना पद–परिचय कहलाता है।
पद–परिचय बताने के लिए शब्दों के उपभेद, लिंग, वचन, कारक आदि बताए जाते हैं।

विभिन्न प्रकार के शब्दों (पदों) का परिचय देते समय उनके संबंध में जिन बातों का उल्लेख करना आवश्यक होता है, वे निम्नवत हैं।

(क) संज्ञा का परिचय–

संज्ञा के परिरिचय में निम्नलिखित बातों का उल्लेख किया जाता है–

- 1 संज्ञा का भेद (जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाव वाचक)
- 2 लिंग (स्त्रीलिंग या पुल्लिंग)
- 3 वचन (एकवचन या बहुवचन)
- 4 कारक (कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान आदि)
- 5 क्रिया के साथ उसका संबंध (क्रिया का कर्ता, क्रिया का कर्म, क्रिया का पूरक)

(ख) सर्वनाम का परिचय – सर्वनाम के परिचय में निम्नलिखित बातों का उल्लेख किया जाता है–

- 1 सर्वनाम के भेद (पुल्लिंग, निश्चित, अनिश्चय वाचक, संबंधवाचक) प्रश्नवाचक, व्यक्तिगत
- 2 पुरुष (केवल पुरुषवाचक सर्वनाम में–उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष)
- 3 लिंग (स्त्रीलिंग या पुल्लिंग) वचन (एकवचन या बहुवचन) कारक (संज्ञा की भाँति)
  वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों से संबंध (क्रिया का कर्ता, क्रिया का कर्म, क्रिया का पूरक आदि।)

(ग) विशेषण का परिचय – विशेषण में जिन बातों का उल्लेख किया जाता है, वे इस प्रकार हैं–

- 1 विशेषण का भेद (गुणवाचक, संखयावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक)
- 2 वचन (एकवचन, बहुवचन)
- 3 लिंग (स्त्रीलिंग या पुल्लिंग)
- 4 अवस्था (मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था)
- 5 विशेष्य (जिस संज्ञा की विशेषता बताई जा रही है)

(घ) क्रिया का परिचय – क्रिया के परिचय में निम्नलिखित बातों का उल्लेख करना चाहिए–

1. भेद (सकर्मक, अकर्मक, प्रेरणार्थक, पूर्वकालिक, संयुक्त, अपूर्ण)
2. लिंग (स्त्रीलिंग, पुल्लिंग)
3. पुरुष , मूलधातु
4. वचन (एकवचन, बहुवचन)
5. काल (भूत, वर्तमान, भवष्यित)
6. वाच्य (कर्तृ, कर्म, भाववाच्य)
7. कर्ता एवं कर्म का उल्लेख।

(ङ)क्रिया विशेषण का परिचय– क्रिया विशेषण के परिचय में भेद (रीतिवाचक, स्थानवावक, कालवाचक, परिमाणवाचक) तथा उस क्रिया का उल्लेख किया जाता है, जिसकी विशेषता बताई जा रही है।

(च)समुच्चयबोधक का परिचय–समुच्चयबोधक के परिचय में भेद (समानाधिकरण या व्यधिकरण) तथा जिन शब्दों/वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने का काम कर रहा है का उल्लेख करना पर्याप्त होता है।

(छ)संबंधबोधक का परिचय– संबंधबोधक के परिचय में उन शब्दों का निर्देश करना पर्याप्त होता है जिनका संबंध जोड़ा जा रहा है।

(ज)विस्मयादिबोधक का परिचय–विस्मयादिबोधक के परिचय में केवल इस बात का उल्लेख किया जाता है कि विस्मयादबोधक कौन–सा भाव व्यक्त कर रहा है (घृणा, विस्मय, शोक, क्रोध आदि)

रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय करें।

1. रचित स्कूल जाता है।

रचित– व्यक्ति वाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक, 'जाता है' क्रिया का कर्ता।
स्कूल– जाति वाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'जाता है' क्रिया का कर्म।
जाता है– क्रिया, सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, वर्तमान काल, पुल्लिंग, एकवचन, रचित कर्ता की क्रिया।

2. वह क्या खाता है?

वह – पुल्लिंग सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता, क्रिया का कर्ता 'खाता है'
क्या – प्रश्नवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'खाता है' क्रिया का कर्म।
खाता है – सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, वर्तमान काल, पुल्लिंग, एकवचन, 'वह' कर्ता की क्रिया।

3. यह लड़की सुंदर है।

यह – सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, 'लड़की' विशेष्य का विशेषण।
सुंदर – गुणवाचक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, 'लड़की' विशेष्य का विशेषण।

4. अहा ! उपवन में सुंदर फूल खिले हैं।

अहा! विस्मयादिबोधक, अव्यव, हर्षसूचक।
उपवन में – जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक।
सुंदर गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, पुल्लिंग, 'फूल', विशेष्य का विशेषण।
फूल जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, 'खिले हैं' क्रिया का कर्ता।
खिले हैं। अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, बहुवचन, उपवाक्य, वर्तमान काल, कर्ता की 'फूल' क्रिया।

5. मोहन धीरे–धीरे चलता है।
धीरे–धीरे – रीतिवाचक क्रिया–विशेषण, 'चलता है' क्रिया की विशेषता बताता है।

अभ्यास कार्य

1. निम्नलिखित वाक्यों में (काले मोटे) पदों का परिचय दीजिए–

(क) लोगों ने **धीरे–धीरे** उस संकरे रास्ते से चलकर ताजमहल देखा।
(ख) **जल्दी** चलो वरना गाड़ी छूट जाएगी।
(ग) **कल** हम **मुंबई** जाएँगे।
घ) जब **मैं** पहुँचा तो **रमेश सो रहा था।**
(ङ) **चिड़िया पिंजरे में** बंद है।
(च) **यह** किताब मेरी है।
(छ) **ईमानदारी** दुर्लभ वस्तु है।

2. वाक्य के रेखांकित पद के नाम का सही विकल्प चुनिए।

1. यह अच्छा मकान है।
(क) संज्ञा
(ख) सर्वनाम
(ग) क्रिया
(घ) विशेषण

2. तुम कहाँ जा रहे हो?
(क) संज्ञा
(ख) क्रिया
(ग) क्रियाविशेषण
(घ) सर्वनाम

3. वह लड़का बहुत तेज है।
(क) संज्ञा
(ख) सर्वनाम
(ग) विशेषण
(घ) क्रिया

4. वह आज घर नहीं आएगा।
(क) संज्ञा
(ख) सर्वनाम
(ग) विशेषण
(घ) क्रिया

5. स्कूल के पीछे ही बस स्टेंड है।
(क) विशेषण
(ख) क्रिया
(ग) संबंधबोधक
(घ) क्रिया विशेषण

3. पद परिचय की परिभाषा लिखिये।

अध्याय-20
विलोम (विपरीतार्थक) शब्द Antonym

कुछ शब्द एक दूसरे के विपरीत या उलटे अर्थ प्रकट करते हैं। ऐसे शब्दों को व्याकरण में विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहा जाता है। जैसे-लाभ x हानि, पाप x पुण्य, गुण × दोष, हिंसा x अहिंसा आदि।

विपरीतार्थक के संबंध में एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि 'तत्सम' शब्दों के विलोम 'तत्सम' तथा 'तद्भव' शब्दों के विलोम 'तद्भव' शब्द ही होने चाहिएँ। जैसे-'अंधकार' तत्सम शब्द है अतः इसका विलोम शब्द प्रकाश होगा। 'अँधेरा' तद्भव शब्द है, अतः इसका विलोम 'उजाला होगा जो तद्भव शब्द है। इसी प्रकार 'लाभ' का विलोम हानि होगा नुकसान नहीं।

नुकसान तदभव शब्द है इसलिए यह 'फायदा' (तदभव शब्द) का विलोम होगा।

किसी शब्द का विपरीत या उलटा अर्थ बताने वाले शब्द को विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
उपकार	अपकार	शांति	अशांति
सुलभ	दुर्लभ	सक्रिय	निष्क्रिय
श्वेत	श्याम	दृश्य	अदृश्य
प्रत्यक्ष	परोक्ष	निंदा	स्तुति
क्रय	विक्रय	सुविधा	असुविधा
स्वर्ग	नरक	स्वतंत	परतंत्र
लायक	नालायक	यश	अपयश
नियंत्रित	अनियंत्रित	पालतू	जंगली
स्वदेश	विदेश	योगी	भोगी
अभागा	भाग्यवान	विरोध	समर्थन
मान	अपमान	अपना	पराया
सपूत	कपूत	बालिग	नाबालिग
सार्थक	निरर्थक	लाभ	हानि
नूतन	पुरातन	छल	निश्छल
आदान	प्रदान	आस्तिक	नास्तिक
क्षणिक	शाश्वत	शिक्षित	अशिक्षित
विधवा	सधवा		

अभ्यास कार्य

1 . दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थानों में रंगीन शब्दों के विलोम शब्द भरिए –

क. उसने ऐसी बात कह दी कि अर्थ का ——— हो गया।
ख. पालतू और ——— जीवों का स्वभाव भिन्न होता है।
ग. आजकल तो जो रक्षक हैं, वही ——— बने बैठे हैं।
घ. परिस्थितियाँ अनुकूल हों या ——— हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।
ङ. जीवन में संयोग और ——— तो लगा ही रहता है।
च. कृत्रिम वातावरण में रहते हुए ——— वातावरण का आनंद नहीं मिल सकता

2. विलोम शब्द से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

3.निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

शब्द	**विलोम**
आकर्षण-	——------
हिंसा	——------
पठित	——------
ऊपर चढ़ना	——------
वैतनिक	——------
स्वस्थ	——------
शिक्षित	——------
सदाचार	——------
योगी	——------
गुप्त	——------

अध्याय-21
पर्यायवाची शब्द (समानार्थी शब्द) Synonym

जो शब्द अर्थ की दृष्टि से समान होते हैं, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। इन्हें समानार्थक शब्द भी कहते हैं। इन शब्दों का अर्थ एक दूसरे से मिलता-जुलता होता है पर भाव में थोड़ा अंतर होता है। प्रत्येक शब्द दूसरे शब्द की जगह प्रयोग नहीं किया जा सकता। इनमें कहीं-कहीं सूक्ष्म अंतर होता है। यहाँ कुछ पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं।

क्रम	शब्द	पर्यायवाची शब्द
1	गणेश	गजानन, गणपति, विनायक, लंबोदर।
2	सूर्य	प्रभाकर, दिवाकर, रवि, दिनकर, भानु।
3	रात	रजनी, रात्रि, रैन, निशा, विभावरी।
4	दिन	दिवस, दिवा, युद्ध, बछड़ा।
5	प्रातः	प्रभात, सवेरा, सुबह, अरुणोदय।
6	सोना	स्वर्ण, कनक, कंचन, सुवर्ण।
7	घोड़ा	अश्व, तुरंग, हय, बाजी, घोटक।
8	हाथी	गज, कुंजर, हस्ती, द्विप।
9	साँप	नाग, फणी, विषधर, सर्प, भुजंग।
10	मीन	मछली, मकर, मत्स्य।
11	कमल	राजीव, जलज, पंकज, नीरज, अरविंद।
12	देव	देवता, सुर, ईश्वर, अजर।
13	पुष्प	प्रसून, फूल, कुसुम, सुमन।
14	कपड़ा	अंबर, वसन, चीर, वस्त्र, पट।
15	पक्षी	खग, विहग, पखेरू, नभचर, पंछी।
16	नदी	सरिता, तरंगिणी, तटिनी, निर्झरिणी।
17	बेटी	पुत्री, सुता, नंदिनी, आत्मजा, बिटिया।
18	स्त्री	नारी, वनिता, अबला, कामिनी, रमणी।
19	पर्वत	पहाड़, शैल, गिरि, अचल, भूधर।
20	महादेव	शिव, कैलाशपति, नीलकंठ, पशुपति, महेश्वर।
21	ईश्वर	जगदीश, प्रभु, ईश, परमेश्वर,।
22	आकाश	नभ, अंबर, गगन, आसमान, व्योम।
23	गंगा	मंदाकिनी, भागीरथी, अलकनंदा, गंगोत्री, सुरसरि।
24	बगीचा	उपवन, वाटिका, उद्यान, बाग, फुलवारी।
25	आग	अग्नि, पावक, अनल, दहन, ज्वाला, हुताशन
26	चाँद	शशि, राकेश, चंद्र, चंद्रमा, इंदु।
27	पृथ्वी	धरा, धरती, वसुधा, वसुंधरा, भू, मही।

अभ्यास कार्य

1. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए-

क. सूर्य	_____	_____	_____	च लक्ष्मी	_____	_____	_____
ख. घोड़ा	_____	_____	_____	छ. अमृत	_____	_____	_____
ग. मछली	_____	_____	_____	ज. यात्री	_____	_____	_____
व. पुष्प	_____	_____	_____	झ. बंदर	_____	_____	_____
ङ. शरीर	_____	_____	_____	व. दिन	_____	_____	_____

2.समानार्थी शब्द किसे कहते हैं?

3.निम्नलिखित शब्दों के लिए सही समानार्थी शब्द चुनकर (√) चिह्न लगाइए-

क. पर्वत

1. पाद 2. गिरि 3. अरुण 4.नभ

ख. महादेव

1. लंकापति 2.दिवाकर 3. कैलाशपति 4. गजानन

ग. **बादल**

1. आकाश 2.स्वर्ग 3. पयोधर 4. निशा

घ. **वसंत**

1. कुसुमाकर 2. पुष्प 3. सरोज 4. निशा

ड. **किनारा**

1. तृण 2. फूल 3. दृग 4. अंबर

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द से रिक्त स्थान भरिए-

क. हमारे देश में ———---देवता की पूजा की जाती है। (सर्प)
ख. पेड़ पर कुछ ———---बैठे थे। (खग)
ग. हाथी ———-में स्नान कर रहा था। (सरिता)
घ ———-में कुछ बच्चे खेल रहे थे। (उपवन)
ङ. समुद्र मंथन में अमृत और ———-दोनों निकला था।(गरल)
च. ———-वर्षा के देवता हैं। (सुरेश)
छ. पृथ्वी लोक सूर्य की ———-से दिन भर जगमगाता रहता है (प्रकाश)
ज. दशरथ के चार———-थे।(सुत)

अध्याय–22
अनेकार्थी शब्द

कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं। ये शब्द प्रयोग के अनुसार विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न अर्थ देते हैं। ऐसे शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

जैसे– 'कनक' शब्द का एक अर्थ है 'सोना' (धातु) तथा 'कनक' को 'गेहूँ' भी कहते हैं। ऐसे ही कुछ शब्द व उनके अनेकार्थ यहाँ दिए गए हैं–

अज	ब्रह्मा, बकरा, जो जन्म न ले
अंबर	आकाश, वस्त्र, एक सुगंधित पदार्थ
अनंत	आकाश, विष्णु, शेषनाग, अविनाशी
अक्षर	वर्ण , ब्रह्म, अविनाशी
अरुण	लाल, प्रातःकालीन सूर्य, सूर्य का सारथी
अधर	अंतरिक्ष, निचला होंठ, पृथ्वी एवं आकाश के बीच में
कल	चौन, मशीन, बीता कल
काल	समय, मृत्यु, यम
काम	कार्य, पेशा, वासना, कामदेव
सोम	चंद्रमा, कुबेर, स्वर्ग, आकाश, वायु
हार	हार जाना, माला
फल	परिणाम, वृक्ष का फल
जल	जल जाना, पानी
घन	घटा, बादल, हथौड़ा
कुल	सब, वंश, घराना
उत्तर	जवाब, एक दिशा
प्रकृति	स्वभाव, कुदरत, मूल अवस्था

दक्षिण	दाहिना, दक्षिण दिशा, अनुकूल
रूप	सौंदर्य, आकार
खर	तिनका, गधा, बगुला, एक राक्षस काना
दंड	डंडा, सजा, एक व्यायाम
ठाकुर	देवता, क्षत्रिय, नाई, स्वामी
गुण	कौशल, खूबी, रस्सी, धनुष की डोरी
हरि	विष्णु, हाथी, इंद्र, सर्प, वानर, मेढक, ब्रह्मा, शिव, सिंह
सारंग	हाथी, मोर, मेघ, सर्प, कोयल, धनुष, भौरा, कलम,
सर	तालाब, अमृत, पानी, गंगा, मधु, पृथ्वी
गति	मोक्ष, दशा, चाल
तात	पिता, भाई, मित्र, पूज्य
दल	सेना, समूह, पत्ता, हिस्सा, पक्ष
मधु	शराब, शहद, चैत्र मास, वसंत, एक राक्षस
रूढ़ि	चढ़ाई, विष्णु, उभार।
मधु	शहद, मदिरा, मकरंद, प्रेम।
रक्त	युद्ध, शोणित, लहू।
भेद	प्रकार, कार्तिकेय, फूट।
स्नेह	कोमलता, इच्छा, तेल।
वार	प्रहार, आक्रमण, प्रवृत्ति।

1. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के तीन अलग–अलग अर्थ लिखिए–

क. शून्य ———— ———— ————

ख. तात ———— ———— ————

ग. द्विविज ———— ———— ————

घ. अनंत ———— ———— ————

ङ.	अरुण	————	————	————
च.	अधर	————	————	————
छ.	खर	————	————	————
ज.	अक्षर	————	————	————

2. अनेकार्थी शब्दों से आपका क्या अभिप्राय है ? उदाहरण सहित इसकी व्याख्या कीजिये।

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थों में जो गलत हो उन पर गोला खींचिए।

क) स्नेह – कोमलता, इच्छा, तेल।

ख) वार – प्रहार, आक्रमण, प्रवृत्ति।

ग) रूढ़ि – चढ़ाई, विष्णु, उभार।

घ) मधु – शहद, मदिरा, मकरंद, प्रेम।

ङ) रक्त – युद्ध, शोणित, लहू।

च) भेद –प्रकार, कार्तिकेय, फूट।

अध्याय - 23

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

भाषा को प्रभावशाली बनाने तथा लंबे -चौड़े वाक्यांशों के प्रयोग से बचने के लिए अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है बहुत से शब्दों को जब एक शब्द में अभिव्यक्त किया जाता है तो भाषा प्रभावशाली हो जाती है।

जैसे -

जो कभी न मरे - अमर

जो आँखों के सामने हो - प्रत्यक्ष

हिंदी में ऐसे अनेक शब्द हैं। ऐसे ही कुछ अनेक शब्दों के लिए एक शब्द यहाँ दिए गए है।

अनेक शब्द	**एक शब्द**
1.जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
2.जो केवल भाग्य पर भरोसा रखता हो	भाग्यवादी
3.जो किसी आपत्ति का अनुभव कर चुका हो	भुक्तभोगी
4.जिसका बुरा चाल-चलन हो	दुराचारी
5.जो दूसरों की भलाई करता हो	परोपकारी
6.जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष
7.जो आँखों के सामने न हो	परोक्ष
8.जो पापियों को पवित्र करता हो	पतितपावन
9.जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
10.जो ईश्वर को न मानता हो	नास्तिक
11.जो ईश्वर को मानता हो	आस्तिक
12.जो देखने के योग्य हो	दर्शनीय
13.जिसने अपना सिर झुका लिया हो	नतमस्तक
14.अच्छे गुणों वाली स्त्री	साध्वी
15.प्रिय बोलने वाली स्त्री	प्रियंवदा
16.जिस पर भावना का अधिक प्रभाव पड़े	भावनात्मक
17.जनता के प्रतिनिधियों का शासन	प्रजातंत्र
18.जो उपकार को माने	कृतज्ञ
19. अच्छे चरित्र वाला	सच्चरित्र
20. समान धरातल वाला	समतल
21. जिसके नीचे रेखा खिंची हो	रेखांकित
22. जिसकी बहुत चर्चा हो	बहुचर्चित
23.जिसे सब मान लें	सर्वसम्मत
24.जिसका वाणी पर अधिकार हो	वाचस्पति
25. जिसमें से एक को चुनना हो	वैकल्पिक

1.**निम्नलिखित अनेक शब्दों के बदले एक शब्द लिखिए**-

क. जो दूसरों की भलाई करता हो

ख. जिसने अपना सिर झुका लिया हो

ग. प्रिय बोलने वाली स्त्री

घ. जो बिना वेतन के कार्य करे

ङ.जो आँखों के सामने न हो

च. जो पापियों को पवित्र करता हो

छ. जिसका कोई शत्रु न हो

ज. जो ईश्वर को न मानता हो

झ जो ईश्वर को मानता हो

ञ. जो देखने के योग्य हो

2. **रेखा खींचकर सही जोड़े बनाओ।**

अच्छे चरित्र वाला	समतल
जिसके नीचे रेखा खिंची हो	वाचस्पति
जिसकी बहुत चर्चा हो	विकल्प
समान धरातल वाला	बहुचर्चित
जिसमें से एक को चुनना हो	सच्चरित्र
जिसका वाणी पर अधिकार हो	सर्वसम्मत
जिसे सब मान लें	रेखांकित
प्रिय बोलने वाली स्त्री	भावनात्मक
जिस पर भावना का अधिक प्रभाव पड़े	प्रियंवदा

अध्याय - 24 श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों

PAIR OF SIMILAR WORDS--DISTINGUISHED

हिंदी भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी पाए जाते हैं जो उच्चारण की दृष्टि से बहुत मिलते-जुलते हैं परंतु उनके अर्थों में भिन्नता होती है। कभी-कभी प्रयोगकर्ता उन्हें एक ही मान बैठते हैं। इस प्रकार के शब्दों को समरूपी भिन्नार्थक शब्द कहते हैं; जैसे- 'अवधि' और 'अवधी'। अवधि का अर्थ है समय या सीमा, जबकि अवधी अवध प्रदेश की बोली का नाम है।

नीचे कुछ ऐसे ही शब्द दिए जा रहे हैं -

क्रमांक	शब्द	अर्थ
1	अन्न	अनाज
	अन्य	दूसरा
2	उद्यत	तैयार
	उद्धत	उद्दंड
3	ओर	तरफ़
	और	तथा, दूसरा
4	कृपण	कंजूस
	कृपाण	तलवार
5	कर्म	कार्य
	क्रम	सिलसिला
6	अविलंब	तुरंत
	अवलंब	सहारा
7	अचार	नींबू आदि का अचार
	आचार	चाल-चलन
8	अनल	आग
	अनिल	हवा
9	अपेक्षा	बढ़कर
	उपेक्षा	अनादर
10	अंदर	भीतर
	अंतर	भिन्नता

क्रमांक	शब्द	अर्थ
15	राज	शासन
	राज़	रहस्य
16	कपट	धोखा
	कपाट	दरवाज़ा
17	कोष	खज़ाना
	कोश	शब्द-भंडार
18	सुत	बेटा
	सूत	धागा
19	असमान	जो बराबर न हो
	आसमान	आकाश
20	अविराम	लगातार
	अभिराम	सुंदर
21	दिन	दिवस
	दीन	गरीब
22	नारी	स्त्री
	नाड़ी	नस
23	दीया	दीपक
	दिया	देना
24	हंस	एक पक्षी
	हँस	हँसना (क्रिया)

11	समान	बराबर
	सामान	वस्तु
12	पानी	जल
	पाणि	हाथ
13	आदि	शुरू
	आदी	अभ्यास
14	वदन	मुँह
	बदन	शरीर

25	झूठा	असत्य बोलने वाला
	जूठा	जूठा भोजन
26	आधी	आधा हिस्सा
	आँधी	तेज हवा चलना
27	प्रमाण	सबूत
	प्रणाम	नमस्कार
28	परिमाण	मात्रा
	परिणाम	नतीज़ा

अभ्यास कार्य

1.दिए गए पर्यायवाची शब्द युग्मों के अर्थ लिखिए

क.	उद्यत- उद्धत
ख.	अविलंब- अवलंब
ग.	कपट- कपाट
ङ	दिन- दीन
च.	आधी- आँधी

2.कोष्ठक में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

क. हम जिनसे कुछ ____रखते हैं, वही हमारी ____करते हैं। (अपेक्षा - उपेक्षा)

ख. मैंने अपने मित्र को देखकर अपने घर के ____ बंद कर दिए क्योंकि उसने मेरे साथ___ किया था (कपाट-कपट)

ग. सुख-दुख का ___तो चलता ही रहेगा, मनुष्य को ____करते रहना चाहिए।(कर्म-क्रम)

ङ. हमें सभी का ___करना चाहिए ____नहीं। (उपकार-अपकार)

च. अनेक व्यक्तियों ने अपने___ की छत पर चढ़कर मंगल_____ देखा ।(ग्रह - गृह)

छ. अधिक ____में मीठा खाने का ____हमें डायबिटीज़ के रूप में भुगतान पड़ता है।(परिमाण-परिणाम)

अध्याय -25 शब्दों के सूक्ष्म अर्थ भेद

DISCRIMINATION OF WORDS SIMILARIN MEANING

कुछ पर्यायवाची शब्दों के अर्थ मिलते-जुलते होते हैं किंतु फिर भी उनके अर्थ में सूक्ष्म अंतर होता है।

जैसे - व्यय और अपव्यय। 'व्यय' शब्द का प्रयोग साधारण खर्च के लिए किया जाता है परंतु 'अपव्यय' का अर्थ फ़िजूलखर्ची से है। ऐसे ही कुछ शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं-

1	अध्यक्ष	किसी संस्था का स्थायी प्रधान।
	सभापति	किसी कार्यक्रम या सभा का प्रधान।
2	अस्त्र	जिसे फेंककर मारा जाए, ऐसा हथियार।
	शस्त्र	जिसे हाथ में पकड़े हुए मारा जाए।
3	वध	शत्रु या अत्याचारी के प्राण लेना।
	हत्या	किसी निर्दोष के प्राण लेना।
4	भ्रम	मिथ्या ज्ञान।
	संदेह	ऐसा ज्ञान जिसमें अनिश्चय हो।
5	भ्रमण	टहलना।
	पर्यटन	घूमने की इच्छा से देश-विदेश जाना।
6	अद्वितीय	जिसके समान दूसरा न हो।
	अनुपम	जिसकी किसी से उपमा न की जा सके।
7	कर्तव्य	जिस कार्य में धार्मिक या नैतिक बंधन हो।
	कार्य	कोई भी सामान्य कार्य।
8	श्रम	केवल शारीरिक मेहनत ।
	परिश्रम	शारीरिक और मानसिक मेहनत ।
9	उपहास	अपमान के इरादे से दूसरों का मज़ाक।
	परिहास	बराबर वालों में मिलकर हँसी मज़ाक।
10	ईर्ष्या	दूसरों की कामयाबी पर जलना।

	स्पर्धा	दूसरों से आगे बढ़ने की इच्छा
11	अधिक	आवश्यकता से ज्यादा होना।
	काफी	जितना आवश्यक हो, उतना होना।
	पर्याप्त	जितना आवश्यक हो, उससे थोड़ा ज्यादा होना।
12	आरंभ	किसी साधारण कार्य की शुरूआत।
	श्रीगणेश	किसी शुभ कार्य या परियोजना का शुभारंभ।
13	अर्पण	छोटों द्वारा बड़ों को देना (शिष्य ने गुरुजी के चरणों में पुष्प - अर्पित किए।)
	प्रदान	बड़ों के द्वारा छोटों को देना।
14	आवेदन	(प्रधानाचार्य ने मुझे शुल्क मुक्ति प्रदान की।)
	निवेदन	नौकरी, छुट्टी आदि के लिए प्रार्थना करते हुए लिखा गया ।
15	आज्ञा	बड़ों के द्वारा छोटों को दी जाती है। (अध्यापक जी ने बच्चों को घर जाने की आज्ञा दी।)
	आदेश	किसी अधिकारी द्वारा दिया जाता है। (न्यायाधीश ने उसे करने का आदेश दिया)
16	गौरव	अपनी शक्ति या योग्यता का उचित ज्ञान।
	घमंड	अपने को बड़ा और दूसरों को कुछ नहीं समझना।
17	उपहार	बराबर वालों को दिया जाता है। (मैंने अपने मित्र को उसके
	भेंट	प्रायः अपने से बड़ों को दी जाती है। (हमनें शिक्षक दिवस पर अध्यापक जी को शॉल भेंट किया)
18	कष्ट	शारीरिक या मानसिक कष्ट। (गाड़ी में सीट न मिलने पर हमे बहत कष्ट हुआ।)
	पीड़ा	रोग या चोट के कारण शरीर में दर्द।
19	संतोष	जितना मिला उसी में खुश रहना।
	तृप्ति	इच्छा की पूर्ति होना।
20	श्रद्धा	बड़ों के प्रति आदर-भाव।
	भक्ति	देव या ईश्वर के प्रति आदर का भाव।
21	कंगाल	भिखमंगा।
	दीन	बहुत निर्धन ।
22	लालसा	किसी वस्तु को पाने की चाह।

	लोभ	दूसरे की चीज़ को पाने की चाह।
23	स्वागत	किसी अतिथि का आदर-सत्कार।
	अभिनंदन	किसी को सम्मानित करना।
24	आजन्म	जन्म से लेकर।
	आजीवन	जीवन भर।

अभ्यास कार्य

1.नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न लगाओ।

1. किसी शत्रु या अत्याचारी के प्राण लेना-

(क) मृत्यु (ग) हत्या

(ख) वध (घ) इनमें से कोई नहीं

2. घूमने की इच्छा से देश-विदेश जाना-

(क) पर्यटन (ग) भम्रण

(ख) घूमना (घ) इनमें से कोई नहीं

3. कोई भी सामान्य कार्य-

(क) कर्तव्य (ग)कार्य

(ख) क्रिया (घ) इनमें से कोई नहीं

4. जितना मिला उसी में खुश रहना-

(क) तृप्ति (ग) असंतोष

(ख) संतोष (घ) इनमें से कोई नहीं

5. बहुत निर्धन है जो-

(क) कंगाल (ग) संतोष

(ख) भिखारी (घ) इनमें से कोई नहीं

6. दूसरे की चीज को पाने की चाह-

(क) लोभ (ग) हत्या

(ख) इनमें से कोई नहीं (घ) लालसा

2.कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो।

1.खिलाड़ियों में_____होनी चाहिए। (ईर्ष्या, स्पर्धा)

2.. प्रत्येक व्यक्ति जीवन में कुछ पाने की____करता है। (लोभ,लालसा)

3.. खाली समय में वृद्ध____कर रहे थे। (उपहास,परिहास)

4.. अधिकारी ने कड़ी सुरक्षा के___दिये। (आदेश, अनुमति)

5. चोर को अपने किए____ पर थी। (ग्लानि, लज्जा)

6. मीरा कृष्ण की____करती थी। (श्रद्धा, भक्ति)

3. दिए गए शब्दों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि इनके अर्थ का अंतर स्पष्ट हो जाए-

क. कंगाल
दीन

ख. आकार
आकृति

ग. लालसा
लोभ

घ. उपहार
भेंट

ड. अस्त्र
शस्त्र

अध्याय-26
मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ Idioms and Proverbs

भाषा को रोचक बनाने में मुहावरे तथा लोकोक्तियों का विशेष स्थान होता है। इनके प्रयोग से भाषा-सौष्ठव में वृद्धि होती है तथा अभिव्यक्ति प्रभावपूर्ण बनती है।

मुहावरा शब्द का **अर्थ** होता है- बातचीत अथवा अभ्यास। इनके माध्यम से किसी भी भाव या विचार को सरलता, सहजता एवं जीवंतता के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। मुहावरों के शुद्ध प्रयोग से भाव-सौंदर्य में वृद्धि होती है। भाषा में बोधगम्यता, सरलता, सरसता एवं चमत्कार उत्पन्न होता है। मुहावरे जिस रूप में होते हैं, उसी रूप में युक्त किए जाते हैं। अन्यथा भाषा का स्वरूप और सौंदर्य दोनों ही विकृत हो जाते हैं। मुहावरे का सामान्य अर्थ होकर कुछ विशेष अर्थ होता है।

मुहावरों का कभी भी शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाता अपितु मुहावरे का विशेष अर्थ होता है। जैसे - 'लोहे के चने चबाना' का अर्थ सचमुच में 'लोहे से बने चने खाना नही हैं अपितु इस का अर्थ है - 'बहुत कठिन काम'।

अतः कहा जा सकता है कि -

मुहावरा ऐसा वाक्यांश है, जिसका एक लाक्षणिक अर्थ होता है।

मुहावरा	शाब्दिक	अर्थविशेष
आग में घी डालना	अग्नि में घृत डालना	क्रोध को भड़काना
चिकना घड़ा	ऐसा घड़ा जो चिकना हो	जिस पर किसी बात का असर न हो
घाव पर नमक छिड़कना	किसी घाव पर नमक डाल देना	जिस पर किसी बात का असर न हो
नाक कटना	नाक का कट जाना	इज्जत चले जाना

मुहावरे और उनके अर्थ

क्रम	मुहावरे	अर्थ
1	अगर-मगर करना	टाल-मटोल करना
2	अपना-सा मुँह लेकर रह जाना	लज्जित होना
3	अवाक रह जाना	हैरान रह जाना
4	कच्चा चिट्ठा खोलना	भंडाफोड़ करना (पोल खोल
5	काल आना	मृत्यु समीप होना
6	कान पर जूँ तक न रेंगना	ध्यान न देना
7	कुछ उठा न रखना	कोई कमी न छोड़ना
8	खरी-खोटी सुनाना	भला-बुरा कहना
9	खाला जी का घर	सरल कार्य
10	गली-गली फिरना	मारे-मारे फिरना
11	गाँठ पड़ना	मनमुटाव होना
12	गाँठ बाँध लेना	याद रखना
13	कलेजे पर पत्थर रखना	हिम्मत रखना
14	कलेजे पर साँप लोटना	ईर्ष्या में जलना।
15	कानाफूसी करना	चुपचाप बातें करना।
16	काम तमाम करना	मार देना।
17	काठ का उल्लू होना	निरा मूर्ख।
18	किस्मत फूटना	भाग्य का विपरीत होना।
19	किताबी कीड़ा	हर समय पढ़ाई में लगा रहने वाला।
20	ख्याली पुलाव पकाना	कोरी कल्पना में डूबे रहना।
21	खरी-खोटी सुनाना	भला-बुरा कहना।
22	खून का प्यासा होना	जान लेने पर उतारू होना।
23	खून पसीना एक करना	बहुत मेहनत करना।
24	गागर में सागर भरना	थोड़े में अधिक कहना।
25	गुदड़ी का लाल	गुणी व्यक्ति।
26	गुल खिलाना	कोई नीच कार्य करना।
26	गुलछर्रे उड़ाना	मौज उड़ाना।
27	गीदड़ भभकी	कोरी धमकी।
28	अपना उल्लू सीधा करना	अपना मतलब निकालना

29	उँगली पर नचाना	वश में कर लेना
30	मैदान मारना	विजय पा लेना

कुछ मुहावरे, उनके अर्थ एवं वाक्य-प्रयोग नीचे पर दिए जा रहे हैं-

1.**आसमान पर चढ़ना** (बहुत घमंड करना) - कक्षा में प्रथम क्या आया, राहुल का तो दिमाग ही आसमान में चढ़ गया है।

2. **आस्तीन का साँप** (कपटी मित्र) - मैं शिशिर को सच्चा मित्र मानता था, मगर वह तो आस्तीन का साँप निकला।

3. **आसमान सिर पर उठाना** (बेहद चिल्लाना) - अध्यापक के कक्षा से जाते ही छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

4.**आसमान से बातें करना (**बहुत ऊँचाई तक पहुँचना) - आजकल तो आसमान से बातें करती हुई इमारतें बन रही हैं।

5.**आँखों पर पर्दा पड़ना** (धोखा खाना) - तुम्हारी आँखों पर अभी पर्दा पड़ा है, इसलिए तुम अपने भाई की सच्चाई सुनना नहीं चाहते।

6.**आँच न आने देना** (नुकसान न होने देना) - सच्चा दोस्त वही है जो अपने दोस्त पर कोई आँच न आने दे।

।।लोकोक्ति।।

लोगों में प्रचलित उक्ति (कहावत) लोकोक्ति कहलाती है। किसी भी बात को समझाने या पुष्ट करने के लिए लोकोक्तियाँ अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होती हैं। लोकोक्तियाँ अपने-आप में पूर्ण वाक्य होती हैं। इनका कभी तो साधारण अर्थ होता है और कभी सांकेतिक। लोकोक्तियाँ लोगों के चिरकालीन अनुभव के आधार पर बनती हैं और उनका वास्तविक जीवन में भी सटीक अर्थ होता है।

क्रम	लोकोक्ति	अर्थ
1	आ बैल मुझे मार	अपने लिए स्वयं ही मुसीबत बुलाना।
2	अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना	स्वयं अपनी प्रशंसा करना।
3	आगे कुआँ पीछे खाई	हर ओर हानि होना।
4	ढाक के तीन पात	एक जैसी हालत होना।
5	ऊँची दुकान फ़ीका पकवान	केवल बाहरी दिखावा होना।
6	सौ सुनार की एक लुहार की	ताकतवर की एक चोट और कमज़ोर की सौ चोट बराबर।
7	चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए	जरूरत से ज़्यादा कंजूस।
8	मान न मान मैं तेरा मेहमान	जबरन गले पड़ना।
9	कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली	दो लोगों के हालात में ज़मीन-आसमान का अंतर।

10	दूध का दूध और पानी का पानी	सच्चा न्याय।
11	पराधीन स्वप्न सुख नहीं हैं	पराधीन व्यक्ति सुख की कल्पना नहीं कर सकता।
12	मियाँ की दौड़ मस्जिद	एक सीमित क्षेत्र में काम करना।
13	डूबते को तिनके का सहारा	बड़ी मुसीबत में थोड़ी-सी मदद भी काफ़ी लगती है।
14	अक्ल बड़ी या भैंस	बल से बड़ी बुद्धि।
15	हाथ कंगन को आरसी क्या	प्रत्यक्ष को प्रमाण की ज़रूरत नहीं।
16	बहती गंगा में हाथ धोना	अवसर का फ़ायदा उठाना।
17	एक हाथ से ताली नहीं बजती	झगड़े या दोस्ती की वजह एक व्यक्ति नहीं होता।
18	कंगाली में आटा गीला	गरीबी में एक नई मुसीबत।
19	चोर की दाढ़ी में तिनका	अपने किए बुरे काम से डरना।
20	मुँह में राम बगल में छुरी	बाहर से मित्रता पर भीतर से दुश्मनी रखना।

लोकोक्तियों का अर्थ व उनका वाक्यों में प्रयोग

1. **नेकी कर कुएँ में डाल** - (उपकार करके कभी जताना नहीं चाहिए) वर्मा जी अड़ोस-पड़ोस में सभी की मदद करते हैं लेकिन कभी किसी से कोई उम्मीद नहीं करते, उनका तो एक ही सिद्धांत है - नेकी कर कुएँ में डाल।

2. **अधजल गगरी छलकत जाए** (ओछा व्यक्ति अधिक दिखावा करता है)- तुमने गणित में अच्छे अंक क्या पा लिए, दूसरों को बिलकुल मूर्ख समझते हो। ठीक ही कहा है, अधजल गगरी छलकत जाए।

3. **अपना हाथ जगन्नाथ** (अपने किए से ही काम अच्छा होता है)- किसी काम के लिए दूसरों का मुँह देखने से अच्छा है कि उसे स्वयं किया जाए। सच है, अपना हाथ जगन्नाथ।

4. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** (एक अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता)- धीरज के घर में अकेला वही एक कमाने वाला व्यक्ति है, इसी कारण घर का खर्च ठीक से नहीं चल पाता। सच ही कहा गया है - अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

5. **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत** (समय हाथ से निकलने पर पछताने का क्या लाभ) -सामने वाली टीम से मैच हार गए न, अब कह रहे हो कि खेलने का पहले ठीक से अभ्यास नहीं किया था। क्यों नहीं किया अभ्यास ? अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत ।

6. **काला अक्षर भैंस बराबर** (अनपढ़)- तुम उससे पत्र पढ़वाने के लिए बैठे हो, पता भी है कि उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

मुहावरे तथा लोकोक्ति में अंतर

1. मुहावरे सदा लाक्षणिक अर्थ देते हैं लेकिन लोकोक्ति कभी लाक्षणिक अर्थ देती है तो कभी कोशगत अर्थ देती है।
2. मुहावरे वाक्यांश होते हैं किंतु लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य होती है।
3. मुहावरे को लिंग, वचन के अनुसार बदलकर प्रयोग किया जाता है किंतु लोकोक्ति का प्रयोग किसी भी कथन के अंत में किया जाता है। इसका प्रयोग पूरे वाक्य की तरह होता है।

अभ्यास कार्य

1.निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ लिखिए-

क. आ बैल मुझे मार
ख.कंगाली मे आटा गीला
ग. हाथ कंगन को आरसी क्या
घ.अक्ल बड़ीं या भेंस
ङ. बहती गंगा मे हाथ धोना

2.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. मुहावरा किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
ख. मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर बताइए।
ग. लोकोक्ति की विशेषताएं लिखिए।

3.**निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए-**

1.मैदान मारना
2.गुल खिलाना
3.अगर मगर करन
4.खरी खोटी सुनाना
5.काल आना

अध्याय-27.

पत्र लेखन Letter Writing

हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं। ये निजी जीवन तथा सामाजिक जीवन दोनों में विशेष उपयोगी हैं। पत्रों को इसी आधार पर दो भेदों में बाँटा जा सकता है-

1. औपचारिक पत्र (फॉर्मल लेटर)
2. अनौपचारिक पत्र (इनफॉर्मल लेटर)

1.**औपचारिक पत्र**
औपचारिक पत्र हम विभिन्न विभागों तथा अधिकारियों को आवेदन के लिएकिसी समस्या के लिए, किसी सूचना के लिए अथवा किसी अन्य सार्वजनिक या व्यापारिक कारण से लिखते हैं।

औपचारिक पत्र लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए > जिसे पत्र लिखा जा रहा है, उसका पद तथा पता सबसे ऊपर बाईं ओर लिखा जाता है।

>इसके बाद तिथि लिखी जाती है। संक्षेप में पत्र का विषय लिखा जाता है।

> इसके बाद संबोधन आता है, जैसे- महोदय, माननीय या मान्यवर आदि। औपचारिक पत्रों में अभिवादन नहीं लिखा जाता।

> इसके पश्चात पत्र की विषय-वस्तु लिखी जाती है।

> इसके पश्चात धन्यवाद लिखा जाता है।

> अंत में प्रार्थी, विनीत, आपका आज्ञाकारी, भवदीय आदि जो उचित ही लिखा जाता है तथा लिखने वाला अपना नाम व पता लिखता है।

औपचारिक पत्र में-

संबोधन- श्रीमान, महोदय, मान्यवर, माननीय आदि।
अभिवादन - प्रायः नहीं होता।
अंत के शब्द - प्रार्थी, निवेदक, विनीत, भवदीय / भवदीया, आपका आज्ञाकारी, आपकी आज्ञाकारिणी आदि।

2. अनौपचारिक पत्र

जो पत्र हम अपने परिवार के लोगों, संबंधियों तथा मित्रों आदि को लिखते हैं,उन्हें अनौपचारिक पत्र या व्यक्तिगत पत्र कहते हैं।अनौपचारिक पत्रों को लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए --

> पत्र लिखने वाला अपना पता तथा तिथि बाईं ओर लिखता है।

>इसके नीचे जिसे पत्र लिख रहे हैं, उसे संबोधन करते हैं। जैसे- प्रिय मित्र / सखी, आदरणीय पिताजी आदि।

>इसके नीचे अभिवादन लिखा जाता है। जैसे- नमस्ते, असीम स्नेह, सादर चरण स्पर्श आदि।

>पत्र के मुख्य भाग में पहले कुशलता पूछना व बताना आता है, इसके पश्चात पत्र का मुख्य विषय आता है तथा इसके बाद सबको प्रणाम, प्यार आदि।

>अंत में जिसे पत्र लिखा जा रहा है, उससे लिखने वाले का संबंध व नाम लिखा जाता है।

जैसे - तुम्हारा मित्र / तुम्हारी सखी, आपका बेटा / आपकी बेटी, आपका पोता / आपकी पोती

अनौपचारिक पत्रों में-

जिन्हें पत्र लिखा हो	संबोधन	अभिवादन	अंत के शब्द
बड़ों को	आदरणीय, पूजनीय, माननीय, परमपूज्य	सादर प्रणाम, चरण स्पर्श	आज्ञाकारी, आपका पुत्र / भाई / शिष्य
छोटो को	प्रिय, चिरंजीवी, आयुष्मान	शुभाशीर्वाद, प्रसन्न रहो, सुखी रहो	तुम्हारा हितैषी, तुम्हारा शुभेच्छु, तुम्हारा शुभचिंतक, तुम्हारा शुभाकांक्षी
बराबर वालों को	प्रिय भाई / बहन /मित्र / सखी	नमस्ते, सप्रेम नमस्कार, मधुर स्मृति	शुभाभिलाषी, तुम्हारा भाई / मित्र, तुम्हारी बहन / सखी

औपचारिक पत्र

1.छात्रवृत्ति के लिए प्रधानाचार्य को पत्र।

सेवा में,
प्रधानाचार्य
ज्ञात भारती विद्यालय
सकेता, नई दिल्ली।

विषय: छात्रवृति के लिए प्रार्थना-पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा आठ 'अ' की छात्रा हूँ। गत माह मेरे पिताजी की व्यापार में अत्यंत हानि हुई और परिवार पर आर्थिक संकट आया गया। इस कारण में विद्यालय शुल्क भरने में असमर्थ हूँ। मैं गत सात वर्षों से आपनी कक्षा में प्रथम या द्वितीय स्थान पाती रही हूँ। विद्यालय की क्रिकेट टीम की कप्तान हूँ।मैंने अनेक वाद-विवाद, संगीत तथा चित्रकला प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त किए हैं। आपसे अनुरोध है कि मुझे योग्य तथा आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के छात्र-छात्राओं को दी जाने वाली छात्रवृत्ति प्रदान करें।

धन्यवाद। आपकी आज्ञाकारिणी

अनुभा

कक्षा आठ "अ"
तिथि:---------

2.चोरी की रिपोर्ट करते हुए पुलिस निरीक्षक को पत्र।

अध्यक्ष, लोक कल्याण समिति
शकरपुर, दिल्ली।
तिथि : —----
सेवा में,
पुलिस निरीक्षक
शकरपुर थाना क्षेत्र
दिल्ली।

विषय : हमारे क्षेत्र में चोरी की रिपोर्ट के विषय में पत्र।

महोदय,

अत्यंत दुख के साथ सूचित कर रहा हूँ कि आपके क्षेत्र में गत माह में दस चोरी की घटनाएँ हो चुकी हैं। चोरी की बढ़ों वारदातों से स्थानीय नागरिक अत्यंत चिंतित हैं। कल रात को भी दो घरों के ताले टूटे और चोर सारा सामान ले गए।

आपसे प्रार्थना है कि आप संबंधित अधिकारियों को निर्देश दें कि उक्त विषय में उपयुक्त कार्यवाही करें तथा इस इलाके में पुलिस की गश्त बढ़ा दें ताकि भविष्य में चोरियों न हों।

धन्यवाद।
भवदीय
पंकज त्रिपाठी

3. प्रकाशक से पुस्तके मंगवाने के लिए पत्र

सेवा में,
प्रकाशक
जो० राम बुक्स पा० ति०
3/1/10, साहिबाबाद
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
महोदय,
कृपया, निम्नलिखित पुस्तकें उचित कमीशन काटकर डाक द्वारा वी.पी.पी से यथाशीघ्र नीचे दिए पते पर भेजने का कष्ट करें। मैं वो-पी-पी छुड़ाने का पक्का आश्वासन देता हूँ।

1. अक्षरा व्याकरण भाग – 3 3 प्रति
2. अक्षरा व्याकरण भाग - 6 3 प्रति
3. अक्षरा व्याकरण भाग - 7 3 प्रति
4. अक्षरा व्याकरण भाग – 8 3. प्रति

भवदीय
अमरकांत
म. नं 131. अशोक नगर
आगरा (उत्तर प्रदेश)
पिनकोड : 282002
दिनांक : 15.01.2025

अनौपचारिक पत्र

1.**विद्यालय का वर्णन करते हुए पिता को पत्र।**

छात्रावास
एस.के. हाई स्कूल
मसूरी।
दिनांक : 25-07-2025

पूजनीय पिताजी,
सादर प्रणाम।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ, आशा है आप सब भी कुशलपूर्वक होंगे। मैं इस विद्यालय तथा छात्रावास की संपूर्ण व्यवस्था से अत्यंत प्रभावित हूँ। विद्यालय में सभी विषयों के शिक्षण लिए आधुनिक तथा उचित व्यवस्था है। यहाँ विज्ञान की अत्यंत आधुनिक प्रयोगशालाएँ हैं। शिक्षा के साथ-साथ अन्य गतिविधियों तथा खेल-कूद आदि पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

विद्यालय के सभी शिक्षकों का व्यवहार अत्यंत सराहनीय है। छात्रावास में हम सबके खाने-पीने की पसंद, स्वास्थ्य सफ़ाई का भरपूर ध्यान रखा जाता है। आप मेरी किसी प्रकार की चिंता मत कीजिएगा। अब मेरे कुछ मित्र भी गए हैं। माँ को मेरा प्रणाम तथा सुरभि को ढेर-सा प्यार।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

आपका बेटा

पियूष

2.स्वच्छता का महत्त्व बताते हुए मित्र को पत्र।

225, ब्लॉक सी मयूर विहार
दिल्ली।
दिनांक: 25-06-
प्रिय रोहित,

सप्रेम नमस्ते।
स्वच्छता केवल अपने घर तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए अपितु घर-बाहर सभी तरफ़ सफ़ाई होने पर ही हम स्वस्थ रह सकते हैं। इस प्रकार बीमारियों के कीटाणु, मक्खी ,मच्छर नहीं पनपते। हर शिक्षित का यह कर्तव्य है

किआस-पास के लोगों को स्वच्छता का महत्त्व समझाए। आशा है तुम भी इस दिशा में अपना उचित योगदान दोगे।
तुम्हारा अभिन्न मित्र

सुनील

3.परीक्षा में सफलता पर छोटे भाई को पत्र

सी-178, मोतीनगर
जयपुर (राजस्थान)
07.02.20.....
प्रिय राघवेंद्र,

चिरंजीवी रहो।

तुम्हारा परीक्षाफल देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। शाबाश! परिश्रम करते चलो, इसी प्रकार सफलता मिलती रहेगी। छुट्टियों में घर आते समय माँ के लिए चमड़े की एक अटैची लेते आना, जो लगभग दो फुट लंबी हो। चाचा जी से कहना, वे दो-चार दुकानें देखकर बढ़िया-सी अटैची खरीदवा देंगे।यहाँ सब लोग आनंद से हैं और तुम्हें बहुत याद करते हैं।

तुम्हारा बड़ा भाई

अनिल

अभ्यास करें:-

नीचे दिए गए विषयों पर पत्र लिखिए-

(क) पिता जी की बीमारी के कारण विद्यालय के प्रधानाचार्य को छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

(ख) छोटे भाई को परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर बधाई-पत्र लिखिए।

ग) माँ को पत्र (घर शीघ्र आने की सूचना के साथ) लिखिए।

(घ) पुस्तके मंगवाने के लिए प्रकाशक को पत्र लिखिए।

(ङ) कक्षा के मॉनीटर के रूप में हुए अनुभवों से अवगत करवाते हुए पिता को पत्र लिखिए।

अध्याय -28
अनुच्छेद-लेखन Paragaraph Writing

अनुच्छेद-लेखन एक कला है। इसमें संक्षेप में विषय के समस्त आयामों पर प्रकाश डाला जाता है।

अनुच्छेद लिखने से पूर्व निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है-
> अनुच्छेद में मुख्य भाव पर ही समस्त लेखन केंद्रित होना चाहिए।
> लेखन से पूर्व मुख्य बिंदु तय कर लेने चाहिए।
> भाषा संक्षिप्त, भाव प्रधान, अर्थपूर्ण और प्रभावोत्पादक होनी चाहिए।
> सारगर्भित लेखन को महत्त्व दिया जाना चाहिए।
> वाक्यों में परस्पर संबंध होना चाहिए।
> विषय में तारतम्यता (क्रमबद्धता) बनी रहनी चाहिए।
> आवश्यकता हो तो मुहावरे या लोकोक्ति का प्रयोग कर विषय-वस्तु को आकर्षक और रोचक बनाया जा सकता है।
> व्यर्थ के उदाहरणों से बचना चाहिए।
> भाषा की शुद्धता और शब्दों के उपयुक्त चयन का ध्यान रखना चाहिए।
> प्रश्नपत्र में दी गई शब्द संख्या का ध्यान रखना चाहिए। वैसे शब्दों की संख्या लगभग 80 – 100 होनी चाहिए।

1. बढ़ते उद्योग-सिकुड़ते वन

आदिकाल में मानव पूरी तरह जंगली जीवन व्यतीत करता था तथा जंगल ही उसके भरण-पोषण का मुख्य आधार था। जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता गया व्यक्ति ने न केवल जंगल से अपना नाता तोड़ लिया अपितु उस पर आधिपत्य जमाने के लिए उसके साथ छेड़छाड़ करना शुरू कर दिया तथा उसके दोहन में संलग्न हो गया। प्रकृति की अमूल्य देन 'वनों' को उसने अत्यंत बेरहमी से काटना शुरू कर दिया परिणामतः अनेक समस्याओं का जन्म हुआ जिनमें प्रदूषण, भूमि का कटाव, बाढ़ों का आना, वर्षा की अनिश्चितता आदि मुख्य है। बढ़ती हुई जनसंख्या और उद्योग-धंधों के विस्तार के कारण आज का मानव वनों की कटाई करने को विवश है। उद्योग-धंधों के विस्तार तथा बढ़ती हुई जनसंख्या की आवास की समस्या के लिए अतिरिक्त भूमि उपलब्ध कराने के लिए उसे वनों की कटाई करना ही एकमात्र उपाय नजर आता है। वनों की कटाई से वनों से मिलने वाली लाख, गोंद, रबर जैसी वस्तुएँ तथा दियासलाई, प्लाईवुड, कागज आदि उद्योग के लिए कच्ची सामग्री का अभाव हो गया हैं इस समस्या एक ही समाधान है जितने वृक्ष काटे जाएँ, उतने और लगाए भी जाएँ।

2. खेलों का महत्त्व

प्रत्येक व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में खेलों के प्रति विशेष स्थान देना बहुत आवश्यक है। 'खेलों' का नाम लेते ही बच्चों, युवाओं में प्रसन्नता, उत्साह एवं स्फूर्ति जाग्रत हो जाती है। पढ़ाई-लिखाई और मानसिक थकान देने वाले

कार्यों के बाद खेल ही व्यक्ति को पुनः शक्ति प्रदान करते हैं। शारीरिक व मानसिक दृष्टि से खेलों का विशेष महत्त्व है। खलों से जहाँ एक ओर शारीरिक विकास होता है वहाँ दूसरी ओर शरीर पुष्ट होता है। इससे तनाव, ईष्या, क्रोध जैसे विकार दूर होते हैं व व्यक्ति मानसिक रूप से भी स्वस्थ बनता है। खेलों से रक्त प्रवाह तीव्र होता है, मांसपेशियों व जोड़ मजबूत बनते हैं, पाचन अंग सुचारू रूप से कार्य करते हैं। खेलों से व्यक्ति में सहयोग व प्रतिस्पर्धा की भावना जाग्रत होती है। राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलों में भाग लेकर धन व यश दोनों ही कमाए जा सकते हैं। अतः जीवन को भली प्रकार से जीने के लिए खेलों का विशेष महत्त्व है।

3. छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीनता

अनुशासन का अभाव अव्यवस्था को पैदा करता है, यही अव्यवस्था अनुशासनहीनता है। यह असफलता की जननी है। छात्र जीवन में अनुशासन का विशेष महत्त्व है। अनुशासित विद्यार्थी ही अपने गुरु व शिक्षा-मंदिर को सम्मान देता है व उनकी कृपा का पात्र बनता है। आज विद्यालयों व महाविद्यालयों की स्थिति इसके विपरीत है। विद्यार्थि फैशन व आधुनिकता के गुलाम हैं। दिखावे की प्रवृत्ति व अहंकार के कारण वे अनुशासनहीन हो रहे हैं। तोड़-फोड़, अध्यापकों के प्रति दुर्व्यवहार, अश्लीलता, वाणी पर संयम का अभाव, मोबाइल फोन का दुरुपयोग, ये सभी विद्यार्थी-वर्ग की अनुशासनहीनता के द्योतक हैं। विद्यार्थी माता-पिता के नियंत्रण के बाहर हैं। वे आक्रामक व हिंसक प्रवृत्ति के हो रहे हैं। ऐसे अनुशासनहीन विद्यार्थियों को उचित दिशा-निर्देश की आवश्यकता है। माता-पिता उन्हें धन से दूर रखें तथा उन्हें अल्प सुख-सुविधाएँ दें। उन्हें सत्संगति, सद्व्यवहार व नियमों के पालन की शिक्षा पर जोर दें। यदि बीज को उचित हल, पानी व धूप मिलेगी तभी वह पनपेगा। अच्छे संस्कार देकर ही विद्यार्थियों को अनुशासित बनाया जा सकता है।

4. मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना

कर्म वह है जो एक आदमी को दूसरे से मिलाए तथा जो व्यक्ति को असत्य से सत्य की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, पाप से पुण्य की ओर, दुर्गुणों से सद्गुणों की ओर तथा दानवता से मानवता की ओर ले चले। सच्चा धर्म मानव की संकीर्णताओं को दूर करके उनके दृष्टिकोण को विस्तृत बनाता है। ऐसा धर्म जो मानव-मात्र से हिंसा, द्वेष, कटुता तथा वैर-विरोध उत्पन्न करे, धर्म नहीं कहा जा सकता। वह तो 'अधर्म' है। संसार में अनेक धर्म हैं। चाहे उनकी अन्य बातें अलग-अलग हों, परंतु एक बात जो सबमें सामान्य रूप से पाई जाती है, वह है उनके उच्चादर्श। संसार के सभी धर्म व्यक्ति को अच्छाई की राह पर ले जाते हैं। कोई भी धर्म हमें हिंसा या ईर्ष्या के मार्ग पर अग्रसर नहीं करता। इसीलिए इकबाल ने कहा था, "मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।"

5. गुरु कुम्हार सिख कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट

अध्यापक को गुरु भी कहते हैं। 'गु' का अर्थ है अंधकार 'रु' का अर्थ है निरोधक। अर्थात गुरु वह है जो शिष्य के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करता है। आदर्श अध्यापक शिष्यों के हृदय में शुभ संस्कारों का सर्जक होने के नाते ब्रह्मा है, उनके रक्षणवर्धन के नाते विष्णु है तथा अशुभ संस्कारों, कुप्रवृत्तियों एवं अंतर्विकारों के अपाकरण के कारण साक्षात प्रलयंकर शंकर है। कबीरदास जी ने भी कहा है :

गुरु कुम्हार सिख कुंभ हैं, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।
अंतर हाथ सहार दे, बाहर-बाहर चोट ॥

जिस प्रकार कुम्हार बाहर से घड़े को ठोकता-पीटता है तथा भीतर से हाथ का सहारा देकर खोट निकालकर लोगों के उपयोग के लिए घड़े का निर्माण करता है, उसी प्रकार आदर्श अध्यापक भीतर से अपनी सहानुभूति का सहारा देता हुआ ऊपर से आवश्यकता पड़ने पर प्रहार करते हुए अपने शिष्य का नव निर्माण करता है। वह कभी संकुचित दृष्टिकोण का शिकार नहीं होता। आदर्श अध्यापक में माता का-सा धैर्य होता है। वह दुर्बल कमज़ोर बच्चे पर अधिक ध्यान देता है। कदम-कदम पर उचित मार्गदर्शन करता है और उसे अधिक समय देता है।

अभ्यास करें

1.अनुच्छेद से क्या तात्पर्य है ?

2: अनुच्छेद लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

3: नीचे दिए गए विषयों पर अनुच्छेद लिखिए-

(क) परिश्रम का फल

(च) मनोबलः मन के हारे हार है और मन के जीते जीत

(ख) खेल-कूद का महत्व

(छ) राष्ट्रीय एकता

(ग) सच्चा मित्र

(ज) मेरी पहली यात्रा

(घ) विज्ञान के लाभ

अध्याय - 29

संवाद लेखन Dialogue Writing

संवाद' का अर्थ है- बातचीत। लोगों की आपसी वार्ता संवाद कहलाती है। कोई भी पात्र जो कहता है, उसे उसका संवाद कहा जाता है। व्यक्तिगत जीवन में तो संवाद महत्त्वपूर्ण है ही, साहित्य में भी इसका विशेष स्थान है। नाटक तथा एकांकी की रचना का आधार संवाद ही है। कहानी, उपन्यास आदि में भी कथा को बढ़ाने व पात्रों के चरित्र को उभारने में इसकी विशेष भूमिका है। एक पात्र किसी विषय को लेकर संवाद रूप में अपना कथन प्रस्तुत करता है तो दूसरा उस कथन पर अपने विचार प्रकट करता है।

संवाद लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखें-

संवाद लिखते समय विषय-वस्तु की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

संवाद की भाषा सरल और संक्षिप्त होनी चाहिए।

संवाद घटना, विषय, पात्र की आयु, प्रकृति, शिक्षा, चरित्र आदि के अनुरूप लिखा जाना चाहिए।

संवाद स्वाभाविक होना चाहिए। संवादों में घटनाक्रम इस प्रकार बुना हो कि विचारों में सूत्रबद्धता हो।

साहित्य में कुछ संवाद अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

जैसे - अंगद-रावण संवाद, लक्ष्मण-परशुराम संवाद, कृष्ण-अर्जुन संवाद, युधिष्ठिर-यक्ष संवाद

इसी प्रकार विभिन्न लोगों के बीच कुछ संवाद के उदाहरण यहाँ दिए हैं। इन्हें पढ़ो व समझो।

पिता और पुत्र के मध्य संवाद

पिता- बेटा, परीक्षा की तैयारी कैसी चल रही है?
पुत्र-पिताजी इस बार मैं बहुत अच्छी तैयारी कर रहा हूँ।
पिता-हाँ बेटा ! परिश्रम का फल सदा मीठा होता है।

पुत्र-जी पिताजी ! इस बार मैं पहले की गई भूल को दोहराना नहीं चाहता।

कक्षा में शिक्षक और छात्र में अनुशासन पर संवाद

पिता-बहुत अच्छा ! तुम हर पल का ध्यान रखो। समय भी तुम्हारा ध्यान रखेगा।

शिक्षक- अविनव तुम कक्षा में बात क्यों कर रहे थे?

छात्र - सर, मैं बात नहीं कर रहा था, बल्कि अपर्णा को एक प्रश्न का उत्तर समझ रहा था।

शिक्षक- लेकिन जब कक्षा में शिक्षक पढ़ा रहे हों तब किसी भी तरह की बात अनुशासनहीनता मानी जाती है।

छात्र - सर, आपका कथन पूर्णतः सत्य है। मैं अपने व्यवहार के लिए क्षमा याचना करता हूँ।

शिक्षक - यह तुम्हारा पहला अवसर है, अतः मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ, पर भविष्य में अनुशासनहीनता करने का प्रयास मत करना।

छात्र - सर, मुझे अनुशासन के बारे में कुछ और बातें बताइए।

शिक्षक - सुनो! स्कूल के नियमों का सदा पालन करना चाहिए। अशिष्ट भाषा का प्रयोंग कभी नहीं करना चाहिए। अपने सभी अध्यापकों का सम्मान करना चाहिए। सहपाठियों के साथ शिष्टता का व्यवहार करना चाहिए।

छात्र - सर, मैं आपके इन निर्देशों का सदैव पालन करूँगा।

माँ पुत्र केबीच संवाद

माँ -बेटा, आज भी देर से आए हो।

बेटा -मैं अपने मित्रों के साथ खेल रहा था। समय का पता ही नहीं चला।

माँ -समय के अनुसार काम करने की आदत डालो।

बेटा - माँ ! गुस्सा न करो। कभी-कभी ऐसा हो जाता है।

माँ - यह कभी-कभी होना ही आदत बन जाती है।

बेटा -हाँ माँ, तुम ठीक कहती हो। ऐसी गलती मैं फिर कभी नहीं करूँगा।

माँ -ठीक है, अब मैं खुश हूँ।

बेटा -माँ, तुम कितनी अच्छी हो।

दो मित्रों के बीच संवाद

सोनू - मित्र ! अब तो परीक्षाएँ समाप्त हो गई हैं, क्या फ़िल्म देखने चलें?

रवि -क्या ! बिना माताजी-पिताजी की आज्ञा के मैं फ़िल्म देखने नहीं जाऊँगा।

सोनू - तो ठीक है, पहले आज्ञा ले लेते हैं।

रवि - यदि उन्होंने मना कर दिया तो...

सोनू - तो कोई दूसरा तरीका सोचेंगे। बिना बताए ही चले जाएँगे।
रवि - नहीं-नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा। मैं अपने माताजी-पिताजी को कभी धोखा नहीं दूँगा।
सोनू - वाह ! तू तो ईमानदारी का पुतला है। मैं भी ऐसा कभी नहीं कर सकता।

दुकानदार और ग्राहक के बीच संवाद

ग्राहक -भैया ! चीनी का दाम क्या है?

दुकानदार -बत्तीस रुपए प्रति किलो है।

ग्राहक-दूसरी दुकान वाला तो तीस रुपए दे रहा है।

दुकानदार-हाँ! हाँ! उसी से जाकर ले लो।

ग्राहक-अरे! आप तो ऐसे ही नाराज़ हो रहे हैं।

दुकानदार-चीनी तो देखो, कितनी साफ़-सुथरी है।

ग्राहक-दे दो, एक किलो। पर सही तौलना।

दुकानदार-बाबू जी ! सही दाम लेते हैं तो सही तौलते हैं।

अभ्यास कार्य

निम्नलिखित को संवाद के रूप में लिखिए :

(क) परीक्षा में आए कठिन प्रश्नों को लेकर दो सखियों में बातचीत।

(ख) अपने क्षेत्र में फैली गंदगी के संबंध में क्षेत्र के स्वास्थ्य अधिकारी और क्षेत्र के निवासियों के बीच बातचीत

(घ) देश में बढ़ते भ्रष्टाचार के संबंध में दो बुजुर्गों की बातचीत।

(ङ) परीक्षा की तैयारी के संबंध में दो विद्यार्थियों के बीच हुई बातचीत।

(च) बढ़ते हुए फैशन के संबंध में दो महिलाओं के बीच हुई बातचीत।

(छ) दिल्ली में मेट्रो रेल लाइन को लेकर दो व्यक्तियों में हुई बातचीत।

(ज) दो मित्रों में किसी विषय की पढ़ाई संबंधी कठिनाइयों के संबंध में हुई बातचीत।
(झ) राजनीतिक नेताओं से संबंधित घोटालों को लेकर दो व्यक्तियों में हुई बातचीत।
(त्र) अपने क्षेत्र में बढ़ती अपराधवृत्ति को लेकर दो नागरिकों में हुई बातचीत।

अध्याय 30
निबंध-लेखन

निबंध अग्रेजी शब्द **Essay** ' का हिंदी पर्याय है, जो फ्रेंच भाषा का शब्द है। विद्वानों के अनुसार सब प्रकार के बंधनों से मुक्त स्वच्छंद रचना को ही निबंध कहा जाता है। 'निबंध का अर्थ है-'बाँधना' या रोकना'। इस प्रकार सीमित समय में अपने विचारों को क्रमबद्ध तथा प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने का ढंग ही निबंध कहलाता है।

अच्छे निबंध की विशेषताएँ

(क) निबंध में विषय का वर्णन आवश्यक संगति तथा संबद्धता से किया गया हो।
(ख) निबंध में मौलिकता, सरसता, स्पष्टता और सजीवता होनी चाहिए।
(ग) निबंध की भाषा शुद्ध तथा प्रभावशाली हो तथा उसमें विराम चिह्नों का यथास्थान प्रयोग किया गया हो।
(घ) निबंध में उद्धरणों, सूक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों, काव्य पंक्तियों तथा प्रसंगों का यथास्थान उल्लेख होना चाहिए।
(ङ) निबंध में शब्द-सीमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए।
(च) निबंध-लेखन से पूर्व उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

निबंध के अंग - अच्छे निबंध की विषय-वस्तु को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :

(अ) **आरंभ** - निबंध का आरंभ जितना प्रभावशाली और आकर्षक होगा, निबंध उतना ही अच्छा माना जायेगा निबंध का आरंभ किसी सूक्ति काव्य-पंक्ति, घटना या सीधे विषय के प्रतिपादन से किया जा सकता है।

(आ) **मध्य** - इस भाग में निबंध के विषय को स्पष्ट किया जाता है। तथ्यों को अलग-अलग अनुच्छेदों में लिखा जाना चाहिए। सभी विषय एक-दूसरे से जुड़े हों।

(इ) **अंत** - प्रारंभ की भाँति निबंध का अंत भी अत्यंत प्रभावशाली होना चाहिए। अंत में निबंध का सारांश, अपनी सम्मति या निष्कर्ष, कोई काव्य पंक्ति, उद्धरण आदि या कोई सुझाव आदि दिए जा सकते

आदर्श विद्यार्थी

विद्यार्थी का अर्थ है- 'विद्या प्राप्त करने वाला।' किसी भी प्रकार की विद्या, कला या शास्त्र सीखने में लगा हुआ व्यक्ति विद्यार्थी है।

विद्यार्थी का सबसे पहला और सबसे आवश्यक गुण है- जिज्ञासा। जिसे कुछ जानने की इच्छा ही न हो, उसे कुछ भी पढ़ाना व्यर्थ होता है। जिज्ञासा-शून्य छात्र उस औंधे घड़े के समान है जो बरसते जल में भी खाली रहता है।

विद्यार्थी का दूसरा महत्त्वपूर्ण गुण है- परिश्रमी होना। परिश्रम के बल पर मंदबुद्धि छात्र भी अच्छे-अच्छे बुद्धिमान छात्रों को पछाड़ देते हैं। इसलिए छात्र को परिश्रमी अवश्य होना चाहिए। जो परिश्रम की अपेक्षा सुख-सुविधा, आराम और विलास में रुचि लेता है, वह दुर्भागा कभी सफल नहीं हो सकता।

विद्यार्थी के लिए आवश्यक है कि वह आधुनिक फ़ैशन परस्ती, फ़िल्मी दुनिया या अन्य रंगीन आकर्षणों से बचे। विद्यार्थी को ऐसे मित्रों के साथ संगति करनी चाहिए, जो उसी के समान शिक्षा का उच्च लक्ष्य लेकर चले हों।

संस्कृत की एक सूक्ति का अर्थ है - श्रद्धावान को ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। जिस छात्र के मन में अपने ज्ञानी होने का घमंड भरा रहता है, वह कभी गुरुओं की बात नहीं सुनता। जो छात्र अपने अध्यापकों तथा अपने से बुद्धिमान छात्रों का सम्मान नहीं करता, वह कभी फल-फूल नहीं सकता।

छात्र के लिए अनुशासनप्रिय होना अति आवश्यक है। अनुशासन के बल पर ही छात्र अपने मूल्यवान समय का सदुपयोग कर सकता है। मनचाही गति से चलने वाले छात्र अपना समय इधर-उधर व्यर्थ करते हैं, जबकि अनुशासित छात्र समय पर पढ़ने के साथ-साथ हँस-खेल भी लेते हैं।

आदर्श छात्र पढ़ाई के साथ-साथ खेल, व्यायाम और अन्य गतिविधियों में भी बराबर रुचि लेता है। इससे उसका शरीर स्वस्थ बना रहता है। अन्य गतिविधियों- भाषण, नृत्य, संगीत, कविता-पाठ, एन.सी.सी. आदि में भाग लेने से उसका जीवन विकसित होता है। आदर्श छात्र वही है जो अपनी विद्या-बुद्धि का उपयोग अपने तथा अपने समाज के विकास के लिए करना चाहता हो। सुभाषचंद्र बोस कहा करते थे- विद्यार्थियों का जीवन-लक्ष्य न केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होना या स्वर्ण पदक प्राप्त करना है अपितु देश-सेवा की क्षमता एवं योग्यता प्राप्त करना भी है।

समय का सदुपयोग

"समय चूकि पुनि का पछताने
का वर्षा जब कृषि सुखाने"

समय अमूल्य धन है। संसार की अनेक वस्तु तथा पदार्थ घटाए- बढ़ाए जा सकते हैं, परंतु समय का एक क्षण भी बढ़ा पाना मानव के हाथ में नहीं है। इसीलिए जोसेफ हाल ने कहा था, "प्रतिदिन एक लघु जीवन है और हमारा सारा जीवन मात्र साथ एक दिन की पुनरावृत्ति है। अतः प्रतिदिन इस तरह जियो मानो वह अंतिम ही है।" खोया धन पुनः प्राप्त किया जा सकता है, बिगड़ा स्वास्थ्य भी सुधारा जा सकता है पर एक बार नष्ट किया गया समय दोबारा नहीं आता। समय को बढ़ाना या घटाना तो हमारे वश में नहीं है पर उसका सदुपयोग हमारे वश में अवश्य है। जो व्यक्ति समय को बरबाद करता है, समय उसे बरबाद कर देता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

"पुरूष बली नहीं होत है, समय होता बलवान"

समय की गति बहुत तीव्र होती है। यह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। जो समय के अनुसार नहीं चलता, वह पिछड़ता ही चला जाता है। जिस व्यक्ति ने भी समय के महत्त्व को समझा वही सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता चला गया। जेम्स वाट, मैडम क्यूरी, एडीसन, आइंसटीन जैसे वैज्ञानिकों ने समय के महत्त्व को समझा। उन्होंने इसके एक-एक कण का सदुपयोग किया। परिणामतः अनेक आविष्कार करने में सफल हुए। इतिहास साक्षी है, जिसने भी समय को बरबाद किया वह स्वयं बरबाद हो गया। गांधीजी ने ठीक ही कहा है-"दिन मित्रों के वेश में हमारे सामने आते हैं और प्रकृति की अमूल्य भेंट हमें दे जाते हैं, अगर हम उनका उपयोग न करें तो वे चुपचाप लौट जाते हैं।" संपूर्ण जड़-चेतन जगत समय की डोरी से बँधा हुआ है।

किसी कार्य को नियत समय पर न करने से हानि उठानी पड़ती है। जूलियस सीजर सभा में पाँच मिनट देर से पहुँचा और अपने प्राणों से हाथ धो बैठा। अपनी सेना के कुछ देर से पहुँचने के कारण नेपोलियन जैसे विश्व विजेता को भी पराजित होना पड़ा था। पृथ्वीराज चौहान ने समय के महत्त्व को नहीं पहचाना, इसका सदुपयोग नहीं किया, संयोगिता के साथ भोग-विलास में डूबा रहा, इसी कारण नष्ट हो गया। समय के महत्त्व को न समझने वाले, न तो अपना हित कर सकते हैं और न ही समाज एवं राष्ट्र का। समय एक ऐसा देवता है जो प्रसन्न होने पर यदि नेपोलियन और सिकंदर को बना देता है तो कुपित होने पर पतन के गर्त में ढकेल देता है।

आज विश्व में जो राष्ट्र उन्नत, सभ्य, प्रगतिशील तथा महाशक्ति के रूप में जाने जाते हैं, वहाँ समय की महानता को खूब समझा गया है। वहाँ के निवासी अपना हर कार्य समय पर करते हैं तथा उनके दैनिक आचरण में समय निष्ठा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। हमारे देश में समय का जितना दुरुपयोग होता है उतना अन्य कहीं नहीं होता। हम समय के महत्त्व को नहीं समझते। एक जापानी ने एक बार व्यंग्य में कब ", "भारत के हर व्यक्ति के हाथ में घड़ी बँधी होती है, पर फिर भी वे समय का पालन नहीं करते, जब की - जापान में व्यक्तियों के हाथ में घड़ी न होने पर भी वे समय का सदुपयोग करते हैं।" सभाओं, दफ्तरों कार्यालयों, विद्यालयों तथा अन्य स्थानों पर देर से पहुँचना हमारी आदत बन गई है। देर से पहुँचने पर इडियन टाइम' कहकर बचने का प्रयास किया जाता है। यह स्थिति अत्यंत दुर्भाग्यपर्ण है।

महात्मा गांधी समय के बहुत पाबंद थे। वे एक-एक क्षण का महत्त्व समझते थे। संसार के अनेक महापुरुष समय का सदुपयोग करके ही महान बने। समय का सदुपयोग न करने के कारण सन् 1857 में जीती हुई बाजी भारतीयों के हाथ से निकल गई। विद्यार्थी जीवन में तो समय का और भी महत्त्व है। जो विद्यार्थी इस काल में समय को व्यर्थ गँवा देता है, वह जीवन भर पछताता है। अतः विद्यार्थी को चाहिए कि आलस्य से दूर रहे और समय का सदुपयोग करके भावी जीवन की मजबूत आधारशिला का निर्माण करने में संलग्न हो।

अतः स्पष्ट है कि मानव जीवन की सफलता या असफलता समय के सदुपयोग या दुरुपयोग पर निर्भर करती है। समय के सदुपयोग में ही जीवन की सार्थकता है। किसी ने ठीक ही कहा है-

"समय ईश्वर का दिया हुआ एक अनुपम धन है"

हमारे राष्ट्रीय पर्व

पर्वों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। इनसे न केवल हमारे जीवन की नीरसता दूर होती है अपितु जीवन में नव-उल्लास, नव-स्फूर्ति, नव-चेतना, नव-संदेश तथा नव-प्रेरणा भी प्राप्त होती है। समय-समय पर आने वाले ये पर्व हमें अपनी संस्कृति, धर्म तथा सामाजिक परंपराओं से जोड़े रखते हैं।

भारत एक विशाल देश है जिसमें विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और परंपराओं का संगम है। हमारे देश में विभिन्न धर्मों के अनेक त्योहार समय-समय पर मनाए जाते हैं जिनमें ईद, होली, दीपावली, दशहरा, गुरुपर्व, क्रिसमस आदि के नाम गिनाए जा सकते हैं। इन सभी पर्वों का संबंध किसी न किसी जाति या धर्म विशेष से है। परंतु कुछ पर्व ऐसे जिनका संबंध संपूर्ण राष्ट्र से है। इन्हें प्रत्येक भारतवासी अत्यंत उत्साह से मनाता है। ऐसे पर्वों को ही राष्ट्रीय पर्वों के नाम से जाना जाता है।

भारत में मुख्य रूप से तीन राष्ट्रीय पर्व मनाए जाते हैं- गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयंती। गणतंत्र दिवस हमारा प्रमुख राष्ट्रीय पर्व है। प्रतिवर्ष 26 जनवरी को यह पर्व अत्यंत धूमधाम से मनाया जाता है। 26 जनवरी 1930 को लाहौर में रावी नदी के तट पर पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में यह घोषणा की गई थी कि अब हम पूर्ण स्वराज्य लिए बिना शांत नहीं होंगे। यद्यपि 15 अगस्त 1947 को भारत स्वाधीन हो गया था तथापि उस समय हमारा कोई संविधान न होने के कारण यह स्वाधीनता अपूर्ण थी। 26 जनवरी 1950 को जब स्वतंत्र भारत का संविधान लागू हुआ, तो भारत को एक सर्वप्रभुत संपन्न गणराज्य का दर्जा मिला।

दिल्ली में गणतंत्र दिवस समारोह का विशेष आकर्षण होता है। भारत के राष्ट्रपति सेना के तीन-अंगों की सलामी लेते हैं। राजपथ पर राष्ट्रपति ध्वजारोहण करते हैं तथा तीनों सेनाएँ परेड करती हुई उनका अभिवादन करती हैं, युद्ध सामग्री तथा शस्त्रास्त्रों का प्रदर्शन किया जाता है तथा विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक झाँकियाँ भी निकाली जाती हैं। इस अवसर पर स्कूलों के बच्चे तथा राज्यों के लोकनर्तक आकर्षक नृत्य तथा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। राजपथ से लेकर इंडिया गेट तक लोगों की अपार भीड़ इन्हें देखती है। इस दिन सार्वजनिक अवकाश रहता है। रात्रि में सरकारी कार्यालयों और भवनों पर रोशनी की जाती है।

15 अगस्त हमारा स्वाधीनता दिवस है। इसी दिन सन् 1947 को भारत पराधीनता की बेड़ियों को तोड़कर स्वतंत्र हुआ था। इस दिन सार्वजनिक अवकाश रहता है। सरकारी कार्यालयों तथा भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। विद्यालयों में रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले पर देश के प्रधानमंत्री ध्वजारोहण करते हैं तथा राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं।

2 अक्टूबर को गांधी जयंती का पर्व मनाया जाता है। हमें विदेशी शासन से मुक्त कराने में महात्मा गांध की भूमिका असंदिग्ध है। उन्होंने अहिंसा तथा सत्याग्रह के द्वारा जिस प्रकार अंग्रेजों को इस देश को छोड पर विवश किया, वह सचमुच आश्चर्यजनक है। गांधीजी की पुण्य स्मृति में तथा उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए यह राष्ट्रीय पर्व मनाया जाता है। इस दिन राजघाट पर विशेष प्रार्थना सभाएँ होती हैं।

इन पर्वों के अतिरिक्त कुछ अन्य पर्व भी राष्ट्रीय पर्वों के रूप में मनाए जाते हैं जिनमें जवाहरलाल ने का जन्मदिन, 14 नवंबर बाल-दिवस के रूप में, डॉ राधाकृष्णन का जन्मदिन 5 सितंबर शिक्षक-दिवस रूप में तथा महात्मा गांधी का बलिदान दिवस 30 जनवरी, शहीद-दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इन राष्ट्रीय पर्वों से हमें प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए तथा देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने की शपथ लेनी चाहिए।

'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा'

भारत हमारी मातृभूमि है; पितृभूमि है। हम इसकी कोख से उत्पन्न हुए हैं। इसी के आँचल में पले-बढ़े हैं। इसके तीर्थ हमारी आस्था के केंद्र हैं। भारत संसार का शिरोमणि देश है। अद्‌भुत है हमारा प्यारा देश भारत। उत्तर में है गगनचुंबी हिमालय की चोटियाँ और दक्षिण में गरजते महासागर और इनके बीच 3200 किलोमीटर लंबी विभिन्नताओं व विशेषताओं से परिपूर्ण यह भारत भूमि। वैसे तो सभी को अपनी मातृभूमि से प्रेम होता है। लेकिन अत्यंत प्राचीन सभ्यता व संस्कृति वाला यह देश संसार में विचित्र है व अपने आप में अनूठा है। इसी भारत भूमि की महानता में महाकवि इकबाल ने कुछ इस तरह कहा है।

यूनानी मिस्रों रुमा सब मिट गए जहाँ से,
बाकी अभी तलक है नामों-निशाँ हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा।'

उनकी ये पंक्तियाँ भारत की संस्कृति-सभ्यता की भव्यता के प्रति श्रद्‌धांजलि अर्पित करती है। विष्णु ने कहा 'भारत भूमि में जन्मे लोग देवताओं की अपेक्षा अधिक धन्य हैं। श्रीधर पाठक ने 'जगत मुकुट जगदीश दुलारा शोभित सारा देश हमारा' कहकर भारत की महिमा का गुणगान किया है। यह एक ऐसा गुलदस्ता जिसमें सौ करोड़ जनसंख्या भाँति-भाँति की वेशभूषाओं, विभिन्न रीति रिवाजों, भाषाओं व विशेषत संपन्न है। लेकिन इन विभिन्नताओं में छिपी हुई अभिन्नता और भी अद्‌भुत है। पुरातनता का सर्वश् जीवंत स्वरूप देखना हो तो भारत का व्यापक भ्रमण कीजिए। सभ्यता एवं संस्कृति का सूर्योदय सर्वण प्रथम हुआ था। इतिहास साक्षी है कि इस महान धरा की संस्कृति ने अनेक संस्कृतियों को आत्मसात किया है कि देश की संस्कृति की गंगा में अनेक नदियाँ आकर मिलती हैं और गंगा का ही स्वरूप धारण कर ले का एक हिस्सा बन जाती हैं। उसी तरह इस देश की संस्कृति रूपी गंगा में शक, हूण और कुषाण कितनी संस्कृतियाँ और जातियाँ आईं और इस देश की संस्कृति में घुल-मिलकर एकरूप हो गईं

भारत विश्व सभ्यता का आदि स्रोत है। धर्म का प्रचारक है। भौतिक जगत को 'तेन व्यक्तेन भुंजीथाः' का आदर्श भारत ने ही दिया है। हमारे देश ने संसार को अपरिग्रह का संदेश दिया। इसी देश ने संसार को 'स्व' के दायरे से निकलकर 'पर' की परिधि में जाने का मार्ग प्रशस्त किया। शून्य का जन्म यहीं हुआ। कहा जाता है कि संसार के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर वेदों में है। वेद ज्ञान का भंडार हैं। विश्व की आदि पुस्तक हैं और वेदों का जन्म भी इसी पवित्र

भूमि में हुआ। भारत की प्राचीन वास्तुकला आज के वैज्ञानिकों को विस्मय में डाल देती है। ज्योतिष, गणित, राजनीति आदि में प्राचीन भारत किसी समय बहुत उन्नत था। आध्यात्मिक तत्वज्ञान में तो संसार का कोई भी देश भारत के समक्ष नहीं ठहरता था। वर्तमान में औद्योगिक विकास, परमाणु विज्ञान, अंतरिक्ष अनुसंधान, चिकित्सा विज्ञान, सूचना तकनीक आदि के क्षेत्र में भारत की गिनती आज विश्व के अग्रणी देशों में की जाती है।

आज मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व है क्योंकि मुझे ऐसी महान एवं पुण्यभूमि पर जन्म लेने का सौभाग्य मिला। भारत अजर है, अमर है। मैं जीवन पर्यंत इसी के लिए कार्य करता रहूँ; ऐसी प्रभु से मेरी कामना है।

खेलों का महत्व

महर्षि चरक ने शरीर को धर्म, अर्थ और मोक्ष का आधार माना है। कालिदास ने भी कहा है: शरीर धर्म का माध्यम है। शरीर ही सब धर्मों के आचरण का प्रथम साधन है। एक बार कुछ नौजवान स्वामी विवेकानंद जी के पास आए और बोले-"स्वामी जी आप हमें गीता समझाइए।" स्वामीजी ने उन से कहा मेरे नवयुवक मित्रो! गीता के अभ्यास की अपेक्षा मैदान में जाकर फुटबॉल खेलो। सर्वप्रथम हमारे नवयुवकों को बलवान बनना चाहिए। धर्म अपने-आप आ जाएगा।"

स्वामी विवेकानंद के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि शरीर का स्वस्थ रहना नितांत आवश्यक है।स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। स्वास्थ्य प्राप्ति के अनेक उपायों में खेलकूद का महत्व असंदिग्ध है। जीवन तभी पूर्ण होता है, जब उसका सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा से बुद्धि विकास होता है, तो खेलकूद से शरीर का। स्वस्थ शरीर एक वरदान है। रोगी व्यक्ति सदा अशांत,उद्विग्न तथा उदास रहता है। उसकी स्मरण शक्ति भी दुर्बल होती है तथा वह किसी भी कार्य को करने में आनंद प्राप्त नहीं कर सकता। स्वस्थ चित्त वाला व्यक्ति प्रत्येक कार्य में आनंद प्राप्त करता है।

खेल हमारे जीवन के सर्वांगीण विकास के साधन हैं। खेल के मैदान में अनुशासन, संगठन, आज्ञापालन, पारस्परिक सहयोग, आत्मविश्वास, खेल-भावना, साहस आदि गुणों का भी विकास होता है। खेल हमारे अंदर निर्णय लेने की शक्ति का विकास करते हैं। वॉटरलू की विजय का रहस्य समझा हुए एक अंग्रेज़ ने कहा था- "विद्यार्थी जीवन में खेल के मैदान में प्राप्त किए गए प्रशिक्षण के ब पर ही एटन के मैदान में अंग्रेज़ों ने नेपोलियन को युद्ध में पराजित किया था।"

खेलों से हमारा मनोरंजन भी होता है। आज अनेक प्रकार के खेलकूद प्रचलित हैं। कुछ खेल तरह भारतीय हैं; जैसे- कबड्डी, खो-खो, चौपड़ आदि, जबकि क्रिकेट, हॉकी, पोलो आदि विदेशी खेल हैं। खेल देशी हो या विदेशी, शरीर की

इंद्रियों का विकास करते हैं। खेलने से शरीर पुष्ट होता है, मांसपेशियाँ मज़बूत बनती हैं, रक्त का संचार उचित रूप से सारे शरीर में होता है। खुली हवा में खेलने से शरीर को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीज़न मिलती है और खुलकर भूख लगती है। रोगी केवल अपने लिए, बल्कि अपने परिवार और समाज के लिए बोझ होता है। गांधी जी बीमारी को पाप का चिहन मानते थे,।

खेल, आउटडोर तथा इनडोर-दो प्रकार के हो सकते हैं। आउटडोर खेल घर के बाहर किसी मैदान आदि में ही खेले जा सकते हैं; जैसे-क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, गोल्फ़ आदि। इनडोर खेल हम घर में भी खेल सकते हैं; जैसे-शतरंज, टेबल टेनिस आदि। आज सभी प्रकार के खेल भारत में लोकप्रिय हो रहे हैं। अनेक खेलों में भारत ने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। पी०टी० उषा, ध्यानचंद, नीरज चोपड़ा विराट कोहली आदि खिलाड़ियों ने भारत का नाम रोशन किया है।

खेल चरित्र-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वस्थ व्यक्ति ही दुनिया से अन्याय, शोषण और अधर्म को हटा सकता है। स्वामी विवेकानंद, दयानंद, महाराणा प्रताप, शिवाजी, भगवान कृष्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, अर्जुन आदि महापुरुष किसी-न-किसी शारीरिक विद्या में पारंगत थे। इसी कारण वे यशस्वी बन सके। आज तो खेलों का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। माता-पिता अपने बच्चों को उसी विद्यालय में पढ़ाना चाहते हैं, जहाँ पुस्तकीय शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद को भी समान महत्वदिया जाता है। देश-विदेश में अनेक स्तरों पर खेलों का आयोजन होता है। आज खेल आजीविका के साथ जुड़ गए हैं।
आज बहुत बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि संसार के विभिन्न देश अपने-अपने मतभेदों को भुलाकर प्रेम से रहें। खेल इसमें मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। भाषा, रंग, जाति, धर्म आदि की संकीर्ण मर्यादाएँ खेल के मैदान में टूट जाती हैं। हम सभी को अपने जीवन में खेलों का महत्व स्वीकार करना चाहिए।

अभ्यास करें ।

1. मेरे जीवन की आकांक्षा

2. छात्रों में बढ़ता हुआ असंतोष

3. मेरे सपनों का भारत

4. नदी की आत्मकथा

5 वन हैं तो हम हैं

6.शिक्षा उन्नति के लिए आवश्यक है

7. विद्यालय का वार्षिकोत्सव

8. व्यायाम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक

9. कंप्यूटर आज की जरूरत

10. किसी पर्वतीय प्रदेश की यात्रा

अध्याय -31

अपठित गद्यांश Unseen Passage

"अपठित गद्यांश' का अभिप्राय है- गद्य का ऐसा अंश जो आपने पहले पढ़ा न हो। अपठित गद्यांश पाठ्य पुस्तकों से नहीं दिए जाते। ये ऐसे गद्यांश होते हैं जिन्हें विद्यार्थियों ने पहले कभी नहीं पढ़ा होता। इस प्रकार के गद्यांश देकर विद्यार्थियों से उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर पूछे जाते हैं।

अपठित गद्यांशों के उत्तर देने से पूर्व निम्न बातों का ध्यान रखें -

> दिए गए गद्यांश को कम से कम दो-तीन बार अवश्य पढ़ लें ताकि गद्यांश का अर्थ भली-भाँति समझ सकें। पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों को रेखांकित कर लें।

> प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त तथा सरल भाषा में लिखें। उत्तर गद्यांश के भावानुसार हों।

> भाषा व्याकरण सम्मत होनी चाहिए। कभी-कभी शब्दार्थ, विलोम या पर्यायवाची शब्द भी पूछे जाते हैं। प्रसंगानुकूल उनके उत्तर दें।

> यदि शीर्षक पूछा जाए तो गद्यांश के मूल भाव पर आधारित शीर्षक लिखें।

> समस्त उत्तर लिखने के बाद उन्हें एक बार ध्यानपूर्वक अवश्य पढ़ लें।

अभ्यास के लिए यहाँ कुछ अपठित गद्यांश दिए गए हैं -

पशु का मतलब, कर्म से नहीं चलते, फल से बंधे हुए चलते हैं। गर्दन फँसी है एक जाल में। भविष्य के हाथ में है रस्सी। वह खींच रहा है। या तो भविष्य खींचे, तो हम चलते हैं; कोई हमारी गर्दन में रस्सी बाँध ले। या अतीत धक्का तो हम चलते हैं। जैसे कोई जानवर को पीछे से लकड़ी मारे या कोई बाहर से रस्सी खींचे आगे से। या तो कोई पुल करे या पुश करे, तो हो जानवर चले।

तो पुराने ज्ञानी कहते हैं कि वह आदमी पशु है, जो या तो अतीत के कर्मों के धक्के की वजह से चलता है या भविष्य की आकांक्षाओं के पाश में बंधकर खिंचता है। वह आदमी नहीं है अभी। आदमी कौन है ? आदमी वह है, जो अतीत के धक्के को भी नहीं मानता और जो भविष्य की आकांक्षा को नहीं मानता, जो वर्तमान के कर्म में जीता है। जो अतीत के धक्के को भी स्वीकार नहीं करता और जो भविष्य के आकर्षण को भी स्वीकार नहीं करता। जो कहता है, मैं तो अभी, यह जो क्षण मिला है, इसमें जीऊँगा।

प्रश्न1. पशु होने का क्या अर्थ है ?
उत्तर -पशु कर्म से नहीं चलते, फल से बँधेहुए चलते हैं।

प्रश्न1. जानवरों के चलने का ढंग कैसा होता है ?

उत्तर -जानवरों को पीछे से कोई धक्का या लकड़ी मारे और आगे से कोई रस्सी खींचे, तभी वे चलते हैं

प्रश्न 3.कैसा आदमी पशु है ?

उत्तर-वह आदमी पशु है जो अतीत के कर्मों के धक्के की वजह से चलता है या भविष्य को आकांक्षाओं के पाश में बँधकर खिंचता है।

प्रश्न 4.आदमी कौन है ? गद्यांश के आधार पर बताइए।

उत्तर-आदमी वह है जो अतीत के धक्के को भी नहीं
मानता और भविष्य की आकांक्षा को भी नहीं मानता। वह केवल वर्तमान में जीता है।

प्रश्न 5.समानार्थी शब्द लिखिए - पाश, आकांक्षा।

उत्तर- पाश - रस्सी;
आकांक्ष - इच्छा

2- मानव-जीवन में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिक्षित मनुष्य अपनी क्षमताओं को परख पाता है। तभी यह समाज में अपनी सही पहचान बना पाता है। शिक्षा मनुष्य को मस्तिष्क और शरीर का उचित प्रयोग सिखाती है। वह शिक्षा जो मनुष्य को पाठ्य पुस्तकों के ज्ञान के अतिरिक्त कोई गंभीर चिंतन न दे सके, कोई राह न दिखा सके, सचमुच व्यर्थ है। हमारी शिक्षा यदि सुसंस्कृत, सभ्य व सच्चरित्र नागरिक नहीं बना सकती तो उससे क्या लाभ। सहृदय, सच्चा, अनपढ़ मज़दूर उस पढ़े-लिखे से बेहतर है जो निर्दयी और चरित्रहीन है। संसार के सभी वैभव और सुख-साधन तब तक सुखी नहीं बनाते जब तक मनुष्य को आत्मिक ज्ञान न हो। साक्षरता का देश की उन्नति से सीधा संबंध है। निरक्षरता व अज्ञान अनेक दुखों का मूल कारण है।

प्रश्न 1मनुष्य के लिए शिक्षा प्राप्त करना क्यों ज़रूरी है?

उत्तर-

प्रश्न 2 कैसी शिक्षा को व्यर्थ माना गया है?

उत्तर-

प्रश्न ३ शिक्षा समाज के लिए उपयोगी कैसे है?

उत्तर

प्रश्न 4 मनुष्य कब सुखी हो पाता है?

उत्तर

प्रश्न 5 निम्न शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द अनुच्छेद में से चुनकर लिखो -

सही, दिमाग, बेकार

3. मानव अपने पर्यावरण के साथ पारस्परिक क्रिया करता है और उसमें अपनी आवश्यकतानुसार परिवर्तन करता है। प्रारंभिक मानव ने स्वयं को प्रकृति के अनुरूप बना लिया था। उनका जीवन सरल था। आस-पास की प्रकृति से उनकी आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थीं। मानव ने पर्यावरण के उपयोग और उसमें परिवर्तन करने के कई तरीके सीख लिए। उसने फ़सल उगाना, पशु पालना एवं स्थायी जीवन जीना सीख लिया। पहिये का आविष्कार हुआ। आवश्यकता से अधिक अन्न उपजाया गया, वस्तु-विनिमय पद्धति का विकास हुआ। व्यापार आरंभ हुआ एवं वाणिज्य का विकास हुआ। औद्योगिक क्रांति से बड़े पैमाने पर उत्पादन प्रारंभ हो गया। परिवहन तेज गति से प्रारंभ हुआ।

सूचना क्रांति से पूरे विश्व में संचार सहज और द्रुत हो गया। यातायात के आधुनिक साधनों का विकास हुआ जिससे दुनिया के लोग एक-दूसरे के निकट आ गए। इन नई गतिविधियों ने मनुष्य एवं पर्यावरण के बीच संतुलन को बिगाड़ कर रख दिया है।

प्रश्न 1. प्रारंभिक मानव का जीवन कैसा था ?

उत्तर-

प्रश्न 2.मानव ने कौन-से तरीके सीख लिए ?

उत्तर-

प्रश्न 3 प्रारंभिक मानव ने अपने जीवन में किस तरह के बदलावों को लाकर अपना जीवन उन्नत बनाया ?

उत्तर-

प्रश्न 4.औद्योगिक क्रांति का क्या परिणाम निकला ?

उत्तर. -

प्रश्न 5.मनुष्य और पर्यावरण के बीच का संतुलन क्यों बिगड़ा ?

उत्तर-

4.जल मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता है। स्वच्छ जल न मिलने के कारण गाँवों तथा शहरों की घनी आबादी में रहने वाले लोग अनेक रोगों के शिकार हो रहे हैं। प्रतिवर्ष अनेक लोग जल-प्रदूषण से उत्पन्न रोगों के कारण मर रहे हैं। गाँवों तथा शहरों की गंदी नालियों एवं नालों का पानी नदी में गिरकर उसे दूषित बना रहा है। नदियों में पालतू जानवरों को नहलाने तथा कपड़े धोने से भी जल प्रदूषित होता है कारखानों से निकलने वाला कचरा भी नदियों के जल में मिलता है और उसे पीने योग्य नहीं रहने देता। गाँवों में पोखरों और जलाशयों में नहाने, धोने तथा पशुओं को नहलाने से जल प्रदूषित हो जाता क्योंकि यह बहता हुआ जल नहीं होता।

सही विकल्प के आगे सही (1) का चिह्न लगाइए

(क) मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता क्या है?

1 रोटी 3. कपड़ा

2. मकान 4. जल

(ख) नदियों में पशुओं के नहलाने और कपड़े धोने से क्या हानि है?

1. जल प्रदूषण 3 .जल संरक्षण

2. जल आपदा 4. बाढ़

(ग) 'प्रदूषण' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?

1. प्रद 3. प्रा

2. प्रदू 4. प्र

(घ) 'दूषित' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

1.त 3.ईत

2.इत 4.ईय

(ङ) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा ?

1.जल प्रदूषण
2.पशु : एक समस्या
3.जल आपदा
4.रुका हुआ जल

5. मन बड़ा चंचल होता है। इस पर नियंत्रण अत्यंत दुष्कर है। मन जहाँ से हटाया जाए बार-बार वहीं जाता है। दूसरी ओर मन की अपार शक्ति का भी वर्णन किया गया है। मन में दृढ़-संकल्प हो तो असाध्य भी साध्य हो जाता है। योगियों ने मन पर नियंत्रण कर ईश्वर को पा लिया। गीता में कहा गया है कि- दृढ़तापूर्वक मन पर नियंत्रण संभव है। अतः दृढ़ संकल्प का महत्त्व सर्वोपरि है।

प्र**श्न 1मन पर नियंत्रण दुष्कर है क्योंकि मन-**

1.चंचल है
2.स्थिर है
3.मंद है
4.मंथर है

प्रश्न 2**मन पर नियंत्रण कैसे पाया जा सकता है**?

1.लगाम से
2.लालच देकर
3.क्रोध दिखाकर
4.दृढ़-संकल्प से

प्रश्न 3 दृढ़ संकल्प से क्या लाभ होता है?

1.धन पा सकते हैं।
2.यश पा सकते हैं।
3.ईश्वर को पा सकते हैं।
4.संपत्ति पा सकते हैं।

प्रश्न 4गद्यांश का शीर्षक बताओ-

1. चंचल मन
2. दृढ़-संकल्प
3. दुष्कर मन
4. मन और गीता

अध्याय-32 अपठित पद्यांश
(UNSEEN POETRY PASSAGE)

'अपठित पद्यांश' का अभिप्राय है ऐसा पद्यांश जो पहले पढ़ा न गया हो। अपठित पद्यांश' के आधार पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

अपठित पद्यांशों के उत्तर देने से पूर्व निम्न बातों का ध्यान रखें -

> दिए गए पद्यांश को दो-तीन बार ध्यान से पढ़ो।

पद्यांश का मूल भाव समझने का प्रयास करो।

> अब पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पद्यांश में से ढूँढकर लिखो।

प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त, सटीक और सरल भाषा में लिखो।

यदि शीर्षक पूछा गया हो तो पद्यांश के मूल भाव के आधार पर शीर्षक लिखो।

> सभी उत्तर लिखने के बाद उन्हें एक बार ध्यानपूर्वक अवश्य पढ़ लो।

अभ्यास के लिए यहाँ कुछ अपठित पद्यांश दिए गए हैं-

1. फूलों से नित हँसना सीखो, भौरों से नित गाना,
झुकी डालियों से सीखो तुम, गुरु को शीश झुकाना।
दीपक से सीखो जितना हो सके अँधेरा हरना,
धरती से सीखो प्राणी की सच्ची सेवा करना।

सही विकल्प के आगे सही (✓) का चिह्न लगाइए

(क) हम फूलों से क्या सीख सकते हैं?

(i) हँसना
(ii) खिलना
(iii) मुरझाना
(iv) कर्म करना

(ख) झुकी डालियों से हम क्या सीखते हैं?

(i) विनम्र रहकर सबका सम्मान करना
(ii) सबको फल देना
(iii) सदा शांत रहना
(iv) सदा मुस्कराते रहना

(ग) धरती से हमें क्या सीखने को मिलता है?

(i) घूमते रहना
(ii) निःस्वार्थ भाव से प्राणियों की सेवा
(iii) हमेशा कार्यरत रहना
(iv) हमेशा कर्तव्य का पालन करना

(घ)दीपक' कौन-सा शब्द है?

(i) तत्सम
(ii) तद्भव
(iii) देशज
(iv) विदेशी

(ड)सही शीर्षक बताइये-

(i)प्रकृति हमारी शिक्षका
(ii) संघर्ष
(iii) फूलों का महत्त्व
(iv) निःस्वार्थ सेवा

2. बार-बार आती है मुझको, मधुर याद बचपन तेरी, गया, ले गया तू, जीवन की, सबसे मस्त खुशी मेरी। चिंता रहित खेलना खाना, वह फिरना निर्भय स्वच्छंद, कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनंद।

प्रश्न 1कवयित्री को किसकी याद आती है?
उत्तर-
प्रश्न 2 बचपन अपने साथ क्या-क्या ले गया?
उत्तर-
प्रश्न 3निर्भय, स्वच्छंद के विलोम लिखो।
उत्तर-
प्रश्न 4अंतिम दो पंक्तियों का अर्थ क्या है?
उत्तर-
प्रश्न 5पद्यांश का उचित शीर्षक दो।
उत्तर-

3. "**अब**, **तात कब आएँगे**?"
धीरज धर बेटा, अवश्य हम उन्हें एक दिन पाएँगे।"
"मुझे भले ही भूल जाएँ वे तुझे क्यों न अपनाएँगे, कोई पिता न लाया होगा, वह पदार्थ वे लाएँगे।"

"माँ तब पिता-पुत्र हम दोनों संग-संग फिर जाएँगे। देना तू पाथेय, प्रेम से विचर-विचर कर खाएँगे। पर अपने दूने-सूने दिन तुझको कैसे पाएँगे?"

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) उपर्युक्त पद्यांश में पुत्र किसके आने की राह देख रहा है?
(ख) माँ अपने पुत्र को क्या कहकर दिलासा देती है?
(ग) माँ के अनुसार पिता पुत्र के लिए क्या लाएँगे?
(घ) पुत्र क्या सोचकर प्रसन्न है?

4. फूटा प्रभात, फूटा विहान
बह चले रश्मि के प्राण, विहग के मधुरगान, मधुर निर्झर के स्वर
झर-झर, झर-झर
प्राची का अरुणाभ क्षितिज
मानो अंबर की सरसी में
फूला कोई रक्तिम गुलाब, रक्तिम सरसिज
धीरे-धीरे
लो, फैल चली आलोक रेख
धुल गया तिमिर, बह गई निशा
चहुँ ओर देख, धुल रही विभा विमलाभ काति अब दिशा-दिशा
सस्मित, विस्मित,
खुल गए द्वार, हँस रही उषा

प्रश्न 1.पद्यांश में किस समय के दृश्य का वर्णन किया गया है ?
उत्तर-
प्रश्न 2. पूर्व के अरुणाभ क्षितिज की तुलना किससे की गई है ?
उत्तर-
प्रश्न 3. 'धुल गया तिमिर, बह गई निशा' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
उत्तर

प्रश्न 4.प्रभात के होने से दिशा-दिशा कैसी हो गई है ?
उत्तर-
प्रश्न 5. पद्यांश में से 'किरण' शब्द का पर्यायवाची शब्द छाँटकर लिखिए।
उत्तर-

5. साथियों यह हमारा वतन सारी दुनिया से न्यारा वतन।
जान भी इस पर कुरबान है जान से भी है प्यारा वतन।
गंगा की लहरें यमुना का पानी है इस वतन की चढ़ती जवानी
सदियों से कहता रहा है हिमालय इसके शहीदों की अनुपम कहानी।
गंगा के जल से हिमगिरि के बल सींचा है, यह चमन।
मीरा का मंदिर यह राधा का घर सीता-सावित्री की धरती अमर है
जौहर की ज्वाला है यह पद्मिनी झाँसी की रानी का यही समर है।
सतियों के सत से, मुनियों के म सींचा है, यह चमन।

विकल्प के आगे सही का चिह्न लगाइए

(क) हमारा देश कैसा है ?
(1) और देशों की तरह
(2) दुनिया भर से अलग
(3) चिड़ियाघर की तरह
(4.) इनमें से कोई नहीं

(ख) 'हिमालय' का संधि-विच्छेद है-

(1.) हि + मालय
(2.) हिमा + लय
(3.) हिम + आलया
(4.) हिमा + अलय

(ग) हिमालय का उल्लेख किस रूप में किया है ?

(1.) नवयुवकों
(2.) भारतीय नारियों
(3.) चढ़ती जवानी
(4.) शहीदों की कहानी कहने वाले

(घ) कवि ने मीरा, राधा, सीता, सावित्री आदि रानियों का संकेत किस रूप में किया है ?

(1.) महानता
(2.) अमरता
(3) वीरांगना
(4) समरता

ङ) प्रस्तुत काव्यांश में प्रयुक्त दो उर्दू के शब्द बताइए-

(1.) गंगा, वत
(2.) वतन, कुरबान
(3.) कुरबान, प्यारा
(4.) ज्वाला, कुरबान

6. माँ, कह एक कहानी।"
"बेटा, समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी?"
"कहती है मुझसे यह चेटी,
तू मेरी नानी की बेटी।
कह माँ कह लेटी ही लेटी,
राजा था या रानी ?
राजा था या रानी?
कह माँ कह लेटी ही लेटी,
माँ कह एक कहानी।"

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) बेटा माँ से किस बात की ज़िद कर रहा है?
(ख) माँ कहानी न सुनाने का क्या बहाना बनाती हैं?
(ग) बच्चा माँ के मना करने पर किस आधार पर उन्हें कहानी सुनाने को कहता है?
(घ) बेटा माँ को कहानी सुनाते वक्त कैसे उनके आराम में बाधा नहीं डालना चाहता?